@Qpatrika
@qaumipatrika hindi
instagram.com/qaumipatrika

कौमी पत्रिका
राष्ट्रीय दैनिक अखबार

दिल्ली-हरियाणा-पंजाब-चण्डीगढ़-उत्तर प्रदेश से प्रसारित
शुक्रवार 20 जून 2025

VISIT:
www.qaumipatrika.in
Email: qpatrika@gmail.com

R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472 संपादक- गुरचरन सिंह बब्बर वर्ष 18 अंक 220 qaumipatrikahindi 011-41509689,23315814,9312262300 गाजियाबाद संवत् 2077-78, पेज (12) मूल्य 3.00 रुपये (हवाई शुल्क 50 पैसे अतिरिक्त)

पटना में तेजस्वी के आवास के पास गोलीबारी, पुलिस ने बताया युवक से लूटपाट की कोशिश

पटना (एजेंसी)। बिहार के पटना में पार्टी के संस्थापक लालू प्रसाद के बेटे तेजस्वी यादव के आवास के पास गोलीबारी की घटना की सूचना अधिकारियों ने दी। अधिकारियों के हवाले से बताया कि पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। पुलिस का दावा है कि गुरुवार सुबह पोलो रोड पर जनता दल (यूनाइटेड) के मंत्री अशोक चौधरी और तेजस्वी के आवास के पास बाइक सवार दो लोगों ने एक युवक पर कथित तौर पर गोलीबारी की। पुलिस का दावा है कि यह लूट का प्रयास था। बात दें कि ये पटना के सबसे सुरक्षित इलाकों में से एक माना जाता है, जहां कई मंत्री, जज और वरिष्ठ अधिकारी रहते हैं। पुलिस के अनुसार, हमलावरों ने एक डॉक्टर के ड्राइवर राहुल को लूटने का प्रयास किया, जो सुबह करीब 8-15 बजे काम पर जा रहा था। पीड़ित सुरक्षित बच गया और हमलावरों ने 400 रुपये नकद लूट लिए, लेकिन उसका फोन और अन्य सामान नहीं छोड़ा। पुलिस ने मौके से एक गोली का खोखा बरामद किया है और फरार अपराधियों को पकड़ने के लिए छापेमारी शुरू कर दी है। एयरपोर्ट पुलिस स्टेशन के अधिकार क्षेत्र में सुबह करीब 8-15 बजे एक युवक से झपटमारी का मामला सामने आया। वहीं पटना फायरिंग पर तेजस्वी ने पोस्ट में बिहार सरकार पर निशाना साधकर जंगल राज बताया। उन्होंने कहा कि राज्य द्वारा संरक्षित अपराधियों का मनोबल इतना बढ़ गया है कि वे उच्च सुरक्षा वाले क्षेत्रों में खुलेआम गोलीबारी कर रहे हैं।

मोदी सरकार ने 8वें वेतन आयोग के गठन को मंजूरी दी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र की मोदी सरकार ने 8वें वेतन आयोग के गठन को मंजूरी दे दी है। 8वां वेतन आयोग लागू होने के साथ ही देश के 1 करोड़ से ज्यादा केंद्रीय कर्मचारियों और पेंशनर्स की सैलरी और पेंशन में बड़ा बदलाव होगा। संशोधित वेतन संरचना 1 जनवरी, 2026 से लागू होने की उम्मीद है। हालांकि, आयोग के गठन में देरी ने केंद्र सरकार के कर्मचारियों के बीच चिंता बढ़ा दी है। आयोग का एक प्रमुख फोकस फिटमेंट फैक्टर होगा। जबकि 7वें वेतन आयोग ने कारक को 2.57 पर सेट किया था, इस 8वें वेतन आयोग के तहत बढ़ाकर 2.86 किए जाने की संभावना है।

ट्रंप भारत में सत्ता परिवर्तन की कोशिश तो नहीं कर रहे? राउत ने उठाए सवाल

-महिलाओं का सिंदूर मिटाने वाला मुनीर व्हाइट हाउस में उड़ा रहा दावत

मुंबई (एजेंसी)। पाकिस्तान के सेना प्रमुख आसिम मुनीर की अमेरिका यात्रा पर भारत में सियासत शुरु हो गई है। विपक्षी गठबंधन इंडिया के सहयोगी दल शिवसेना (यूबीटी) ने सवाल उठाए हैं कि मुनीर और अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप की बैठक पर भारत सरकार की ओर से जवाब नहीं आया है। साथ ही उन्होंने आशंका जताई है कि क्या ट्रंप भारत में सत्ता परिवर्तन की कोशिश तो नहीं कर रहे हैं। गुरुवार को राज्यसभा शिवसेना (यूबीटी) सांसद संजय राउत ने कहा कि जनरल मुनीर पाकिस्तान का जनरल आज राष्ट्रपति ट्रंप के साथ व्हाइट हाउस में खाना खा रहा है। उसको खास निमंत्रित दिया गया है। हम इस पर पीएम मोदी, विदेश मंत्री जयशंकर और आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत की राय जानना चाहते हैं। पहलगाम में महिलाओं के सिंदूर को मिटाने का दोषी असीम मुनीर है। इस दौरान राउत ने ऑपरेशन सिंदूर का जिक्र किया। उन्होंने कहा, ये जनरल मुनीर को ट्रंप सम्मान देते हैं व्हाइट हाउस में उसके साथ डिनर करते हैं। अब तक हमारी सरकार की भूमिका साफ नहीं है। आपने जो ऑपरेशन सिंदूर किया है, ये उनकी वजह से हो रहा है। यह हमारे देश के लिए चौंकाने वाला है। उन्होंने कहा कि ट्रंप कई देशों में हस्तक्षेप कर रहे हैं और सत्ता बदलना चाहते हैं। क्या वे भारत में भी ऐसा ही करना चाहते हैं? मुझे इस पर शक है।

जन्मदिन पर राहुल गांधी हुए नए बंगले में शिफ्ट

-अब 10 जनपथ की जगह लुटियंस जोन हुआ नया पता

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने अपने 55वें जन्मदिन पर नई शुरुआत करते हुए राजधानी के वीवीआईपी इलाके लुटियंस जोन के सुनहरी बाग रोड स्थित सरकारी बंगले में शिफ्ट कर लिया है। यह बंगला उन्हें लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष के तौर पर आवंटित किया गया है। इससे पहले वे अपनी मां सोनिया गांधी के साथ 10 जनपथ में रह रहे थे। संसदीय आवास समिति ने राहुल गांधी को तीन विकल्प दिए थे, इनमें 5, सुनहरी बाग रोड; 7, मोतीलाल नेहरू मार्ग; और 3, कृष्णा मेनन मार्ग। राहुल ने इनमें से सुनहरी बाग रोड के बंगले को चुना। यह बंगला पहले सीनियर कैबिनेट मंत्रियों और संवैधानिक पदों पर रहने वाले प्रमुख व्यक्तियों को आवंटित किया जाता रहा है। गौरतलब है कि राहुल गांधी ने वर्ष 2023 में दिल्ली के 12 तुगलक लेन स्थित आवास को खाली किया था, जहां वे लगभग 19 वर्षों तक रहे। सांसद पद से अयोग्यता के कारण उन्हें वह बंगला छोड़ना पड़ा था।

क्यों खास है सुनहरी बाग का बंगला?

राहुल गांधी को मिला यह बंगला दिल्ली के सबसे प्रतिष्ठित और सुरक्षित इलाकों में से एक लुटियंस दिल्ली में स्थित है। बंगले का क्षेत्रफल करीब 2000 से 3000 वर्ग मीटर में फैला हुआ है। इसमें 4 से 5 बड़े बेडरूम, एक ऑफिस, बैठक हॉल, प्राइवेट लॉन, मीडिया कॉन्फ्रेंस रूम, सुरक्षा कर्मियों के लिए अलग कक्ष, स्टाफ क्वार्टर और पार्किंग की सुविधा मौजूद है। यह बंगला न केवल उनके पद की गरिमा के अनुसार है, बल्कि यहां विपक्ष के नेता के रूप में बैठकों, संवाददाताओं से बातचीत और रणनीतिक चर्चा के लिए सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं।

ईरान के अंत का समय आ गया क्या, अमेरिका आसामान में उड़ान भरने लगा प्रलय का जेट

वॉशिंगटन (एजेंसी)। इजरायल और ईरान में बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका का डूम्सडे प्लेन कहे जाने वाले सैन्य विमान ई-4बी ने उड़ान भरी है। यह जेट अमेरिका में उड़ान भरते हुए दिखाई दिया है। इससे वॉशिंगटन के जल्दी ही ईरान-इजरायल युद्ध में शामिल होने की अटकलें तेज हा गई हैं। ई-4बी नाइटवॉच एयरक्राफ्ट परमाणु हमले जैसे बड़े संकट के दौरान अमेरिका के शीर्ष सैन्य और राजनीतिक नेतृत्व को बचाने के लिए तैयार किया गया है। इस विमान का उड़ान भरना और आर्डर01 नाम के नए कॉलसाइन का उपयोग करने ने इन अटकलों को हवा दी है कि अमेरिका ईरान के खिलाफ लड़ाई में उतरने को तैयार है।

ई-4बी नाइटवॉच ने अमेरिका के लुइसियाना में बार्क्सडेल एयरफोर्स बेस से उड़ान भरी और चार घंटे तक हवा में रहने के बाद रात 10 बजे के तुरंत बाद मैरीलैंड में जॉइंट बेस एंड्रयूज पर उतरा। इसके अलावा इस उड़ान में सामान्य आर्डर6 के बजाय एक नए कॉलसाइन आर्डर01 का इस्तेमाल हुआ, जिसका पहले कभी उपयोग नहीं हुआ है। इसके बाद सवाल है कि ईरान-इजरायल युद्ध में क्या कुछ भयावह होने जा रहा है।

अमेरिकी जेट ई-4बी विमान नियमित रूप से ऑपरेशनल तैयारी की जांच के लिए उड़ान भरते रहते हैं लेकिन इस विशेष उड़ान का समय ध्यान खींच रहा है। विमान ने तब उड़ान भरी, जब राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान से बिना शर्त आत्मसमर्पण की मांग की है और इजरायल को लिए पूर्ण समर्थन का वादा कर दिया है। अमेरिका का ई-4बी डूम्सडे प्लेन (प्रलय का जेट) के नाम से मशहूर है। ई-4बी नाइटवॉच एक सुरक्षित मोबाइल कमांड सेंटर के रूप में काम करता है, जिसे परमाणु हमलों और इल्क्ट्रो मैग्नेट पल्स का सामना करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह जेट 67 सैटेलाइट डिश और एंटेना से लैस है, जो वैश्विक संचार को सक्षम बनाता है। यह आपात स्थिति में राष्ट्रपति, रक्षा सचिव और वरिष्ठ सैन्य नेताओं के लिए कनेक्टिविटी सुनिश्चित करता है।

ई-4बी प्लेन में तीन डेक हैं, जिसमें एक ब्रीफिंग रूम, एक रणनीतिक सम्मेलन कक्ष, एक संचार क्षेत्र और आराम के लिए 18 बंक शामिल हैं। यह हवा में ईंधन भरने की क्षमता के कारण बिना उतरे 35 घंटे से अधिक समय तक हवा में रह सकता है। ई-4बी नाइटवॉच महत्वपूर्ण संकटों के दौरान सक्रिय रहा है।

पीएम मोदी ने क्रोएशिया के राष्ट्रपति ज़ोरान पट्टचित्र पेंटिंग और सिल्वर कैंडल स्टैंड उपहार में दिया

जाग्रेब (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने क्रोएशिया की अपनी ऐतिहासिक यात्रा के दौरान क्रोएशिया के राष्ट्रपति ज़ोरान मिलनोविच को एक पट्टचित्र पेंटिंग उपहार के तौर पर दी। पट्टचित्र ओडिशा का एक सुंदर पारंपरिक कला रूप है, जो कपड़े पर अपनी विस्तृत और रंगीन पेंटिंग के लिए मशहूर है। इसका नाम पट्टा (कपड़ा) और चित्र (चित्र) से आया है। ये कलाकृतियाँ आमतौर पर भारतीय पौराणिक कथाओं, खासकर भगवान कृष्ण और जगन्नाथ परंपरा से जुड़ी कहानियाँ दिखाती हैं। कलाकार बोल्ड लाइन और विस्तृत दृश्य बनाने के लिए प्राकृतिक रंगों और हस्तनिर्मित ब्रश का प्रयोग करते हैं।

इसके अलावा प्रधानमंत्री मोदी ने क्रोएशिया के प्रधानमंत्री प्लेंकोविच को सिल्वर कैंडल स्टैंड उपहार में दिया। राजस्थान का यह सिल्वर कैंडल स्टैंड इस क्षेत्र की पारंपरिक धातु कला का एक सुंदर उदाहरण है। कुशल कारीगरों द्वारा हस्तनिर्मित, इसमें सदियों पुरानी उत्कीर्णन तकनीकों का उपयोग करके बनाए गए विस्तृत पुष्प और ज्यामितीय डिज़ाइन हैं। इसका सुंदर आकार और बढ़िया पैटर्न इस एक शाही और कालातीत रूप देते हैं। राजस्थान, विशेष रूप से उदयपुर और जयपुर जैसे शहर अपनी चांदी की शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध हैं। डिज़ाइन अक्सर महलों और मंदिरों से प्रेरणा लेते हैं।

इसके पहले ज़ाग्रेब में गर्मजोशी और उत्साह के साथ स्वागत करने पर प्रधानमंत्री मोदी ने अपने समकक्ष प्लेंकोविच और क्रोएशियाई सरकार के प्रति आभार व्यक्त किया। दोनों देशों के बीच साझा आधार पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा, ÷भारत और क्रोएशिया लोकतंत्र, कानून का शासन, समानता और अन्य जैसे साझा मूल्यों से जुड़े हुए हैं। द्विपक्षीय सहयोग के लिए एक महत्वाकांक्षी रोडमैप की घोषणा कर पीएम मोदी ने कहा, हमने अपने तीसरे कार्यकाल में अपने द्विपक्षीय संबंधों को तीन गुना गति देने का फैसला किया है। प्रशिक्षण, सैन्य आदान-प्रदान और रक्षा उद्योग विकास जैसे क्षेत्रों में दीर्घकालिक सहयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए एक रक्षा सहयोग योजना पर विचार किया जा रहा है। व्यापार वृद्धि के लिए पहचाने गए प्रमुख क्षेत्रों में फार्मास्यूटिकल्स, कृषि, आईटी, स्वच्छ और डिजिटल प्रौद्योगिकी और नवीकरणीय ऊर्जा शामिल हैं।

ऑपरेशन सिंधु से लौटी खुशियों की मुस्कान, ईरान से110 भारतीय छात्रों को निकाला

नई दिल्ली (एजेंसी)। इजरायल और ईरान के बीच हो रही बमबारी में सैकड़ों छात्रों की जान खतरे में थी। केंद्र की मोदी सरकार ने ऑपरेशन सिंधु चलाकर इन्हे निकालने का काम शुरु कर दिया है।

भारत ने ईरान में फंसे 110 भारतीयों की सुरक्षित वापसी करवाई है। ऑपरेशन सिंधु के तहत इन भारतीय छात्रों को लेकर पहला विमान गुरुवार को आर्मेनिया के येरेवन से नई दिल्ली पहुंचा। विदेश मंत्रालय ने पुष्टि की है कि तेहरान में रहने वाले छात्रों को भारतीय दूतावास के साथ मिलकर सुरक्षित रूप से निकाला गया है। विदेश मंत्रालय ने अपने आधिकारिक बयान जारी कर कहा, भारतीय दूतावास की मदद से तेहरान में भारतीय छात्रों को शहर से बाहर निकाल लिया गया है।

भारतीय अधिकारियों ने भारतीयों की सुरक्षित वापसी के लिए ईरान और अर्मेनिया की मदद की सराहना भी की है। बता दें कि संघर्ष शुरू होने के बाद से ही ईरान ने अपने हवाई क्षेत्र को बंद कर दिया है, जिससे फंसे नागरिकों की मुसीबतें और बढ़ गईं। वहीं आस पास के देशों में भी दर्जनों एयरपोर्ट बंद कर दिए गए हैं। इसके बाद भारत ने नागरिकों की वापसी के लिए ईरान से बॉर्डर तक सुरक्षित रास्ता मुहैया कराने का अनुरोध किया था।ईरान के इस अनुरोध को स्वीकारने के बाद छात्रों को अजरबैजान, तुर्कमेनिस्तान और अफगानिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के जरिए बाहर निकलने की सलाह दी गई है। भारतीय दूतावास ने ईरान में 24गुना7 कंट्रोल रूम भी स्थापित किया है। बता दें कि ईरान में 4,000 से अधिक भारतीय नागरिक रहते हैं। इनमें से ज्यादातर छात्र हैं।

गुरुवार सुबह पहली फ्लाइट हुई लैंड

जानकारी के मुताबिक भारतीय छात्र 18 जून को एक विशेष फ्लाइट में येरेवन के ज़्वार्टनोट्स अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे से रवाना हुए थे। विमान 19 जून की सुबह नई दिल्ली में लैंड हुआ। इससे पहले भारत ने ईरान में फंसे लोगों को सुरक्षित वापस लाने के लिए ऑपरेशन सिंधु की शुरुआत की है। विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में इसकी घोषणा की थी। उन्होंने लिखा, भारत ने ईरान से भारतीय नागरिकों को निकालने के लिए ऑपरेशन सिंधु शुरू किया है। भारत विदेश में अपने नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

अहमदाबाद प्लेन क्रैश के लैक बॉस की जांच अब अमेरिका में होगी

दुर्घटना में ब्लैक बॉक्स बुरी तरह क्षतिग्रस्त, डाटा निकालना मुश्किल

अहमदाबाद (एजेंसी)। अहमदाबाद विमान हादसे में ब्लैक बॉक्स मिलने के बाद उम्मीद की जा रही थी कि हादसे के ठीक कारणों का पता चल जाएगा, लेकिन अब ऐसा होता नहीं दिख रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक विमान हादसा इतना भयानक था कि विमान का ब्लैक बॉक्स भी क्षतिग्रस्त हो गया है। ऐसे में इससे डाटा निकालना मुश्किल है। अब इस ब्लैक बॉक्स को अमेरिका भेजने की तैयारी की जा रही है।

बताया जा रहा है कि अहमदाबाद विमान हादसे में बरामद ब्लैक बॉक्स का डाटा रिकवर करने अमेरिका भेजा जाएगा। इस मामले पर भारत सरकार की तरफ से जल्द ही फैसला लिया जाएगा। वाशिंगटन डीसी का नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड इसकी जांच करेगा। इस ब्लैक बॉक्स के साथ एक भारतीय दल भी भेजा जाएगा, जो जांच के दौरान सभी प्रोटोकॉल की निगरानी करेगा। ब्लैक बॉक्स अपने आप में दो डिवाइस होता है। इसमें कॉकपिट वॉयस रिकॉर्डर और फ्लाइट डाटा रिकॉर्डर होता है। इसमें सीवीआर और एफडीआर लगा होता है जो उड़ान के दौरान सारी जानकारियां इकट्ठा करता रहता है। ये एक ऐसा उपकरण होता है, जो किसी विमान, हेलीकॉप्टर में लगाया जाता है। उड़ान के दौरान ये डिवाइस अहम जानकारी इकट्ठा करता है। जब कोई विमान दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है, तो ब्लैक बॉक्स की मदद से ही पता लगाया जाता है यह बहुत मजबूत और आग प्रतिरोधी होता है। बता दें बीते गुरुवार को अहमदाबाद में एयर इंडिया का विमान क्रैश हो गया था। यह विमान अहमदाबाद से लंदन जा रहा था, उड़ान भरने के चंद सेकंडों में यह क्रैश हो गया और आग गोला बनकर कई जिंदगियां लील गया। इस हादसे में विमान में मौजूद 242 लोगों में से 241 की मौत हो गई थी। इसके अलावा जिस बिल्डिंग से विमान टकराया, उसके आसपास मौजूद कई लोगों की मौत हो गई थी।

केंद्रीय गृह मंत्री शाह ने क्यों कहा, अंग्रेजी बोलने वालों को जल्द ही शर्म आएगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। भाषा विवाद के बीच केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने एक और मोर्चा खोलकर कहा कि देश में अंग्रेजी बोलने वालों को जल्द ही शर्म आएगी। एक कार्यक्रम में गृह मंत्री ने कहा कि देशी भाषाएं भारत की पहचान के लिए केंद्रीय हैं और उन्हें विदेशी भाषाओं पर प्रमुखता मिलनी चाहिए। केंद्रीय मंत्री शाह ने कहा कि इस देश में अंग्रेजी बोलने वालों को जल्द ही शर्म आएगी, इसतरह के समाज का निर्माण अब दूर नहीं है। मेरा मानना है कि अपनी भाषाओं के बिना हम सच्चे भारतीय नहीं रह सकते। शाह ने कहा कि जब देश का कालखंड घनघोर अंधेरी रात्रि जैसा था, तब भी भक्ति साहित्य ने हमारे धर्म, स्वतंत्रता और संस्कृति के दीयों को जलाकर रखा था... साहित्य एक प्रकार से हमारे समाज की आत्मा है... आज हम सभी को देश में परिवर्तन दिख रहा है... मुझे विश्वास है कि 2047 तक यह यात्रा निश्चित रूप से हमारे सभी प्रकार के खोए हुए गौरव और समाज को वापस दिलाने का काम करेगी। उन्होंने भारत की भाषाई विरासत को पुनः प्राप्त करने के लिए पूरे देश में नए सिरे से प्रयास करने का आह्वान किया। शाह ने भविष्यवाणी की कि दुनिया भर में अंग्रेजी को औपनिवेशिक गुलामी के प्रतीक के रूप में देखा जाएगा। उन्होंने कहा, हमारे देश, हमारी संस्कृति, हमारे इतिहास और हमारे धर्म को समझने के लिए कोई भी विदेशी भाषा पर्याप्त नहीं हो सकती।

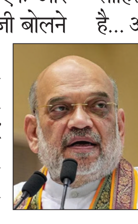

मैं कांग्रेस पार्टी का सदस्य हूं- पार्टी को तय करने दीजिए कि वह मेरे बारे में क्या सोचती है - शशि थरूर

नई दिल्ली। कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) के सदस्य शशि थरूर ने स्वीकार किया है कि पार्टी नेतृत्व में कुछ नेताओं से उनके मतभेद हैं। लेकिन नीलांबुर विधानसभा सीट पर उपचुनाव के मद्देनजर वह इस बारे में बात नहीं करेंगे। थरूर ने कहा कि कांग्रेस, उसके मूल्य और उसके कार्यकर्ता उन्हें बहुत प्रिय हैं।

पहलगाम आतंकी हमले के बाद, नरेन्द्र मोदी सरकार के रुख का समर्थन करने के कारण थरूर कुछ पार्टी सहयोगियों के निशाने पर रहे हैं। कांग्रेस सांसद ने कहा कि उन्होंने 16 वर्ष तक पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ निकटता से काम किया है और वह उन्हें अपना करीबी मित्र एवं भाई मानते हैं।

थरूर ने कहा कि कांग्रेस नेतृत्व में कुछ लोगों से मेरी राय अलग है। आप जानते हैं कि मैं किस बारे में बात कर रहा हूं, क्योंकि उनमें से कुछ मुद्दे सार्वजनिक हैं और आपने (मीडिया ने) इस बारे में खबरें दी हैं। हालांकि, उन्होंने यह स्पष्ट नहीं किया कि उनके मतभेद राष्ट्रीय नेतृत्व के साथ हैं या प्रदेश नेतृत्व के साथ। तिरुवनंतपुरम से लोकसभा सदस्य ने संकेत दिया कि वह उपचुनाव के नतीजों के बाद उन मतभेदों के बारे में बात कर सकते हैं। थरूर की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है, जब पार्टी के एक नेता द्वारा उन्हें ''भाजपा का सुपर प्रवक्ता बताये जाने के बाद कांग्रेस ने सार्वजनिक रूप से उनका समर्थन नहीं किया। पूर्व कांग्रेस सांसद उदित राज ने थरूर को भाजपा का ''सुपर प्रवक्ता करार दिया था क्योंकि सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के तहत विदेश दौरे पर गए तिरुवनंतपुरम से सांसद ने कथित तौर पर कहा था कि भारत ने पहली बार 2015 में नियंत्रण रेखा पार की थी। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए थरूर ने बृहस्पतिवार को इसे ''गलत धारणा करार दिया।

थरूर ने यह भी कहा कि उन्होंने इस विषय पर बहस में न पड़ने का फैसला किया क्योंकि वह प्रतिनिधिमंडल के दौरे में बहुत व्यस्त थे और वह उन बयानों पर प्रतिक्रिया नहीं देना चाहते जो उनके द्वारा कही गई बातों को समझे बिना दिये गए हैं।

यह पूछे जाने पर कि क्या वह पार्टी छोड़ने जा रहे हैं, उन्होंने कहा कि वह ''कहीं नहीं जा रहे हैं। मैं कांग्रेस पार्टी का सदस्य हूं। पार्टी को तय करने दीजिए कि वह मेरे बारे में क्या सोचती है। उनसे जब पूछा गया कि वह उपचुनाव के लिए प्रचार अभियान का हिस्सा क्यों नहीं थे, तो थरूर ने कहा कि उन्हें इसके लिए आमंत्रित नहीं किया गया था, जबकि पिछले साल वायनाड में हुए उपचुनाव सहित अन्य उपचुनावों के दौरान आमंत्रित किया जाता रहा है।

उन्होंने कहा, ''मैं वहां नहीं जाता, जहां मुझे आमंत्रित नहीं किया गया हो। उन्होंने साथ ही कहा कि वह चाहते हैं कि पार्टी कार्यकर्ताओं के प्रचार अभियान के प्रयास सफल हों और नीलांबुर से संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ) उम्मीदवार की जीत हो।

ईरान का परमाणु सामान क्या पाकिस्तान पहुंचा सकता है अमेरिका

-ट्रम्प-मुनीर व्हाइट हाउस मुलाक़ात के भीतर की कहानी

वॉशिंगटन (एजेंसी)। इज़राइल-ईरान युद्ध की आहट के बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल जनरल आसिम मुनीर की हालिया व्हाइट हाउस बैठक ने कूटनीतिक हलकों में हलचल बढ़ा दी है। बैठक, जो एक अनौपचारिक लंच के रूप में आयोजित की गई, पर अब पूर्व पेंटागन अधिकारी और अमेरिकन एंटरप्राइज़ इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ विश्लेषक माइकल रूबिन के खुलासों ने नई बहस छेड़ दी है।

दरअसल रूबिन का दावा है कि ट्रम्प प्रशासन पाकिस्तान को 'पसंदीदा मित्र' बताकर रणनीतिक सौदा करना चाहता है। उनके अनुसार, यदि अमेरिका-इज़राइल गठजोड़ ईरान के परमाणु ठिकानों पर निर्णायक कार्रवाई करता है, तो वहां बची-खुची संवेदनशील परमाणु सामग्री को पाकिस्तान में अस्थायी रूप से रखा जा सकता है। रुबिन ने कहा है कि ट्रम्प पाकिस्तान को दोस्त इसलिए कह रहे हैं क्योंकि उन्हें उस दोस्ती से फ़ायदा उठाना है। इसी के साथ रूबिन ने यह भी जोड़ा कि पाकिस्तान आज स्वतंत्र नहीं, बल्कि चीन का प्रॉक्सी बन चुका है। ऐसे में संभव है कि मुनीर ने व्हाइट हाउस में बीजिंग के संदेश भी पहुँचाए हों। चीन की सबसे बड़ी चिंता फारस की खाड़ी से होने वाली तेल आपूर्ति पर संभावित बाधा है; लंबा युद्ध उसकी अर्थव्यवस्था को अमेरिका से कहीं ज़्यादा चोट पहुँचा सकता है।

रूबिन आगाह करते हैं कि अमेरिका को पाकिस्तान को एक डॉलर भी नहीं देना चाहिए, क्योंकि वह अपने स्वार्थ में ही साथ देगा। दूसरी ओर, यदि वाकई ईरान का परमाणु जखीरा हटाना पड़ा, तो अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा-तंत्र को किसी विश्वसनीय तीसरे देश की आवश्यकता होगी। क्या यह भूमिका पाकिस्तान निभाएगा या कोई और–अभी स्पष्ट नहीं, पर ट्रम्प-मुनीर लंच ने विकल्पों के दरवाज़े ज़रूर खोल दिए हैं।

दबाव और 'दोस्ती' का दोहरा फार्मूला

रूबिन का मानना है कि ट्रम्प, जनरलों से प्रभावित रहते हैं; लिहाज़ा पाकिस्तान के निर्वाचित नेतृत्व से अधिक मुनीर उन्हें उपयोगी लगते हैं। हो सकता है निजी मुलाक़ात में ट्रम्प ने कड़वी चेतावनी दी हो और सार्वजनिक मंच पर दोस्ती की मिठास दिखाई हो।

रणनीतिक लिहाज़ से क्यों अहम है पाकिस्तान

900किमी सीमा– पाकिस्तान-ईरान बॉर्डर अमेरिकी सेनाओं को ज़मीनी या हवाई अभियानों के लिए अग्रिम आधार दे सकता है।

एयरस्पेस एक्सेस– अफ़ग़ानिस्तान युद्ध की तरह, अमेरिकी बमवर्षक और ड्रोन ईरान के पूर्वी मोर्चे पर अधिक सहजता से पहुँच पाएंगे।

लॉजिस्टिक नेटवर्क– कराची और ग्वादर बंदरगाहों के माध्यम से उभरता नौसैनिक सहयोग अमेरिका को मध्य-पूर्व में लचीलापन देगा।

पाकिस्तान के लिए दुविधा

ट्रम्प ने हाल में इस्लामाबाद को पसंदीदा मित्र कहा है। कूटनीतिक विशेषज्ञ मानते हैं कि यही सौहार्दपूर्ण बयान आगे चलकर राजनयिक दबाव में बदल सकता है। सवाल यह है कि क्या पाकिस्तान चीन एवं घरेलू राजनीति के बीच संतुलन बना पाएगा, या वाशिंगटन की रणनीतिक माँगों के आगे झुकना पड़ेगा?

संक्षिप्त समाचार

ट्रम्प बोले- खामेनेई को अभी नहीं मारेंगः जानते हैं सुप्रीम लीडर कहां छिपा, ईरान के आसमान पर हमारा कब्जा

तेहरान/तेल अवीव, एजेंसी। इजराइल और ईरान के बीच 5वें दिन भी संघर्ष जारी है। इस बीच अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा है कि ईरान के आसमान पर हमारा कब्जा है।

उनके इस दावे से आशंका बढ़ गई है कि क्या अमेरिका ईरान के खिलाफ इजराइली हमलों में शामिल हो गया है। ट्रम्प ने मंगलवार रात अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रूथ पर 3 पोस्ट किए। इसमें उन्होंने लिखा, अब ईरान के आसमान पर हमारा पूरा कंट्रोल है। हम अच्छे से जानते हैं कि सुप्रीम लीडर कहां छिपा है। उस तक पहुंचना बहुत आसान है, लेकिन हम उसे मारेंगे नहीं। कम से कम अभी तो नहीं। अमेरिकी राष्ट्रपति ने तीसरे और अंतिम पोस्ट में लिखा- अनकंडीशनल सरेंडर (बिना शर्त सरेंडर)। उनके इस पोस्ट से कयास लगाए जा रहे हैं कि उन्होंने ईरान से इजराइल के खिलाफ युद्ध में हथियार डालने की मांग की है। ईरान का इजराइली मोसाद हेडक्वार्टर पर हमला ईरान ने मंगलवार को तेल अवीव में इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के हेडक्वार्टर पर हवाई हमला किया। इसके अलावा मिलिट्री इंटेलिजेंस से जुड़ी खुफिया एजेंसी ऋ्ह की बिल्डिंग को भी निशाना बनाया है। वहीं, इजराइली हवाई हमले में ईरान के डिप्टी कमांडर मेजर जनरल अली शादमानी की मौत हो गई है। शादमानी ईरान की खतम-अल-अनबिया हेडक्वार्टर्स यानी सैन्य आपात कमान के हेड थे। उन्होंने 4 दिन पहले ही यह पद संभाला था। अली शादमानी ने मेजर जनरल गुलाम अली राशिद की जगह ली थी। इजराइल ने 13 जून को हमले में उनकी हत्या कर दी थी।

अमेरिकी इतिहास की सबसे बड़ी आभूषण चोरी में संदिग्धों की पहचान

लॉस एंजिलिस, एजेंसी। अमेरिकी इतिहास में सबसे बड़ी आभूषण चोरी हुई है। 100 मिलियन डॉलर की ज्वेलरी चोरी के इस मामले में जांच अधिकारियों ने 7 संदिग्धों की पहचान कर ली है। लॉस एंजिलिस के संघीय अधिकारियों ने मंगलवार को बताया कि राज्य के उत्तरी इलाके में एक ग्रामीण फ्रीवे रेस्ट स्टॉप पर बख्तरबंद ट्रक का पीछा कर सात आरोपियों की पहचान की गई है। माना जा रहा है कि यह अमेरिका के इतिहास की सबसे बड़ी ज्वेलरी चोरी है। अपराधियों ने लगभग 100 मिलियन डॉलर के हीरे, पन्ने और अन्य सामानों पर हाथ साफ किया है। सात संदिग्धों में से दो को गिरफ्तार कर लिया गया है। उन्हें संघीय अदालत में पेश किया जाएगा। अदालत के रिकॉर्ड से पता चला है। चार आरोपी अब भी फरार हैं। एक अन्य संदिग्ध एरिजोना में चोरी के दूसरे मामले में जेल की सजा काट रहा है। अधिकारियों ने बताया कि पाब्लो राउल लूगो लारोइग और जेसन नेलन प्रेसिला फ्लोरेस नाम के दो आरोपियों को सोमवार को (अमेरिकी समयानुसार) गिरफ्तार किया गया। अभियोग के अनुसार, जुलाई 2022 में चोरी का यह मामला सामने आया था। संदिग्धों ने सैन फ्रांसिस्को के पास वारदात को अंजाम दिया। अपराधियों ने अंतरराष्ट्रीय आभूषण शो से 73 बैग आभूषणों के साथ निकल रहे बख्तरबंद ट्रक को निशाना बनाया था।

अमेरिका : ब्रेन डेड महिला ने बच्चे को दिया जन्म

त्बिलिसी, एजेंसी। अमेरिका के जॉर्जिया राज्य में एक ब्रेन-डेड (मस्तिष्क-मृत) घोषित की जा चुकी गर्भवती महिला एड्रियाना स्मिथ (31) ने बच्चे को जन्म दिया है। महिला को करीब तीन महीने तक जीवन रक्षक प्रणाली पर रखा गया, ताकि उसके गर्भ में पल रहा भ्रूण पूर्ण रूप से विकसित होकर जन्म ले सके। एड्रियाना की मां एप्रिल न्यूकिर्क ने मीडिया को बताया कि बच्चे का जन्म शुक्रवार की सुबह सिजेरियन तरीके से समय पूर्व हुआ। बच्चे का वजन लगभग 800 ग्राम है और वह नवजात शिशु गहन देखभाल इकाई (निक्कू वार्ड) में है। बता दें कि एड्रियाना स्मिथ पेशे से नर्स और एक पांच वर्षीय बेटे की मां थीं। उन्हें फरवरी में गंभीर सिरदर्द के बाद अस्पताल ले जाया गया, जहां एमोरी यूनिवर्सिटी अस्पताल ने मस्तिष्क में रक्त के थक्के पाए और उन्हें ब्रेन-डेड घोषित कर दिया।

गाजा में खाना लेने की कोशिश कर रहे फलस्तीनियों पर टैंकों से गोलाबारी, 59 की मौत

गाजा पट्टी, एजेंसी। गाजा में मंगलवार को सहायता ट्रक से खाना हासिल करने की कोशिश कर रहे फलस्तीनियों पर इस्राइली टैंकों से गोलाबारी की गई। इसमें 59 लोगों की मौत हो गई और 221 लोग घायल हो गए। सोशल मीडिया पर साझा एक वीडियो में दक्षिणी गाजा पट्टी के खान यूनिस की एक सड़क पर करीब एक दर्जन क्षत-विक्षत शव पड़े हुए दिखाई दे रहे हैं। इस्राइली सेना ने इलाके में गोलीबारी की बात स्वीकार की और कहा कि वह इस घटना की जांच कर रही है। प्रत्यक्षदर्शियों ने कहा कि इस्राइली टैंकों ने हजारों लोगों की भीड़ पर कम से कम दो गोले दागे। यह भीड़ खान यूनिस होती हुई मुख्य पूर्वी सड़क पर सहायता ट्रकों से भोजन प्राप्त करने की कोशिश में एकत्रित हुई थी। नासर अस्पताल में भर्ती एक प्रत्यक्षदर्शी ने कहा, अचानक उन्होंने हमें आगे बढ़ने दिया और सभी को इकट्ठा किया। इसके बाद टैंक से गोले दाग दिए। उनमें कोई दया नहीं थी।

ईरानी सुप्रीम लीडर खामेनेई बोले- जंग शुरूः इजराइल पर कोई दया नहीं, ईरान में मौत का आंकड़ा 600 के करीब पहुंचा

तेहरान, एजेंसी। ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला खामेनेई ने मंगलवार देर रात एक्स पर लिखा- जंग शुरू होती है। हम आतंकी यहूदी शासन को कड़ा जवाब देंगे। उन पर कोई दया नहीं दिखाएंगे। इस ऐलान के बाद ईरान ने इजराइल पर 25 मिसाइलें दागी हैं। ईरान-इजराइल के बीच पिछले 5 दिनों से हिंसक संघर्ष जारी था, अब खामेनेई की पोस्ट को जंग का अधिकारिक ऐलान माना जा रहा है। यानी अब इसे संघर्ष की बजाय जंग कहा जाएगा। कई मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक जल्द अमेरिका भी इसमें शामिल हो सकता है।

ईरान ने पहली बार फतह मिसाइल का इस्तेमाल किया : ईरानी मीडिया में छपी खबरों के मुताबिक, ईरान की सैन्य शाखा आईआरजीसी (इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स) ने बुधवार सुबह इजराइल पर पहली बार फतह मिसाइल का इस्तेमाल करने का दावा किया है। आईआरजीसी ने कहा कि ईरान का अब इजराइल के आसमान पर कब्जा हो चुका है। तस्नीम मीडिया के मुताबिक ढ्ढक्रत्रष्ट ने कहा कि फतह मिसाइलों ने इजराइल के एयर डिफेंस सिस्टम को भेद दिया और बार-बार उनके सुरक्षित ठिकानों को निशाना बनाया। बयान में यह भी कहा गया कि यह हमला इजराइल और उसके सहयोगी देशों को ईरान की ताकत का सीधा संदेश था। ईरान ने दावा किया कि इजराइल इन हमलों से खुद को बचाने में पूरी तरह असमर्थ है।

ईरान पर हमला करने पर ट्रम्प ने फैसला नहीं लिया : अमेरिका, इजराइल के साथ मिलकर ईरान पर हमले करेगा या नहीं इस पर अभी तक ट्रम्प ने कोई फैसला नहीं लिया है। व्हाइट हाउस के अधिकारियों ने वॉल स्ट्रीट जर्नल को इसकी जानकारी दी। ट्रम्प और उनकी राष्ट्रीय सुरक्षा टीम के बीच मंगलवार को एक अहम बैठक हुई थी। इसमें इस पर चर्चा हुई। रिपोर्ट के मुताबिक, ट्रम्प अभी इस उम्मीद में हैं कि अगर अमेरिका सैन्य कार्रवाई की धमकी देता है, तो ईरान बातचीत की मेज पर लौटेगा और अमेरिका की शर्तों को मान लेगा। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कनाडा से आने के बाद व्हाइट हाउस में नेशनल सिक्योरिटी टीम के साथ बैठक की। इसके बाद अमेरिका ने मिडिल ईस्ट में और ज्यादा फाइटर जेट्स भेजने का फैसला किया। वॉशिंगटन स्थित एक ह्यूमनराइट्स ग्रुप ने दावा किया है कि ईरान में मौत का आंकड़ा अब 585 हो चुका है। जबकि, 1,326 लोग घायल हुए हैं। वहीं, ईरान की सरकार ने अब तक मौतों की पूरी जानकारी साझा नहीं की है। आखिरी बार ईरान ने सोमवार को हताहतों की जानकारी शेयर की थी। सरकार के मुताबिक इस लड़ाई 224 ईरानी मारे गए हैं, जबकि 1,277 घायल हुए हैं। इजरायल और ईरान के बीच भीषण जंग जारी है। अब तक इजरायल के हमलों में ईरान में 585 लोग मारे गए हैं और 1,326 लोग जख्मी हुए हैं। अमेरिका स्थित ह्यूमन राइट्स ग्रुप का कहना है कि इजरायली हमलों में 239 ईरानी नागरिक मारे गए हैं, जबकि 126 सुरक्षा बलों के जवानों की मौत हुई है। बुधवार को भी सुबह से ही दोनों देशों के बीच हमले जारी हैं और ईरान ने तो अब सुपरसोनिक मिसाइलों का इस्तेमाल भी शुरू कर दिया है। आमतौर पर ईरान हमलों में मरने वालों की जानकारी साझा नहीं करता है, लेकिन उसने भी सोमवार को जो डिटेल दी थी, उसके मुताबिक कुल 224 लोग तब तक मारे गए थे। इसके अलावा 1277 जख्मी हुए हैं। हालात यह हैं कि 6 दिन बाद भी ईरान और इजरायल के बीच जंग बदस्तूर जारी है और फिलहाल समझौते के भी कोई आसार नहीं हैं। ईरान ने भी इजरायल की राजधानी तेल अवीव को टारगेट किया है, लेकिन उसकी ओर से किए गए हमलों में यहूदी मुल्क का बहुत ज्यादा नुकसान नहीं हुआ है। ईरान की राजधानी तेहरान में तो लगातार बड़े नुकसान की खबरें आ रही हैं। हालात यह हैं कि तेहरान में रहने वाले विदेशी लोग तो मुल्क छोड़कर ही निकल रहे हैं, वहीं ईरानी भी जल्दी से जल्दी तेहरान से निकल जाना चाहते हैं। फ्यूल स्टेशनों पर वाहनों की लंबी कतारें दिख रही हैं और लोग अपनी गाड़ियों में ही सामान भरकर जैसे-तैसे निकल जाना चाहते हैं। इजरायल का कहना है कि वह ईरान को परमाणु हथियार तैयार करने से रोकना चाहता है। इसलिए हमले कर रहा है। इजरायल के हमले ऐसे वक्त में शुरू हुए हैं, जब ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु डील को लेकर चर्चा चल रही थी। बीते सप्ताह ही अमेरिका और ईरान के बीच वार्ता होने वाली थी, लेकिन उससे ठीक पहले इजरायल ने हमले शुरू कर दिए। ईरान लंबे समय से कहता रहा है कि उसका परमाणु कार्यक्रम शांतिपूर्ण है। लेकिन वह अकेला ऐसा गैर-परमाणु संपन्न देश है, जिसने 60 पर्सेंट लेवल तक यूरेनियम हासिल कर लिया है। परमाणु हथियार तैयार करने के लिए यूरेनियम ग्रेड लेवल 90 पर्सेंट तक होना चाहिए।

अवैध संबंधों में फंसे पाक उच्चायुक्त मारूफ, बांग्लादेश से वापस बुलाना पड़ा

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश में पाकिस्तान के उच्चायुक्त सैयद अहमद मारूफ की कथित अवैध संबंधों के चलते अचानक वापस बुला लिया गया है। आधिकारिक तौर पर पाकिस्तान ने उन्हें अवकाश पर बताया, लेकिन इम्का और सोशल मीडिया में उनके दो बांग्लादेशी महिलाओं से कथित निजी संबंधों को लेकर चर्चाएं हैं। अब डिप्टी हाई कमिश्नर कार्यवाहक उच्चायुक्त को भूमिका निभाएंगे। पाक ने राजदूत इमरान हैदर को नया उच्चायुक्त नियुक्त किया है। सैयद मारूफ 11 मई को अचानक जींस और टी-शर्ट में ढाका से रवाना हुए, जिसके बाद वे सार्वजनिक रूप से कभी नहीं दिखे. सोशल मीडिया पर यह चर्चा जोरों पर रही कि वह बांग्लादेश की एक 23 वर्षीय बैंककर्मी महिला के साथ कथित रिश्तों के कारण विवादों में फंसे. लड़की की पहचान ढाका निवासी हक के नाम से हुई है, जो बांग्लादेश बैंक में असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में काम करती है. इंस्टाग्राम पर इस लड़की ने सिर्फ मारूफ को फॉलो किया हुआ था. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, मारूफ की आखिरी यात्रा कॉक्स बाजार में हुई थी, जहां उसी दौरान यह महिला भी मौजूद थी. इस संयोग ने सोशल मीडिया पर और भी सवाल खड़े कर दिए. आरोप है कि मारूफ हनी ट्रैप में फंस गए थे, जिसके बाद उन्हें आनन-फानन में बांग्लादेश छोड़ना पड़ा. पाकिस्तान ने बाद में आधिकारिक तौर पर बांग्लादेश को सूचित किया कि उनके डिप्टी हाई कमिश्नर कार्यवाहक उच्चायुक्त के रूप में काम करेंगे. एक विवाद और खत्म हो गया सबकुछ दिलचस्प बात यह है कि मारूफ का कार्यकाल पाकिस्तान-बांग्लादेश संबंधों को बेहतर करने के प्रयासों के लिए जाना जा रहा था. उन्होंने पाकिस्तान के विदेश सचिव की संभावित ढाका यात्रा की तैयारी में अहम भूमिका निभाई थी. लेकिन इस विवाद के बाद सारे प्रयास अधर में लटक गए हैं. यह पहली बार नहीं है जब किसी राजनयिक को बांग्लादेश में हनी ट्रैप विवाद का सामना करना पड़ा हो. इससे पहले एक सऊदी राजदूत को भी इसी तरह के विवाद में अपने देश लौटना पड़ा था. ऐसे मामलों से यह संकेत मिलता है कि राजनयिक सुरक्षा और नैतिक जिम्मेदारियों को लेकर चुनौती बढ़ती जा रही है।

अगले जी7 सम्मेलन की मेजबानी करेगा फ्रांस, इवियन स्पा टाउन में होगा आयोजन

कनानास्किस, एजेंसी। अगले साल जी-7 शिखर सम्मेलन फ्रांस के इवियन शहर में आयोजित किया जाएगा। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने कनाडा के रॉकीज रिसॉर्ट कनानास्किस में 2025 के शिखर सम्मेलन के दौरान सोशल मीडिया पर एक वीडियो के जरिये यह घोषणा की। इसके बाद पत्रकारों से बात करते हुए मैक्रों ने कहा कि इवियन और उसके आसपास के क्षेत्र ने इस अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन को आयोजित करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। इवियन-लेस-बेन्स, फ्रांस के आल्प्स पहाड़ों में स्विट्जरलैंड की सीमा के पास बसा है। 19वीं शताब्दी में यह अपने प्राकृतिक झरनों के पानी के लिए मशहूर हुआ था और फिर यह एक उच्च श्रेणी का रिसॉर्ट बन गया। इसने राजघरानों और मशहूर हस्तियों को आकर्षित किया। यह पहली बार नहीं है, जब इवियन अंतरराष्ट्रीय कूटनीति के केंद्र में होगा। इससे पहले, 1962 में, इवियन समझौते ने अल्जीरियाई युद्ध को समाप्त कर दिया था और इससे उत्तरी अफ्रीकी देश अल्जीरिया को फ्रांस से आजादी मिल सकी। जी-7 शिखर सम्मेलन हर साल दुनिया के सात बड़े लोकतांत्रिक देशों- ब्रिटेन, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान और अमेरिका में बारी-बारी से होता है।

ब्रिटेन की संसद ने अबॉर्शन को अपराधमुक्त करने के लिए किया वोट, 19वीं सदी का कानून हुआ खत्म

लंदन, एजेंसी। ब्रिटेन की संसद ने मंगलवार को इंग्लैंड और वेल्स में गर्भपात को अपराध से मुक्त करने के लिए मतदान किया. यह फैसला ऐसे वक्त में आया है, जब 19वीं सदी के पुराने कानूनों के तहत गर्भपात कराने वाली महिलाओं की पुलिस जांच बढ़ रही है. करीब 60 साल से, इंग्लैंड और वेल्स में गर्भपात वैध है लेकिन यह 24 हफ्ते के गर्भकाल तक सीमित है और इसके लिए दो डॉक्टरों की मंजूरी की जरूरी होती है. हालांकि, विक्टोरियन युग के एक कानून में 24 हफ्ते से ज्यादा वक्त तक गर्भधारण करने वाली महिलाओं के लिए संभावित आजीवन कारावास की सजा का प्रावधान था. ब्रिटेन में इस कानून के तहत दोषसिद्धि दुर्लभ है, लेकिन कोविड-19 महामारी के बाद अभियोगों में बढ़ोतरी हुई है, जो एक कानूनी बदलाव के बाद हुई है, जिसके तहत गर्भधारण के 10 हफ्ते तक के गर्भ के लिए घर पर गर्भपात की गोलियां लेने की अनुमति दी गई है. रॉयटर्स की रिपोर्ट के मुताबिक, एक स्वतंत्र संसदीय मतदान में गर्भपात कराने वाली महिलाओं के लिए सभी अभियोगों को रोकने के लिए एक संशोधन को 379 मतों के मुकाबले 137 मतों के अंतर से शुरुआती स्वीकृति मिली. 24 हफ्ते की सीमा के बाहर गर्भपात करवाने में महिलाओं की सहायता

करने वाले चिकित्सा पेशेवरों पर अभी भी मुकदमा चलाया जा सकता है. यह संशोधन संसद में विचाराधीन एक बड़े विधेयक का हिस्सा है और हाउस ऑफ कॉमन्स और हाउस ऑफ लॉर्ड्स में इसे संशोधित या अस्वीकृत किया जा सकता है. लेबर सांसद टोनिया एंटोनियाज़ी ने बताया कि मौजूदा कानून के कारण पिछले पांच साल में 100 महिलाओं के खिलाफ़ जांच की गई है. उन्होंने बताया कि इन मामलों में वे महिलाएं शामिल हैं, जिन्होंने वक्त से पहले बच्चे को जन्म दिया था या जिन्हें दुर्व्यवहार करने वाले पार्टनर्स द्वारा गर्भपात के लिए मजबूर किया गया था. एंटोनियाज़ी ने संसद को बताया, इनमें से हर मामला हमारे पुराने गर्भपात कानून द्वारा सक्षम एक उपहास है. यह इंसाफ नहीं है, यह क्रूरता है और इसे खत्म किया जाना चाहिए, हालांकि, कुछ राजनेताओं ने संसद के जरिए प्रस्तावित संशोधन को जल्दबाजी में पारित करने के खिलाफ चेतावनी दी, संभावित अनपेक्षित परिणामों की चेतावनी दी।

एक्सिओम मिशन 4 की लॉन्चिंग में फिर देरी; 22 जून से पहले प्रक्षेपण की कोई तैयारी नहीं

वॉशिंगटन, एजेंसी। एक्सिओम मिशन 4 के प्रक्षेपण में एक बार फिर देरी होगी। मिशन अब पहले से तय 19 जून को लॉन्च नहीं होगा। बताया गया कि नासा, एक्जिओम स्पेस और स्पेसएक्स अब रविवार, 22 जून से पहले अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के लिए चौथे निजी अंतरिक्ष यात्री अभियान एक्सिओम मिशन 4 के प्रक्षेपण का लक्ष्य नहीं बना रहे हैं। प्रक्षेपण तिथि में बदलाव से नासा को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के ज्वेज्दा सेवा मॉड्यूल के सबसे पिछले हिस्से में हाल ही में किए गए मरम्मत कार्य के बाद स्टेशन संचालन का मूल्यांकन जारी रखने का समय मिलेगा।

कई बार टाला जा चुका मिशन : 19 जून वाली लॉन्चिंग टालने से पहले एक्सिओम स्पेस मिशन को 11 जून को फ्लोरिडा में नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से लॉन्च किया जाना था, लेकिन स्पेसएक्स के फाल्कन-9 रॉकेट में ईंधन रिसाव और फिर आईएसएस के रूसी खंड में रिसाव के कारण पहले इसे टालना पड़ा था। सबसे पहले 29 मई को लॉन्च होने वाले इस 14 दिवसीय मिशन को 8 और 10 जून को भी टालना पड़ा था। इसरो ने ट्वीट किया, इसरो, पोलैंड और हंगरी की टीमों ने एक्सिओम मिशन 4 की संभावित लॉन्च टाइमलाइन के बारे में एक्सिओम स्पेस के साथ विस्तृत चर्चा की। इसके बाद एक्सिओम स्पेस ने कई मापदंडों का आकलन करने के लिए नासा और स्पेसएक्स के साथ परामर्श किया। स्पेसएक्स फाल्कन 9 लॉन्च वाहन, ड्रैगन अंतरिक्ष यान की तत्परता की स्थिति, अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन के ज्वेज्दा मॉड्यूल में मरम्मत, चढ़ाई गलियारे की मौसम की स्थिति, चालक दल के स्वास्थ्य और तैयारियों के आधार पर एक्सिओम स्पेस ने सूचित किया है कि अगली संभावित लॉन्च तिथि 22 जून 2025 है। यह मिशन भारत के लिए ऐतिहासिक होगा, साथ ही पोलैंड और हंगरी के लिए भी। ये दोनों देश 40 साल बाद पहली बार मानव अंतरिक्ष उड़ान में हिस्सा लेंगे।

रूस की मदद के लिए उत्तर कोरिया ने फिर बढ़ाए हाथ; बारूदी सुरंग हटाने के लिए भेजेगा सैन्य श्रमिक

सियोल, एजेंसी। उत्तर कोरिया एक बार फिर रूस की मदद के लिए एक बार फिर पहल की है। उत्तर कोरिया अब रूस के कुर्स्क क्षेत्र में पुनर्निर्माण कार्यों में मदद और बारूदी सुरंग हटाने के लिए हजारों सैन्य श्रमिकों भेजेगा। इससे उत्तर कोरिया और रूस के संबंधों में मजबूती आएगी।

यूक्रेन के खिलाफ जंग में उत्तर कोरिया रूस की कई बार मदद कर चुका है। रूसी समाचार एजेंसी तास के अनुसार रूसी सुरक्षा परिषद के सचिव सर्गेई शोइगु ने कहा कि उत्तर कोरियाई नेता किम जोंग उन ने कुर्स्क क्षेत्र में बारूदी सुरंगों को साफ करने के लिए एक हजार सैनिक और बुनियादी ढांचे को बहाल करने के लिए पांच हजार सैन्य निर्माण श्रमिकों को भेजने का फैसला लिया है।

शोइगु ने कहा कि रूसी धरती से यूक्रेन के सैनिकों को खदेड़ने के बाद हम रचनात्मक सहयोग जारी रखने पर सहमत हुए हैं। इसमें उत्तर कोरिया कुर्स्क क्षेत्र की बहाली में सहायता प्रदान करेगा। यह एक तरह की भाईचारे वाली सहायता है। उन्होंने कहा कि रूस और उत्तर कोरिया ने कुर्स्क में मरने वाले उत्तर कोरियाई सैनिकों के सम्मान में दोनों देशों में स्मारक बनाने पर सहमति व्यक्त की है।

उत्तर कोरिया की आधिकारिक कोरियन सेंट्रल न्यूज एजेंसी ने कहा कि किम ने कुर्स्क की वर्तमान स्थिति के संबंध में रूस के साथ उत्तर कोरिया के

सहयोग की बात दोहराई। हालांकि उन्होंने सैन्य निर्माण श्रमिक भेजने की बात का जिक्र नहीं किया। किम ने कहा कि उन्होंने रूस की संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा के लिए किए जा रहे प्रयासों का हमेशा और बिना शर्त समर्थन किया है। किम और शोइगू ने कुर्स्क क्षेत्र को मुक्त कराने के लिए उत्तर कोरियाई सैनिकों के कामों को लंबे समय तक प्रसारित करने के लिए कुछ योजनाओं को मंजूरी दी। शोइगु की यह उत्तर कोरिया की लगभग तीन महीनों में तीसरी यात्रा थी।

ट्रंप ने तीसरी बार बढ़ाई टिकटॉक की बिक्री की समयसीमा; अब 90 दिनों की राहत; जल्द जारी करेंगे आदेश

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने टिकटॉक की बिक्री की समयसीमा तीसरी बार बढ़ा दी है। अब ट्रंप ने टिकटॉक को बेचने के लिए 90 दिनों की राहत दी है। व्हाइट हाउस ने मंगलवार को बताया कि राष्ट्रपति ट्रंप टिकटॉक के चीनी मालिक को एप बेचने की समयसीमा बढ़ाने के लिए इस सप्ताह एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर करेंगे।

इससे पहले, ट्रंप ने अप्रैल की शुरुआत में टिकटॉक को 75 और दिन चलाने की अनुमति दी थी। इस आदेश पर हस्ताक्षर करने के बाद टिकटॉक को अमेरिकी कंपनी को बेचने का सौदा टल गया था। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा, राष्ट्रपति ट्रंप नहीं चाहते हैं कि टिकटॉक बंद हो जाए। यह विस्तार 90 दिनों तक चलेगा, जिसे प्रशासन यह सुनिश्चित करने के लिए काम करेगा कि यह सौदा बंद हो जाए ताकि अमेरिकी लोग इस आश्वासन के साथ ट्टद्बद्मञ्जश्य्य का उपयोग करना जारी रख सकें कि उनका डेटा सुरक्षित है।

कनाडा से वाशिंगटन लौटते वक्त पत्रकारों से की बात : ट्रंप ने जी7 शिखर सम्मेलन में भाग लेकर कनाडा से वाशिंगटन लौटते वक्त मंगलवार सुबह एयरफोर्स वन में पत्रकारों से बात की। इस दौरान उन्होंने कहा कि वह संभवतः समयसीमा को फिर से बढ़ा देंगे। ट्रंप ने यह भी कहा कि उन्हें भरोसा है कि चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग अंत में टिकटॉक को बेचने की मंजूरी दे देंगे। यह तीसरी बार होगा जब ट्रंप ने समय सीमा बढ़ाई है। पहली बार ट्रंप ने राष्ट्रपति बनने के बाद 20 जनवरी को एक कार्यकारी आदेश पर हस्ताक्षर किए थे, जिसके बाद टिकटॉक पर अमेरिका में प्रतिबंध लगा दिया गया था। दूसरी बार अप्रैल में समयसीमा

बढ़ाई गई, जब टिकटॉक को अमेरिकी कंपनी में बदलने की कोशिश हो रही थी, लेकिन ट्रंप की टैरिफ घोषणा के बाद चीन के पीछे हटने से यह सौदा टूट गया था। अमेरिका में टिक टॉक पर क्यों मंडरा रहा संकट टिक टॉक की मूल कंपनी बाइटडांस चीन की है और अमेरिका को आशंका है कि यह एप यूजर्स का डेटा चीन सरकार के साथ साझा कर सकता है। इसे राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा बताते हुए अमेरिका ने एक कानून पारित किया था, जिसके तहत बाइटडांस को ञ्जद्बद्मञ्जश्य्य का मालिकाना अधिकार किसी अमेरिकी कंपनी को सौंपना होगा या फिर देश में इसका संचालन बंद करना पड़ेगा। एफबीआई और फेडरल कम्युनिकेशंस कमीशन दोनों ने चेतावनी दी थी कि बाइटडांस उपयोगकर्ता डेटा, जैसे ब्राउजिंग हिस्ट्री, लोकेशन और बायोमेट्रिक जैसी जानकारियों को चीन की सत्तावादी सरकार के साथ साझा कर सकता है। टिकटॉक ने कहा कि उसने ऐसा कभी नहीं किया है और न ही ऐस करने का कोई उद्देश्य रखता है। टिकटॉक ने बताया कि अमेरिकी सरकार ने ऐसा होने का सबूत नहीं दिया है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपना कार्यकाल शुरू करते ही टिक टॉक को बैन से कुछ दिनों की राहत दी थी। टिक टॉक के लिए कौन-कौन हैं दावेदार टिक टॉक के अमेरिकी ऑपरेशन को खरीदने के लिए कई बड़ी कंपनियां मैदान में हैं। इसमें सबसे पहले टेक कंपनी ओरेकल है जिसके पास पहले से ही टिक टॉक ग्लोबल में 12.5प्रतिशत की हिस्सेदारी है और यह इसका क्लाउड टेक्नोलॉजी पार्टनर भी है। इससे अलावा इन्वेस्टमेंट फर्म ब्लैकस्टोन भी टिक टॉक को खरीदने में दिलचस्पी दिखा रही है। वहीं, एआई स्टार्टअप पर्प्लेक्सिटी एआई ने भी टिक टॉक के अमेरिकी कारोबार को अपने साथ मर्ज करने का प्रस्ताव दिया है।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी के निधन पर जताया दुःख

चंडीगढ़, 19 जून। हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी ने वीरवार को गुजरात के गांधीनगर पहुंचकर पूर्व मुख्यमंत्री श्री विजय रूपाणी के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया और परिवारजनों का ढांढस बंधाया। अपनी संवेदनाएं प्रकट करते हुए श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि श्री विजय रूपाणी जी का एक लंबा राजनीतिक सफर रहा है। उनका जीवन सादगी भरा रहा और वे सदैव जनसेवा के लिए समर्पित रहे।

हम लगातार संपर्क में थे, हमेशा एक- दूसरे से मिलते थे। उनके निधन से सिर्फ परिवार को ही नहीं, बल्कि गुजरात की जनता और पूरे देश में लोगों को गहरा सदमा पहुंचा है। मेरी भगवान से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें और अपने श्रीचरणों में स्थान दें। श्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि हाल ही में अहमदाबाद में हुआ विमान हादसा बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उन्होंने इस घटनाक्रम में सभी मृतकों को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए ईश्वर से परिजनों को दुःख सहन करने और दिवंगत आत्माओं को श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना भी की। इस मौके पर हरियाणा भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष श्री मोहन लाल कौशिक भी मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री धामी ने उच्चस्तरीय बैठक की

कौमी पत्रिका

देहरादून, 19 जून। मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी ने आगामी 24 जून को वाराणसी (बनारस) में केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में होने वाली मध्य क्षेत्रीय परिषद की 25वीं बैठक की तैयारियों के संबंध में गुरुवार को मुख्यमंत्री आवास में उच्चस्तरीय बैठक की । उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि इकोलॉजी और इकोनॉमी के समन्वय की भावना के अनुरूप ऐसे ठोस और नवाचारपरक प्रस्ताव तैयार किए जाएं जो प्रदेश के समग्र, सतत और संतुलित विकास को नई गति प्रदान कर सकें। बैठक के दौरान उन्होंने अधिकारियों को राज्य में बच्चों के पोषण, शारीरिक और मानसिक विकास पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री ने कहा कि बच्चों का भविष्य ही राज्य और देश का भविष्य है, अतः उनके समग्र विकास के लिए एक समेकित और लक्ष्य आधारित योजना बनाई जाए। उन्होंने आईसीडीएस (समेकित बाल विकास योजना), खाद्य सुरक्षा विभाग, स्वास्थ्य विभाग तथा खेल विभाग को आपसी समन्वय से कार्य करने को कहा, ताकि बच्चों को उचित पोषण, खेल गतिविधियाँ, स्वास्थ्य सेवाएं और मानसिक विकास के पर विशेष ध्यान दिया जा सके। मुख्यमंत्री ने सभी सरकारी अस्पतालों में आयुष्मान योजना के अंतर्गत अनिवार्य पंजीकरण सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य के प्रत्येक नागरिक को इस योजना का लाभ मिले, यह प्रशासन की प्राथमिकता होनी चाहिए। मुख्यमंत्री ने आपातकालीन स्थितियों में त्वरित सहायता के लिए 112 हेल्पलाइन नंबर का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश दिए, ताकि आम जनता

आवश्यक समय पर इस सुविधा का लाभ ले सके। मुख्यमंत्री ने महिला एवं बाल विकास विभाग को नियमित रूप से कुपोषण और एनीमिया के मामलों की समीक्षा करने तथा बच्चों की स्थिति में सुधार हेतु अभियान चलाने के निर्देश दिए। उन्होंने इस बात पर भी बल दिया कि जिलास्तर पर ऐसे प्रयासों की निगरानी और मूल्यांकन की व्यवस्था सशक्त की जाए। बैठक में प्रमुख सचिव श्री आर. के. सुधांशु, अपर पुलिस महानिदेशक श्री ए.पी. अंशुमन, सचिव श्री विनोद कुमार सुमन एवं महानिदेशक सूचना श्री बंशीधर तिवारी सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़, दुकानदार को गोली मारकर लूटा था कैश

नरवाना, 19 जून। नरवाना में शनिवार को पुलिस और बदमाशों के बीच हुई मुठभेड़ ने इलाके में सनसनी फैला दी। मुठभेड़ में तीन बदमाशों को गोली लगी है, जिन्हें पुलिस ने घायल अवस्था में गिरफ्तार कर नरवाना सिविल अस्पताल में भर्ती कराया है। यह मुठभेड़ दो दिन पहले हुई एक लूटपाट की वारदात से जुड़ी है, जिसमें एक नामी दुकानदार को गोली मारकर कैश से भरा बैग लूटा गया था। शुक्रवार की रात लगभग 8ः50 बजे नरवाना के धौला कुआं क्षेत्र में स्थित 100 साल पुरानी किराना दुकान सेठ प्रतापमल के मालिक सौरभ गर्ग अपनी दुकान बंद कर रहे थे। तभी स्कूटी पर सवार दो युवक वहां पहुंचे और अचानक उन पर फायरिंग कर दी। गोली लगने से सौरभ गर्ग घायल हो गया और बदमाश उनसे कैश से भरा बैग छीनकर मौके से फरार हो गए। बैग में लाखों रुपये की नकदी बताई जा रही है। घटना के बाद से ही नरवाना सीआईए पुलिस टीम बदमाशों की तलाश में जुट गई थी। शनिवार को पुलिस को गुप्त सूचना मिली कि आरोपी पास ही के इलाके में छिपे हुए हैं। जब पुलिस ने घेराबंदी की, तो बदमाशों ने फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने तीनों बदमाशों को गोली मारकर काबू किया। सभी के पांवों में गोली लगी है। घायल बदमाशों को तुरंत नरवाना सिविल अस्पताल लाया गया, जहां उनका इलाज पुलिस निगरानी में किया जा गया जिसके बाद तीनों बदमाशों को जींद रेफर कर दिया गया।

स्वच्छता पखवाड़े में निगम का सहयोग करने पर सामाजिक संस्थाओं को कमिश्नर ने प्रशस्ति प्रमाण पत्र देकर किया सम्मानित

कौमी पत्रिका

यमुनानगर। नगर निगम द्वारा एक जून से 21 जून तक चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़े में सहयोग करने पर नगर निगम आयुक्त अखिल पिलानी व उप निगम आयुक्त कुलदीप मलिक ने सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। ये सामाजिक संस्थाओं एक जून से नगर निगम के साथ मिलकर विभिन्न वार्डों में सफाई कर लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक कर रही है। संस्थाओं द्वारा नगर निगम के साथ लोगों को खुले में कचरा न डालने, सूखा व गीला कचरा अलग अलग करके निगम के वाहन को देने व प्रतिबंधित पॉलिथीन का इस्तेमाल न करने, घर से कपड़े का थैले लेकर बाजार जाने, नालों में कचरा न डालने के प्रति जागरूक किया गया। एक जून से चल रहे इस अभियान में निगम के साथ देने पर नगर निगम आयुक्त अखिल पिलानी ने स्नेह सेवा ट्रस्ट की राष्ट्रीय अध्यक्ष ममता सेन, सुदर्शन फाउंडेशन के अध्यक्ष संदीप बजाज, श्रीजी सेवा ट्रस्ट की अध्यक्ष नीरू चौहान, सचिव नीरज कालडा, आल इंडिया समाज सेवा केंद्र के अध्यक्ष मनमोहन सिंह, सृष्टि जन कल्याण समिति के अध्यक्ष मीनू चसवाल, नगर निगम की आईईसी एक्सपर्ट पूजा अग्रवाल आदि को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मुख्य सफाई निरीक्षक अनिल नैन ने बताया कि मेयर सुमन बहमनी व निगम आयुक्त अखिल पिलानी के निर्देशों पर नगर निगम द्वारा एक जून से स्वच्छता पखवाड़ा शुरू किया गया। जिसके तहत प्रत्येक वार्ड में सफाई अभियान चलाया जा रहा है। ऐसे स्थानों को साफ किया जा रहा है, जहां बहुत कम सफाई होती है या जहां बहुत अधिक गंदगी है। अभियान में लोगों को जागरूक भी किया जा रहा है। इस अभियान के तहत निगम कर्मियों के साथ कई संस्थाओं के पदाधिकारियों ने भी सफाई की और लोगों को जागरूक किया। अब इन संस्थाओं के पदाधिकारियों को नगर निगम आयुक्त अखिल पिलानी द्वारा सम्मानित किया गया। सभी शहरवासी इस अभियान में सहयोग करें। ऐसे स्थानों की सफाई कराए, जहां सफाई कम होती है और गंदगी पड़ी हुई है। उन्होंने लोगों से अपील की कि पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए अधिक से अधिक पौधारोपण करें। ताकि हमारा शहर साफ, स्वच्छ व सुंदर बन सकें। बता दें कि स्वच्छता पखवाड़ा के तहत वार्ड एक से सात तक मुख्य सफाई निरीक्षक हरजीत सिंह, वार्ड आठ से 15 तक मुख्य सफाई निरीक्षक विनोद बेनीवाल और वार्ड 16 से 22 तक मुख्य सफाई निरीक्षक अनिल नैन के नेतृत्व में अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा रहा है। लोगों को पॉलिथीन का इस्तेमाल न करने, खुले में कचरा न डालने, निगम के वाहनों में ही कचरा डालने के प्रति जागरूक किया जा रहा है। इसके अलावा घर से निकलने वाले पुराने सामान को खुले में न फेंक कर ट्रिपल आर (रिसाइकल, रीयूज व रिड्यूस) केंद्र पर देने के लिए समझाया जा रहा है। अभियान के तहत लोगों को पॉलिथीन त्याग कपड़े के थैलों का इस्तेमाल करने के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

अरावली में प्रस्तावित जंगल सफारी से हरियाणा बनेगा ईको-टूरिज्म का नया केंद्र

चंडीगढ़, 19 जून। हरियाणा के पर्यावरण, वन एवं वन्य जीव मंत्री राव नरबीर सिंह ने जानकारी दी है कि हरियाणा सरकार द्वारा अरावली क्षेत्र में एक महत्वाकांक्षी जंगल सफारी परियोजना और अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट की रूपरेखा तैयार की गई है। इस परियोजना का उद्देश्य न केवल इको-टूरिज्म को बढ़ावा देना है, बल्कि जैव विविधता, वन्य जीव संरक्षण और स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करना भी है। अरावली ग्रीन वॉल- चार राज्यों में फैला पर्यावरणीय प्रयास उन्होंने बताया कि अरावली भारत की सबसे प्राचीन पर्वत श्रृंखला है, जो हरियाणा, राजस्थान, गुजरात और दिल्ली सहित चार राज्यों में फैली हुई है, और 1.15 मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र को कवर करती है। केंद्र सरकार ने हरियाणा को 'अरावली ग्रीन वॉल प्रोजेक्ट' और 'जंगल सफारी' का दायित्व सौंपा है, जो पर्यावरणीय दृष्टिकोण से एक मील का पत्थर साबित होगा। श्री राव नरबीर सिंह ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण के दौर में पर्यावरण संरक्षण एक वैश्विक चिंता बन गया है। उन्होंने कहा, प्रकृति और वन्यजीवों के प्रति संवेदनशील होकर ही हम पर्यावरण संतुलन बनाए रख सकते हैं। आज कई युवा स्टार्टअप्स और निजी संस्थाएं भी वन्यजीव संरक्षण में भागीदारी कर रही हैं, जो सरकारी प्रयासों को मजबूत बना रही हैं। मंत्री ने बताया कि यह परियोजना पहले पर्यटन विभाग के अधीन थी, पर अब मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी के निर्देश अनुसार इसकी जिम्मेदारी वन विभाग को दी गई है। वे स्वयं नागपुर की गोरेवाड़ा सफारी और गुजरात की वनतारा परियोजना का दौरा कर चुके हैं। हरियाणा सरकार का लक्ष्य है कि इस मेगा प्रोजेक्ट का शुभारंभ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कर कमलों से कराया जाए। अरावली ग्रीन वॉल परियोजना के माध्यम से स्वदेशी प्रजातियों का वनरोपण, मृदा स्वास्थ्य में सुधार, भूजल पुनर्भरण और जैव विविधता को संरक्षित किया जाएगा।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर वृहद पौधरोपण कराएगी योगी सरकार

कौमी पत्रिका

लखनऊ, 19 जून: योगी सरकार भावी पीढ़ी को एक तरफ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के कृतित्व-व्यक्तित्व से परिचित करा रही है तो वहीं दूसरी तरफ उनके बलिदान दिवस पर पौधरोपण कर पर्यावरण संरक्षण का भी संदेश देगी। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने वन विभाग को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस (23 जून) पर पूरे प्रदेश में वृहद पौधरोपण कराने का निर्देश दिया है। इसमें जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों-परिवारजनों की सहभागिता भी सुनिश्चित करने पर जोर दिया गया है। योगी सरकार के निर्देश पर पूरे प्रदेश में भव्य पौधरोपण किया जाएगा। प्रधान मुख्य वन संरक्षक व विभागाध्यक्ष सुनील चौधरी ने सभी प्रभागों को निर्देशित किया है कि 23 जून को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर प्रत्येक जनपद में वृहद स्तर पर पौधरोपण किया जाएगा। सभी प्रभागों द्वारा चयनित स्थल की जानकारी से आमजन को अवगत कराया जाए। चयनित स्थल पर स्थायी बोर्ड की स्थापना कर उसमें %डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस दिनांक- 25 जून 2025 पर वृक्षारोपण% भी हर हाल में अंकित हो। हर प्रभाग द्वारा रोपित किए गए पौधों

व स्थलों की जानकारी से मुख्यालय को अवगत कराया जाएगा। श्री चौधरी ने सभी मंडलीय- जोनल वन संरक्षकों, प्रभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि सोमवार को होने वाले इस वृहद पौधरोपण कार्यक्रम की तैयारी समय से पूरी कर लें। पौधरोपण अभियान में जनप्रतिनिधियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, सामाजिक संस्थाओं, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों व उनके परिवारजनों की सहभागिता सुनिश्चित हो।

NAME CHANGE
I, KAILASH S/O SUNDA RAM R/O J-793, BLOCK-J, JAHANGIR PURI, BHALASWA, N. S. MANDI, NORTH WEST DELHI, DELHI-110033 have changed my name to KAILASH CHAND BAGORIYA for all future purpose.

NAME CHANGE
I, DEEPIKA / DIPIKA W/O GULSHAN KUMAR GOSWAMI R/O 362/12, GALI NO-9, OPP -7 EXTN, KRISHNA COLONY, GURGAON, HARYANA-122001 HAVE CHANGED MY NAME FROM DEEPIKA /DIPIKA TO DIPIKA GOSWAMI FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE
I, RAJ KISHOR KUMAR S/o BHOLA SINGH and his wife ANJANI SINGH R/o H- 959, Mangolpuri, North West Delhi, Delhi – 110083 have changed the name of my minor Daughter namely ARUSHI alias ARUSHI KUMARI aged 17 years and She shall hereafter be known as ARUSHI KUMARI.

NAME CHANGE
I, Sarika Wife of Sh. Kuldeep Girsa presently residing at House no WZ-69, Nangli Jalib, Janakpuri, New Delhi - 110058 have changed my name from Sarika to Sarika Girsa for all future purposes vide affdavit dated 19.06.2025 before Notary Public, Delhi

NAME CHANGE
I hitherto known as SURENDAR SINGH BISHT alias SURENDRA SINGH BISHT S/o BHAWAN SINGH BISHT, permanent R/o Ashutosh Nagar, Badowala, Prem Nagar, Dehradun, Uttarakhand-248007, and currently residing at Qtr.No. 197/11, WAC Qtr., Subroto Park, New Delhi-110010, have changed my name and shall hereafter be known as SURENDRA SINGH BISHT.

PUBLIC NOTICE
I, PARVINDER SINGH, S/O Hardev Singh, permanent residing at 14, 3rd Main Road, Opp Chitlapakkam Lake, Chitlapakkam, Chengalpattu, Tamil Nadu-600064, Presently House No.154/9, Flat 2 No. C-2, Third Floor, Kishangarh, Vasant Kunj, Near Apex Tower Road, New Delhi-110070, do hereby solemnly affirm and declare that I have embraced BUDDHISM relision and renounce HINDUISM relision w.e.f.19.06.2025

सार्वजनिक सूचना
मेरे मुवक्किल श्री मनोज कुशवाह पुत्र ठाकुर दास और उनकी पत्नी श्रीमती शीला पत्नी मनोज कुशवाह, प्लॉट नं. 133 गली नं. 3, कोटला विहार फेज - 4, बक्कर वाला, पश्चिमी दिल्ली, 110041 में रहते हैं।, अपने बेटे, अभिषेक को अपनी तमाम चल अचल सम्पत्ति से बेदखल कर समस्त संबंध विच्छेद कर लिये है। उसके द्वारा किये गये किसी कार्य के लिये मेरे मुवक्किल या उसके परिवार के अन्य लोग जिम्मेदार नहीं होंगे।
प्रतीक भारद्वाज अधिवक्ता
चैम्बर नंबर 425, अधिवक्ता चैंबर सेक्टर-10, द्वारका नई दिल्ली 110075

NAME CHANGE
I, hitherto known as SUNDAR DEVI W/O MAHAVIR SAH R/O H NO-26 B, GALI NO-3, DEEP ENCLAVE, VIKAS NAGAR, UTTAM NAGAR, DELHI-110059 have changed my name and shall hereafter be known as BINMLA DEVI. It is certified that I have complied with other legal requirements in the connection

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, MD AMJAD son of Shri MD SAMMI, residing at S-17, Nafees Road, Joga Bai Extn., Jamia Nagar Okhla, South Delhi, Delhi-110025, declare that name of mine has been wrongly written as MOHD AMJAD in my minor son KHALID AMJAD aged 16 years in his 10th Class Educational Documents. The actual name of mine is MD AMJAD, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
I, VIRENDRA SINGH S/O JAYPRAKASH SINGH, permanent R/o Ward No 03 Maha Rana Pratap Colony, Near Afzalgarh Bus Stand, Jaspur, Moh- Gujratiyan, Jaspur, Jaspur Khurd, Udham Singh Nagar Uttarakhand-244712, present R/o Quarter No.406(Type-II), Tower-15, Sarojini Nagar, Distt - South West Delhi, New Delhi - 110023 have changed the name of my minor son RIYANSH AARYA alias RIYANSH RAJPUT aged 11 Years and he shall hereafter be known as RIYANSH RAJPUT.

NAME CHANGE
I,Preeti Singh W/O: Sumit Singh,R/O S-35 Hargovind Enclave, Near Gurudwara Rajpur Khurd, Raj Pur Khurd, South Delhi, Delhi - 110068, have changed the name of my minor son Samuel Sumit Singh aged 8 years and he shall hereafter be known as ANIRUDH SINGH.

PUBLIC NOTICE
My clients UMESH KUMAR S/O SHRI HARI NANDAN PANDIT R/O C-603,SANGAM VIHAR, NEW DELHI-110080 has disowned/ debarred their daughter ARCHANA and son RAHUL PANDIT his wife DIVYA, PRABHAT KUMAR PANDIT his wife SONI from all his severed all her moveable/immovable properties/assets and relations with him due to his misbehavior/misconduct towards my client. If anybody dealing with them in any manner will do so at his/her/their own risk and responsibility. My client shall not responsible for any kind of acts done by his daughter and sons.
Mohd Tahir Qidwai Advocate
CH.NO.888, LAWYERS BLOCK SAKET COURT, NEW DELHI-17

NAME CHANGE
I hitherto known as GAURAV NIGAM alias NAKSHATRA NIGAM son of DEVKARAN NIGAM, R/o H.No. 117-A, Tarkol Factory, Meethapur Village, Jait Pur, PO: Jaitpur, Dist.: South Delhi, Delhi-110044, have changed my name and shall hereafter be known as NAKSHATRA NIGAM.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I Madhu W/O Kamal Kishore, R/O D-1035-36 J.J.COLONY, NANGLOI, Tikri Kalan, West Delhi, Delhi, 110041,declare that name of mine has been wrongly written as Rati Kishore in my son Late Ashish Kishore death certificate no MCDOLIR 0220-004996373. The actual name of mine is Madhu respectively which may be amended.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Hanish Sharma S/O Madan Mohan Sharma R/O 63- E Khasra No 48/19,Gali No-18, Block P and T, Rajdhani Park Extn. Mundka , PO: Nangloi, Dist: West Delhi, Delhi - 110041, declare that name of my mother has been wrongly written as Seema Sharma in my 10th and 12th class educational documents. The actual name of my Mother is Simmi

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my client **Mr. Datta Shelake** is purchasing the Property No.C-257, (admeasuring 25 Sq. Yds.) & Property No.C-257/2 (admeasuring 25 Sq. Yds.), total land admeasuring 50 Sq. Yds., carved out of Khasra No.373, situated at Village Ghonda Gujran Khadar, in the abadi of C-Block, Gali No.13, Bhajanpura, Shahdara, Delhi-110053; from Mrs. Usha Devi & Mr. Ghanshyam Bhandari . Mrs. Uddha Devi was the owner of the 25 sq. yrds. of the property vide GPA, Agreement to Sale & WILL dated 18.04.2006 & Mr. Ghanshyam Bhandari is the owners of the 25 sq. yrds. of the property vide GPA, Agreement to Sale & WILL dated 10.09.2018. **Mr. Datta Shelake** Intend to mortgage the said property with **Truhome Finance Limited (Formerly known as Shriram Housing Finance Limited)** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.
Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony, New Delhi-110048, Contact no.- 49774545

NAME CHANGE
It is for general information that I, SANDEEP KUMAR SHARMA S/O KRISHAN PAL SHARMA R/O 52, VRANDAVAN GARDEN EXTN, SAHIBABAD, GHAZIABAD, UTTAR PRADESH-201005 declare that name of mine has been wrongly written as SANDEEP KUMAR in my minor son DAKSH SHARMA aged 13 years in his school Records. And name of my minor son has been wrongly written as DAKSH KUMAR in my minor son DAKSH SHARMA aged 13 years in his Birth Certificate-GHANN2011-011855 The actual name of mine and my minor son are SANDEEP KUMAR SHARMA and DAKSH SHARMA, which may be amended accordingly.

PUBLIC NOTICE
It is for general information that I, Bhim Singh Bhandari S/o Fateh Singh Bhandari R/o 316, B-3A Block, Janakpuri, Janakpuri B-1, West Delhi, Delhi-110058 declare that name of mine and my father has been wrongly written as Bhim Singh and Fateh Singh in my Service Book. The actual name of mine and my father are Bhim Singh Bhandari and Fateh Singh Bhandari.

PUBLIC NOTICE
Information is given to general public at large that our client Mrs. Madhu Bala Sharma W/o Mr. Surender Kumar Sharma is the owner of Freehold Residential Roof of IInd Floor i.e. (with Roof/Terrace rights), Built on Property bearing no. 7/531 (Old no. 27/5/3-B/4-A), area admeasuring 60 sq. yds. (50.16 sq. mtrs.), out of Khasra no. 3162/717, situated at Village- Chandrawali alias Shahdara, Church Road, Jwala Nagar, Shahdara, Delhi, 110032. by virtue of Regd. GPA (as Document no. 150) along with ATS & Will dated 09.03.2017., in the chain Documents below mentioned documents not available i.e. Death Certificate & SMC of Late Mrs. Madhubala Sharma W/o Mr. Surender Kumar Sharma now our client is declaring that that any other person does not have any right over the said property, and same property sold too be Mr. Yash Kashyap & Mrs. Rakhi and same has been financed by SMFG India Home Finance Company Limited Branch: Ghaziabad Uttar Pradesh. If any person(s) have any objection(s) or claim(s) with respect to the` right, title or interest in the Said Property then contact us within 07 days from the date of Publication of this notice and or the same to the undersigned if found by anyone. Thereafter no claim shall be entertained
[NAVEEN KUMAR VERMA]
Advocate
F-211,sector-3 Vaishali Ghaziabad Uttar Pradesh-201010, Contact at 09958871432

उत्तर रेलवे
ई-निविदा सूचना
निविदा सं. 46255137 के लिए भारत के राष्ट्रपति की ओर से एवं उनके लिए कार्यरत वरिष्ठ सामग्री प्रबंधक द्वारा ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। विवरण इस प्रकार हैः-

1.	कार्य का नाम : SUPPLY OF Traction Converter for Medha Make Three Phase AC EMU Motor Coach type MAE675V2 as per Medha Part No SP675101002.
2.	कार्य की अनुमानित लागत : रु. 1,46,34,360/-
3.	मात्रा : 01 Nos
4.	निविदा की बोली प्रस्तुत (जमा) करने की तिथि एवं समय : 17.07.2025 (11:00 Hrs.)
5.	निविदा दस्तावेजों को खोलने की तिथि एवं समय : 17.07.2025 (11:00 Hrs.)
6.	वेबसाइट की विवरण, जहां निविदा दस्तावेजों का पूरा विवरण देखा जा सकता है: www.ireps.gov.in

टिप्पणी:- i. ई-निविदा प्रणाली में शामिल होने के लिए निविदादाता को भारतीय रेल ई-प्रापण प्रणाली (IREPS) साइट अर्थात् www.ireps.gov.in पर पंजीकृत होना चाहिए। ii. सभी नियमों एवं शर्तों के लिए कृपया निविदा दस्तावेज देखें। iii. कोई भी मैनअुल प्रस्ताव स्वीकार्य नहीं हैं।
एनआईटी सं.: 46255137 दिनांक: 18.06.2025 1835/2025
ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

NAME CHANGE
I hitherto known as RAKESH KUMAR alias RAJKUMAR son of LAL DIWAN, R/o 51, Block-A, Main Gopal Nagar, Najafgarh, South West Delhi, Delhi-110043, have changed my name and shall hereafter be known as RAJKUMAR.

PUBLIC NOTICE
I, SAKSHI CHAUHAN D/o UMED SINGH CHAUHAN R/o 1810, Janta Flats, G.T.B. Enclave, Mandoli, North East Delhi, Delhi-110093 has embraced Sikhisam and renounced Hinduism on 13.12.2023. In future my name will be considered as HARGUNPREET KAUR and not SAKSHI CHAUHAN.

PUBLIC NOTICE
My clients NIZAM MALIK S/O SHRI KAMRUDDIN MALIK and HIS WIFE SAYRA MALIK BOTH R/O TA-308, GALI NO.5, TUGHLAKABAD EXTN., NEW DELHI -110019 has disowned/debarred their son SAMEER MALIK from all their moveable/ immovable properties/ assets and severed all their relations with him due to his misbehavior/misconduct towards my clients. If anybody dealing with him in any manner will do so at his/her/their own risk and responsibility. My clients shall not responsible for any kind of acts done by his son.
Mohd Tahir Qidwai Advocate
CH.NO.888, LAWYERS BLOCK SAKET COURT, NEW DELHI-17

NAME CHANGE
I, hitherto known as SAMIRAN MAITY alias SAMIR M S/O NANDA KUMAR MAITY R/O 368, AMBEDKAR MARG, MANDAWALI, MANDAWALI FAZALPUR, LAXMI NAGAR, EAST DELHI, DELHI-110092 have changed my name and shall hereafter be known as ST SAMER MAITY.

NAME CHANGE
I,Preeti Singh W/O: Sumit Singh,R/O S-35 Hargovind Enclave, Near Gurudwara Rajpur Khurd, Raj Pur Khurd, South Delhi, Delhi - 110068, have changed the name of my minor son Immanuel Sumit Singh aged 9 years and he shall hereafter be known as AMRENDRA SINGH.

PUBLIC NOTICE
NOTICE is hereby given to public at large that my client **Phaimida** is the owner of the Residential Plot area measuring 50 Sq.Yds , Khasra no. 453, Village Jalpura, Pargana and Tehsil Dadri, Distt. Gautambudh Nagar , U.P vide Sale Deed dated 11.04.2025 registered as doc No. 19609 registered in SRO Dadri and Intend to mortgage the said property with **Piramal Capital & Housing Finance Limited.** If any person(s) has/have any objection(s) or claim(s) with respect to the right, title or interest in the said property may please contact us within 07 days from the date of this notice on the number & address mentioned herein below, failing which my client(s) shall not be held responsible in any manner whatsoever.
Khaitan & Khaitan
A-38 Kailash Colony, New Delhi-110048, Contact no.- 49774545

NAME CHANGE
I, MOHD NIHAL S/o MOHD JAINUL, R/o WZ – 653/A, Gali No. 2, 2nd Floor, Sri Nagar, Shakurbasti Rs, North West Delhi, Delhi - 110034 have changed the name of my minor son MOHD TAUSHIF aged 17 years and he shall hereafter be known as TOSIFF

PUBLIC NOTICE
Notice is hereby given to the General Public on behalf of our client (SMFG India Credit Co. Ltd.) that Mr. Jitender Bhardwaj is claiming to be the owner of Property bearing No. 668/1, area measuring 22 sq. yds., comprised in Khasra No. 741/496, situated at Chirag Delhi, New Delhi-110017, vide Sale Deed dated 11.02.2022, same was duly registered with SRO V A Hauz Khas, as Document No. 586, Book No. 1, Volume No. 4382, on Pages 1-13, on 11.02.2022, executed by Mr. Akhilesh Bhardwaj. All persons are hereby informed that above owner want to mortgage the said property and intends to obtain a loan from our client (SMFG India Credit Co. Ltd.) against the said property, if anybody has any objection/s upon the ownership of above owners over the said property, its mortgage/litigation, and any other objections, kindly inform the undersigned in writing on the below mentioned address within 07 days of the present.
For Kumar & Associates
Advocates & Consultants)
200, Second Floors, Shivaji Marg, Moti Nagar, New Delhi-15
legal@knalegal.com
011-41112527-28

Delhi Branch
BOMBAY MERCANTILE COOPERATIVE BANK LTD. (SCHEDULED BANK)
36, NETAJI SUBHASH MARG, DARYA GANJ, NEW DELHI-110002 PH:23273786, 23266869, 47199100, FAX: 2325979

PUBLIC NOTICE FOR SALE
The undersigned being the Authorised Officer of Bombay Mercantile Co-operative Bank Ltd., Under Securitisation & Reconstruction of Financial Assets & Enforcement of Security Interest Act, 2002 respect of immoveable properties which will be sold by public auction on **"AS IS WHERE IS AND WHAT IS"** basis invites sealed Bids/Tenders from interested parties for purchasing the following secured assets under provisions of Securitisation & Reconstruction of Financial Assets & Enforcement of Security Interest Act, 2002 and rules made there under.

DETAILS OF PROPERTIES
1. Name of the Borrower : **Mr. Aamir Khan S/o Mr. Parvej Khan**
2. Secured Debt to be : Rs.14,18,017.20 as on 21.05.2025 and further interest recovered thereon till realization

S. No	Name of the Borrower Description of the Property :	Area	Reserve Price
1.	Property Flat No. 408 on 3rd Floor out of Four storied Residential Building built up on part of Property Khasra No. 3682 Min., situated at Village - Pasonda, District - Ghaziabad (Uttar Pradesh)	41.88 Sq.yds	Rs.14,00,000/-

3. The sealed Bids/ Tenders shall be accepted with **EARNEST MONEY** 10% of Reserve Price with application each proposed property by way of Demand Draft /Payorder in favour of the **Authorised Officer, Bombay Mercantile Cooperative Bank Ltd.,** payable at Delhi. The bids/ tenders without Earnest Money shall not be entertained.
4. The inspection of the property/plot will be made available on **15.07.2025** from 11.00 A.M. to 4.00 P.M.
5. The submission of Bids/Tenders/Offers shall be received by Authorized Officer/ Branch Manager in a sealed envelope/cover alongwith Demand Draft/ Payorder for the Earnest Money favouring **"Authorised Officer, Bombay Mercantile Cooperative Bank Ltd."** Payable at Delhi on or before 21.07.2025 at the bank premises at 36, Netaji Subhash Marg, Daryaganj, New Delhi.
6. The Tenders received from bidders will be opened at 11.00 a.m. on **22.07.2025** at the bank premises 36, Netaji Subhash Marg, Daryaganj, New Delhi 110 002. Thereafter an auction shall be held and Bidders shall be allowed to improve their offer.
7. The bidders shall have to bear Stamp Duty, Transfer Charges, Electricity dues, Water dues, Cess, Society dues, all other Government dues and taxes if any & all other incidental cost, charges including all taxes and taxes and rates and outgoings relating to the property.
8. The successful bidders shall be required to pay immediately an amount equal to 25% of the bid amount (including Earnest Money Deposit already paid) of the Secured Assets in respect of immoveable property he has submitted in his bid. The balance amount shall be deposited within 15 days from the date of letter of acceptance of the tender. On default in the payment of such deposit the previous deposit would stand forfeited and Authorised Officer may put up again the Secured Assets for sale/resale at its discretion.
9. The Authorised Officer is not bound to accept the highest offer or any or all offer and reserve the right to accept or reject any or all the tender's without assigning any reason whatsoever thereof or postpone the date & Time of opening the tenders of sale confirmation. In case all the tenders are rejected, Authorised Officer can negotiate with any of the tenders or other parties for sale of the secured assets in private treaty.
10. The interested parties may contact for further details to the undersigned or Branch Manager at Bombay Mercantile Cooperative Bank Ltd., 36, Netaji Subhash Marg, Daryaganj, New Delhi 110 002 Telephone No. 011-**23259794 and 23242439, 9013007125**

Place : Delhi
Date : 20.06.2025
(Aziz Ur Rehman Khan)
AUTHORIZED OFFICER/BRANCH MANAGER

NAME CHANGE
I, BADRI RAM Father of No. 15704392P, Rank-HAV Name-SURINDER KUMAR Residing at-VILLAGE-GHAROTA, PO-GHAROTA, P.S-GHAROTA, TEH – BHALWAL, DISTT-JAMMU, JAMMU AND KASHMIR-181122, have changed my name from BADRI RAM to BADRI NATH for all future purposes vide Affidavit Dated 19/06/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, RAKHI DEVI wife of 4291939K, Rank-SEP Name-RAUSHAN KUMAR JHA residing at VILL-BAHERA, PO-BAHERA, DISTT-DARBHANGA, BIHAR-847201, have changed my name from RAKHI DEVI to RAKHI KUMARI for all future purposes vide Affidavit dated 19/06/2025 before Notary Public, Delhi

NAME CHANGE
I, No-16123848W Rank-NK Name-THIRUNAVUKARASU R Residing at 64/2, ARASAMARA STREET, VILL-CHENRAYANKOTTAI, PO-ONGAPADI, TEHSIL-ANAICUT, DISTT-VELLORE, TAMIL NADU-632101, have changed my mother's name from RAJESHWARI R to RAJESWARI R for all future purposes and in my service records my mother's date of birth wrongly mentioned as 22/03/1975 instead of her correct date of birth as 10/09/1972 vide Affidavit dated 19/06/2025 before Notary Public, Delhi.

NAME CHANGE
I, NO-15790868X Rank-HAV/DMT Name-KUTE SANDIP DASHARATH residing at VILL-CHANDOLI (DATTNAGAR), PO-RAJGURUNAGAR, TEHSIL- RAJGURUNAGAR, DIST-PUNE, MAHARASHTRA-410505, have changed my wife's name from PRIYANKA to PRIYANKA SANDIP KUTE for all future purposes vide Affidavit dated 19/06/2025 before Notary Public Delhi.

NAME CHANGE
I, YASH PAL S/O SHYAM LAL R/O T1-1202, Btech PARK,WIEW DELIGHT APARTMENTS, DHARUHERA, REWARI, HARYANA-123106 HAVE CHANGED MY NAME TO YASHPAL ARORA FOR ALL FUTURE PURPOSES

NAME CHANGE
It is for general information that I MO. IQTIDAR SHARIQ ALI S/O MO. ABBAS ALI R/O AL AMIN MANZIL BEHIND, BULANDSHAHAR ROAD, JILA HAPUR, TEHSIL HAPUR, UTTAR PRADESH-245101, declare that name of my wife has been wrongly written as SHAHISTA in my minor son namely AYAAN AMIN aged 13 years in his school record. The actual name of my wife is ANJUM which may be amended accordingly.

कौमी पत्रिका
संपादक-गुरचरन सिंह बब्बर
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक, गुरचरन सिंह बब्बर ने कौमी पत्रिका प्रिंटिंग प्रेस, सेक्टर ए-4/ए-144 इंडस्ट्रीयल एरिया ट्रोनिका सिटी लोनी (गाजियाबाद), उत्तर प्रदेश से छापकर प्रकाशित किया।
Corporate Office:
5, Bahadurshah Zafar Marg ITO, New Delhi-110002
फोन : 011-41509689, 23315814
मोबाइल नंबर : 9312262300
E - mail address : qpatrika@gmail.com
Website: www.qaumipatrika.in
R.N.I. No. UP-HIN/2007/21472
Legal Advisors:
Advocate Mohd. Sajid
Advocate Dr. A.P.Singh
Advocate Manish Sharma
Advocate Pooja Bhaskar Sharma

छात्रावास का ताला तोड़कर परीक्षाओं में बच्चों को खिलाया खाना

जींद। किसान छात्र एकता संगठन ने चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में छात्रावास का ताला तोड़कर बच्चों को खाना खिलाया गया। कार्यकारिणी प्रधान गोविंद सैनी ने बुधवार को कहा कि परीक्षाओं के दौरान किसी भी बच्चे को भूख नहीं रहने दिया जाएगा और किसी भी बच्चे को परीक्षाओं के समय परेशानी नहीं होने दी जाएगी। अगर महिला छात्रावास में भी छात्राओं को खाने की आवश्यकता हुई तो गोल चक्कर तक खाना पहुंचाने की व्यवस्था संगठन द्वारा की जाएगी। गौरतलब है कि मंगलवार को किसान छात्र एकता संगठन कार्यकर्ताओं ने चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में कुलपति प्रो. रामपाल सैनी से मुलाकात की और छात्रों को आ रही समस्याओं को लेकर ज्ञापन सौंपा था ज्ञापन के माध्यम से कार्यकारिणी प्रधान गोविंद सैनी ने बताया कि चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में परीक्षाओं के दौरान विद्यार्थियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।विश्वविद्यालय में परीक्षाओं के दौरान छात्रावास में विद्यार्थियों के लिए खाने की कोई सुविधा नहीं है।

हिसार में नकली देसी घी की फैक्ट्री पकड़ी, सीएम फ्लाइंग का छापा

हिसार। सीएम फ्लाइंग और खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने हांसी में बड़ी कार्रवाई करते हुए नगर परिषद कार्यालय के पीछे चल रही नकली देसी घी बनाने की फैक्ट्री का भंडाफोड़ किया गया। सीएम फ्लाइंग और खाद्य सुरक्षा विभाग की संयुक्त टीम की संयुक्त छापेमारी में सैकड़ों लीटर नकली घी और नामी कंपनियों के नाम के टीन और डिब्बे बरामद किए गए। कार्रवाई का नेतृत्व सीएम फ्लाइंग हिसार की इंचार्ज उप निरीक्षक सुनैना रानी ने व खाद्य सुरक्षा अधिकारी पवन चहल ने किया। इस कार्रवाई के दौरान टीम के साथ पुलिस बल मौजूद रहा। मौके से नकली घी तैयार करने के लिए उपयोग में लाई जा रही सामग्री, रसायनिक पदार्थ, खाली डिब्बे और तैयार पैकिंग तथा फैक्ट्री में तैयार घी जब्त कर अपने कब्जे में ले लिया। खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा की गई जांच में पता चला है कि यह नकली घी बाजार में ब्रांडेड कंपनियों के नाम से बेचा जा रहा था, जिससे लोगों के स्वास्थ्य पर गंभीर खतरा उत्पन्न हो सकता था। फूड सेफ्टी अधिकारी डॉ पवन चहल ने बताया की मौके पर मिले घी के सैंपल लेकर जांच हेतु पंचकूला लैब भेजे गए हैं। रिपोर्ट आने के बाद ही आरोपियों के खिलाफ खाद्य अधिनियम के तहत कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने बताया कि घी बनाने की फैक्ट्री के पास स्थित गोदाम का ताला खुलते ही सीएम फ्लाइंग भी हैरान रह गई।

पलवल में परिचालक से मारपीट के विरोध में रोडवेज कर्मियों ने किया प्रदर्शन

पलवल। फतेहाबाद डिपो के परिचालक कृष्ण कुंडु के साथ मारपीट की घटना के विरोध में पलवल डिपो पर हरियाणा रोडवेज कर्मचारियों ने जोरदार प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन हरियाणा रोडवेज कर्मचारी सांझा मोर्चा के सदस्य गंगाराम सौरोत के नेतृत्व में किया गया। घटना 16 जून की बताई जा रही है जब हरिद्वार से फतेहाबाद जा रही एक रोडवेज बस हिसार बस अड्डे पर पहुंची। वहां से कुछ युवक बस में सवार हुए। कंडक्टर कृष्ण कुंडु ने जब यात्रियों से टिकट लेने को कहा तो एक युवक ने टिकट लेने से मना कर दिया और ढंढूर में उतरने की बात कही। कंडक्टर ने बताया कि यह बस लंबे रूट की है और ढंढूर में स्टॉप नहीं है। इस पर युवक ने अपने 10-15 साथियों को बुलाकर कंडक्टर पर हमला कर दिया। हमले में कंडक्टर को गंभीर चोटें आईं और उन्हें इलाज के लिए अग्रोहा मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। घटना के बाद कर्मचारियों में भारी आक्रोश है। रोडवेज कर्मियों का कहना है कि पुलिस प्रशासन की ओर से अब तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है। इसी के चलते फतेहाबाद डिपो और टोहाना सब डिपो के कर्मचारियों ने कार्य बहिष्कार कर हड़ताल की घोषणा की है। प्रदर्शनकारियों ने कहा कि यह पहली घटना नहीं है।

स्वास्थ्य मंत्री ने तीन जिलों के सीएमओ के साथ समीक्षा बैठक की

चंडीगढ। हरियाणा की स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री कुमारी आरती सिंह राव ने चंडीगढ़ में स्वास्थ्य सेवा महानिदेशक (डीजीएचएस) के अलावा झज्जर, गुरुग्राम और सोनीपत के मुख्य चिकित्सा अधिकारियों (सीएमओ) के साथ समीक्षा बैठक की। बैठक में स्वास्थ्य सेवाओं और योजनाओं के क्रियान्वयन के विस्तृत आकलन के साथ-साथ तीनों जिलों में संसाधनों की उपलब्धता पर ध्यान केंद्रित किया गया। स्वास्थ्य मंत्री ने जमीनी स्तर पर मौजूदा चुनौतियों पर चर्चा की और स्वास्थ्य सेवा वितरण में सुधार के लिए चल रहे प्रयासों की समीक्षा की। बैठक में मंत्री कुमारी आरती सिंह राव ने सेवा वितरण में संवेदनशीलता और जवाबदेही के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने सभी अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया कि स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ, उत्तरदायी और रोगी-केंद्रित हों, खासकर वंचित और दूरदराज की आबादी के लिए आसानी से मिलनी चाहिए। मंत्री राव ने कहा कि स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता प्रत्येक नागरिक की भलाई के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रत्येक सुविधा कुशलतापूर्वक काम करे और प्रत्येक योजना अपने इच्छित लाभार्थी तक पहुंचे। स्वास्थ्य मंत्री ने अधिकारियों को बजटीय प्रावधानों, जनशक्ति आवश्यकताओं और बुनियादी ढांचे के उन्नयन के मामले में राज्य सरकार से पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

कुरुक्षेत्र को वैश्विक पहचान बनाने की तैयारी

नगर में महाभारत थीम पर बनेंगे गेट व चौक व चलेंगी इलेक्ट्रिक बसें

एजेंसी

चंडीगढ़। धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाने के लिए कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड ने कई अहम फैसले लिए हैं। आज को बोर्ड की बैठक में नगर में विभिन्न स्थानों पर महाभारत थीम पर गेट व चौक बनाने पर सहमत बनी है। साथ ही ज्योतिसर सुदर्शन चक्र को नए सिरे से बनाने और भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमालगाने का निर्णय लिया गया है। चंडीगढ़ में कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की 82वीं बैठक बोर्ड अध्यक्ष व राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय की अध्यक्षता में हुई। इसमें बोर्ड उपाध्यक्ष व हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के अलावा कैबिनेट मंत्री विपुल गोयल भी शामिल हुए। बैठक में राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि देशभर में कुरुक्षेत्र की विस्तृत पहचान बने, इसके लिए सभी को मिलजुल कर प्रयास करने होंगे। उन्होंने सुझाव

दिया कि 48 कोस के अंतर्गत आने वाले तीर्थ स्थलों को लेकर साल में कम से कम 48 उत्सव इन गांवों में मनाने चाहिए। इसमें जनप्रतिनिधियों की भागीदारी के साथ तीर्थ स्थलों के गांवों की सहभागिता भी जोड़ी जाए।मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने बताया कि बैठक में धर्मनगरी कुरुक्षेत्र के समग्र विकास को लेकर कई पहलुओं पर चर्चा हुई है। कुरुक्षेत्र में चौक और प्रवेश द्वार को चिन्हित करने के निर्देश भी दिए है। इन्हें महाभारत की थीम के आधार पर बनाया जाएगा। ज्योतिसर की तरफ से आने वाले रास्ते पर लगे सुदर्शन चक्र को भी दोबारा बनाया जाएगा। जिसमें लाइटिंग करने के साथ साथ भगवान श्रीकृष्ण की प्रतिमा भी स्थापित होगी। साथ ही बैठक में ब्रह्मसरोवर के प्रवेश द्वार के नाम भी तय करने बारे चर्चा हुई। ज्योतिसर तीर्थ परिसर के आसपास ग्रीनरी की व्यवस्था करने के भी संबंधित विभाग को निर्देश दिए गए है। इसके अलावा पूरे शहर के पेंटिंग और रेलवे ब्रिज के नजदीक भी श्लोक इत्यादि लिखने बारे भी बैठक में चर्चा हुई है। कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड की बैठक में निर्णय हुआ है कि कुरुक्षेत्र में इलेक्ट्रिक बस चलाई जाएंगी। इन बसों को 48 कोस के अंतर्गत आने वाले तीर्थों के साथ कनेक्ट किया जाएगा। बसों के अंदर रूट मैप भी लगाया जाएगा। साथ ही डेली वेज पास की व्यवस्था भी रहेगी। बैठक में मौजूद अधिकारियों को निर्देश दिए गए है कि डेलीवेज पास ना सिर्फ बस में चलेंगे, बल्कि कुरुक्षेत्र में बने अलग-अलग स्थलों के एंट्री पास के रुप में भी काम आ सकेंगे।

अवैध कचरा डंपिंग स्थानों पर लगाए जाएंगे सीसीटीवी कैमरे

एजेंसी

गुरुग्राम। शहर में स्वच्छता व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाया जाएगा। स्वच्छ गुरुग्राम अभियान को गति देने के लिए गार्बेज वल्नरेबल प्वाइंट्स पर निगरानी कड़ी की जाएगी। इन द्वारा एकत्रित कचरा सीधे सेकेंडरी कलेक्शन प्वाइंट्स पर पहुंचे, न कि जीवीपी पर डाला जाए। यदि कोई एजेंसी इस आदेश की अवहेलना करती है, तो उसके विरुद्ध कार्रवाई की जाए। उन्होंने कहा कि निगरानी बढ़ने से न केवल अवैध डंपिंग

स्थानों पर अवैध कचरा फेंकने की घटनाओं पर रोक लगाने के लिए सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे। यह बात नगर निगम गुरुग्राम के आयुक्त प्रदीप दहिया ने कही।निगमायुक्त ने अधिकारियों के साथ आयोजित बैठक में निर्देश दिए कि वे यह सुनिश्चित करें कि सफाई एजेंसियों रुकेगी, बल्कि सार्वजनिक स्थल भी स्वच्छ बने रहेंगे। नगर निगम अब एरिया वाइज बीट सुपरवाइजर को प्रशिक्षित भी करेगा, जिससे सफाई व्यवस्था और अधिक व्यवस्थित और जवाबदेह बनेगी। साथ ही बेहतर कार्य करने वाले कर्मियों को सम्मानित भी किया जाएगा।

भवन व अन्य सन्निर्माण कार्य से जुड़े श्रमिकों के लिए ब्लॉक स्तर पर स्थापित होंगे हैल्प-डेस्क : अनिल विज

एजेंसी

चण्डीगढ। हरियाणा के श्रम मंत्री अनिल विज ने कहा कि राज्य में भवन व अन्य सन्निर्माण के कार्य से जुड़े श्रमिकों के कल्याण के लिए विभिन्न योजनाओं का लाभ लेने हेतु पूरे प्रदेश में मण्डल स्तर (ब्लॉक स्तर) पर हैल्प-डेस्क स्थापित किए जाएंगे। श्रम मंत्री, जोकि हरियाणा भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार कल्याण बोर्ड के चेयरमैन भी है, ने इस संबंध में एक प्रस्ताव को अनुमति प्रदान कर दी है।

उन्होंने बताया कि राज्य में भवन निर्माण में लगे श्रमिकों के हितों को ध्यान में रखते हुए इन हैल्प-डैस्क को ब्लॉक स्तर पर स्थापित किया जाएगा, जो वन स्टॉप सेंटर के रूप में कार्य करेंगे। इन हैल्प डैस्कों पर श्रमिकों के पंजीकरण, विभिन्न योजनाओं के लाभ लेने हेतु सहायता, श्रमिकों को जागरूक करना और भवन निर्माण में कार्यरत श्रमिकों की समस्याओं के निवारण सम्बन्धी कार्य करने होंगे। विज ने बताया कि श्रम विभाग द्वारा इन हैल्प डैस्क सेंटरों के माध्यम से भवन निर्माण से जुड़े

श्रमिकों हेतु संचालित कल्याणकारी योजनाओं के आवेदनों के प्रंसस्करण में तेज़ी और पारदर्शिता सुनिश्चित की जाएगी। इसके अलावा, विभाग का वर्तमान ध्यान कनेक्ट पॉइंट्स और सेवा वितरण बिंदुओं की जमीनी स्तर की भागीदारी को भी बढाना है। इसीलिए मण्डल स्तर पर हेल्प डेस्क स्थापित किए जाएंगे। विज ने बताया कि हरियाणा में भवन निर्माण में लगे श्रमिकों को विभिन्न प्रकार की कल्याणकारी योजनाओं को लाभ प्रदान किया जाता है जिनमें मातृत्व लाभ 36 हजार रुपये, पितृत्व लाभ 21 रुपये, पंजीकृत कामगार के बच्चों की शिक्षा हेतु दिए जाने वाले लाभों के अंतर्गत बच्चों की पहली कक्षा से उच्च शिक्षा तक की वार्षिक वित्तीय सहायता 8,000 रुपये से 20,000 रुपये तक, पंजीकृत कामगारों के मेधावी बच्चों के 10वीं/12वी की परीक्षा में 60 प्रतिशत से 90 प्रतिशत अंक प्राप्ति पर 21 हजार रुपये से 51 हजार रुपए छात्रवृत्ति, वास्तविक सरकारी खर्च के अनुसार कामगार के बच्चों को प्रोफेशनल व टेक्निकल कोर्स हेतु पूर्ण शैक्षणिक व्यय की प्रतिपूर्ति, कामगार के बच्चों को व्यावसायिक संस्थानों में हॉस्टल सुविधा हेतु एक लाख 20 हजार रुपये तक सहायता राशि, पंजीकृत कामगार के बच्चों को व्यावसायिक कोर्स की कोचिंग हेतु 20 हजार रुपये से एक लाख रुपये तक सहायता राशि, पंजीकृत निर्माण कर्मकार की पुत्री के लिए इलैक्ट्रिक स्कूटर की खरीद के लिए 50 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि और मुख्यमंत्री श्रम योगी प्रतिभावान योजना के तहत लैपटॉप हेतु 49 हजार रुपये की राशि दी जाती है।

डेढ़ गुना कलेक्टर रेट पर मालिकाना हक ले सकते हैं शामलात भूमि पर 500 वर्ग गज तक के कब्जाधारी : प्रदीप अहलावत

एजेंसी

तावडू। सीईओ जिला परिषद प्रदीप अहलावत ने कहा कि हरियाणा सरकार ने ग्राम शामलात भूमि पर वर्षों पूर्व बनाए गए मकानों को नियमित करने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। प्रदीप अहलावत बुधवार को अपने कार्यालय में विजुअल माध्यम से जिला के सभी बीडीपीओ को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरकार ने हरियाणा ग्राम शामलात भूमि (विनियमन) अधिनियम, 1961 और इससे संबंधित नियमों में संशोधन करते हुए स्पष्ट किया है कि जो ग्रामीण 31 मार्च, 2004 से पहले शामलात देह की अधिकतम 500 वर्ग गज भूमि पर मकान बना चुके हैं। एसे सभी नागरिक अब उसे सिर्फ डेढ़ गुना कलेक्टर रेट पर मालिकाना हक में बदलवा सकते हैं। सरकार द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, इस सुविधा का लाभ लेने के के अतिरिक्त खुला क्षेत्र 25त्र से अधिक नहीं होना चाहिए। संबंधित

लिए कुछ शर्तें रखी गई हैं। कब्जा की गई भूमि 500 वर्ग गज से अधिक नहीं होनी चाहिए और वह भूमि तालाब, सड़क या अन्य किसी सार्वजनिक/महत्वपूर्ण कार्य के लिए आरक्षित नहीं होनी चाहिए। निर्मित क्षेत्र ग्रामीण को ग्राम पंचायत में आवेदन देना होगा, जिसमें मकान के निर्माण और कब्जे का पूरा ब्यौरा देना होगा। ग्राम पंचायत और ग्राम सभा में इस आवेदन पर विचार के बाद प्रस्ताव पास किया जाएगा।

कांग्रेस ने डा. अंबेडकर के बनाए संविधान का हमेशा अपमान किया : लाल सिंह आर्य

(ज्योति दर्पण)

गुरुग्राम। एससी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य ने कहा कि कांग्रेस बाबा साहेब अंबेडकर के विचारों और उनके बनाए संविधान का अपमान करने वाली पार्टी है। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने अपनी सत्ता बचाने के लिए देश पर आपातकाल थोपा और व्यक्ति की स्वतंत्रता को बंधक बनाया। वे बुधवार को गुरुग्राम स्थित भाजपा कार्यालय गुरुकमल में सिद्धि से समृद्धि तक कार्यक्रम के तहत आयोजित कार्यशाला को संबोधित कर रहे थे। इस मौके पर उन्होंने मोदी सरकार की 11 सालों की उपलब्धियां बताई। उन्होंने कहा कि संविधान की हत्यारी कांग्रेस ने 72 बार चुनी हुई सरकारों को गिराने का पाप भी किया है। वर्ष 2014 में पीएम मोदी के नेतृत्व में भाजपा

सरकार बनी है तब से घोटालों का अंधेरा दूर हुआ है और सुशासन का प्रकाश फैल रहा है। एसी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य ने भाजपा कार्यालय में पौधा रोपण कर कार्यकर्ताओं से एक पेड़ मां के नाम लगाने का आह्वान किया। एससी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष लाल सिंह आर्य ने कार्यशाला में विश्व पर्यावरण दिवस, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस, आपातकाल के काले अध्याय का 50वां वर्ष कार्यक्रमों को लेकर विस्तारपूर्वक जानकारी दी। कार्यशाला की अध्यक्षता गुरुग्राम भाजपा जिला अध्यक्ष सर्वप्रिय त्यागी ने की।कार्यशाला से पहले मीडिया से बातचीत करते हुए लाल सिंह आर्य ने कहा कि भाजपा अपने अभियानों में रचनात्मक कार्यक्रम लगातार करती रहती है। उन्होंने कहा कि 21 जून को मंडल स्तर पर योग दिवस मनाया जाएगा। 23 जून को डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस सभी शक्ति केंद्रों पर मनाया जाएगा। 23 जून से 6 जुलाई तक चौपालें और मोहल्ला बैठकें होंगी, जिनमें सेवा कार्य के किए जाएंगे। साथ ही पौधारोपण के कार्य भी होंगे। 25 जून को भाजपा संविधान हत्या दिवस जिला स्तर पर मनाएगी। लाल सिंह आर्य ने कहा कि 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा से बाहर आए हैं। भाजपा सरकार ने गरीबों के लिए शौचालय, मुफ्त राशन, आयुष्मान कार्ड, हर घर नल से जल और उज्जवला योजना के तहत फ्री गैस कनेक्शन दिए जिससे गरीब लोगों का जीवन सरल बना है।

डीएचबीवीएन ने उपभोक्ता को थमाया 30 करोड़ का बिजली बिल

(ज्योति दर्पण)

जींद। दक्षिण हरियाणा बिजली वितरण निगम ने जींद में एक फैक्टरी संचालक को 30 करोड़ एक लाख 85 हजार 505 रुपये का बिल भेजा है। इस बिल में पीक लोड एक्जम्पशन (पीएलई) के नाम पर विभाग ने 29 करोड़ 99 लाख 96 हजार 523 रुपए जोड़ दिए गए हैं।निर्जन गांव स्थित मघान पेपर बोर्ड मिल का बिजली का बिल हर महीने डेढ़ से दो लाख रुपये का आता है लेकिन इस बार जब 30 करोड रुपये से ज्यादा का बिल आया तो मिल के मालिक विजयपाल मघान के पैरों तले की जमीन खिसक गई। इस मामले में जब उन्होंने बिजली निगम के अधिकारियों से संपर्क स्थापित किया तो उन्होंने यह कह कर अपना पल्ला झाड़ लिया कि हिसार से जनरेट होता है और इसमें वह कुछ नहीं कर सकते। जींद में इस प्रकार अनाप-शनाप बिल आने का यह इकलौता मामला नहीं है। जींद के गांव झांझ स्थित नवनीत सेरेमिक्स का बिल भी प्रकार से आया है लेकिन उन्होंने बीते रोज निगम के अधिकारियों से बात करके बिल को ठीक करवा लिया है और उनका कहना है कि क्लेरिकल गलती थी। वह सुधर गई है। मघान पेपर बोर्ड मिल का बिजली बिल 30 करोड़ आने के पीछे कहीं मिल के बिजली कनेक्शन को लेकर लगाई गई आईटीआई तो जिम्मेदार नहीं है। असल में मिल के बिजली कनेक्शन को लेकर एडवोकेट शिवम मघान ने 21 मई को एक आरटीआई लगाई थी। जिसमें उन्होंने अपने बिजली कनेक्शन को लेकर सवाल किए थे कि यह कनेक्शन कब इंस्टॉल हुआ था और इसकी कितनी सिक्योरिटी जमा की गई थी।

मोदी सरकार के 11 साल बेमिसाल : बड़ौली

एजेंसी

चंडीगढ़। मोदी सरकार के 11 साल-संकल्प से सिद्धि तक के तहत प्रदेश भर में चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों की फीडबैक से भारतीय जनता पार्टी गदगद है। बुधवार को पंचकूला के प्रदेश कार्यालय पंचकमल में हुई समीक्षा बैठक में प्रदेश भर में अब तक हुए कार्यक्रमों की समीक्षा की गई। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मोहन लाल बड़ौली इस कार्यक्रम की संयोजक एवं राज्यसभा सांसद रेखा शर्मा, संगठन मंत्री फणीन्द्रनाथ शर्मा की मौजूदगी में हर जिले में हुए कार्यक्रमों के बारे में चर्चा की गई। जिसमें सभी ने संतुष्टि जताई कि मोदी सरकार की उपलब्धियों को बताने में भाजपा के कार्यकर्ता सफल हो रहे हैं। बैठक में प्रदेश महामंत्री कृष्ण बेदी, प्रदेश महामंत्री डा. अर्चना गुप्ता, प्रदेश महामंत्री सुरेंद्र पूनिया, पूर्व मंत्री कंवरपाल गुर्जर, पूर्व मंत्री सीमा त्रिखा, जवाहर सैनी, नागेंद्र शर्मा, जसबीर दौड़वा, निताशा सिहाग आदि वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे।

बैठक में मोदी सरकार की 11 साल की उपलब्धियों को लेकर जिला व प्रदेश स्तर पर हुए कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का फीडबैक लिया गया। बैठक में मौजूद कार्यक्रमों के संयोजकों ने ग्राउंड लेवल पर हो रही गतिविधियों की जानकारी विस्तार से बैठक में रखी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष ने नेताओं से लिए फीडबैक पर संतुष्टि जताई और कार्यकर्ताओं की जमकर प्रशंसा की। उन्होंने आगामी कार्यक्रमों विश्व पर्यावरण दिवस, डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी बलिदान दिवस और संविधान हत्या दिवस को लेकर बैठक में जरूरी दिशा निर्देश भी दिए गए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंडित मोहन लाल बड़ौली ने कहा कि मोदी सरकार के 11 साल बेमिसाल रहे हैं। मोदी सरकार की 11 साल की उपलब्धियों पर हो रहे कार्यक्रमों को लेकर कार्यकर्ताओं में उत्साह, ऊर्जा और समर्पण का अद्वितीय वातावरण देखने को मिला, जो संगठन की ताक़त और जनभागीदारी का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि अब 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सभी कार्यकर्ता मंडल स्तर पर लोगों को साथ लेकर योग करें और योग के प्रति जागरुक करें। बड़ौली ने कहा कि 23 जून को डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस के मौके पर सभी शक्ति केंद्रों पर कार्यक्रम आयोजित कर डा. मुखर्जी के जीवन और बलिदान के बारे में लोगों को बताएं। संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम की संयोजक एवं सांसद रेखा शर्मा ने कार्यकर्ताओं की मेहनत और परिश्रम से भाजपा के सभी कार्यक्रम धरातल पर सफल रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारे कार्यकर्ता सेवा भाव, समर्पण और अनुशासन की मिसाल है। उन्होंने कार्यकर्ताओं का आह्वान करते हुए कहा कि 23 जून से 6 जुलाई तक चौपाल, मोहल्ला बैठक और संकल्प सभाएं होनी है। इन दिनों में सेवा के कार्य करें और पर्यावरण को स्वच्छ बनाने के लिए अधिक से अधिक पौधारोपण करें।रेखा शर्मा ने कहा कि मोदी सरकार के 11 साल सेवा, सुशासन, गरीब कल्याण के रहे हैं। ये 11 साल विकास, विश्वास और बदलाव के रहे हैं। आज देश का हर नागरिक बदलते भारत को देख रहा है। उन्होंने कहा कि लोगों को हमें मोदी सरकार की हर योजना और उपलब्धियों की जानकारी कार्यक्रमों के माध्यम से देनी है।

हरियाणा विस अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने किया कर्नाटक विधान सभा का दौरा, विधायी कामकाज देखा

एजेंसी

चंडीगढ़। हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने कर्नाटक राज्य प्रवास के दौरान बेंगलुरु स्थित विधान सौध (कर्नाटक विधान सभा) का दौरा किया। इस अवसर पर उन्होंने कर्नाटक विधान सभा के उपाध्यक्ष रुद्रप्पा मनप्पा लामानी एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से बातचीत भी की। इस दौरे के दौरान हरियाणा एवं कर्नाटक विधानसभा के प्रतिनिधियों के बीच विधायी प्रक्रियाओं, सदन संचालन, तकनीकी नवाचार और संसदीय परंपराओं को लेकर विस्तृत एवं सारगर्भित चर्चा हुई। दोनों राज्यों के प्रतिनिधियों ने एक-दूसरे के अनुभवों से सीखने और भविष्य में विधायी प्रक्रियाओं को और अधिक प्रभावी एवं पारदर्शी बनाने के लिए सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई। इस अवसर पर हरियाणा विधान सभा अध्यक्ष हरविन्द्र कल्याण ने आगामी राष्ट्रीय शहरी स्थानीय निकाय सम्मेलन, जो कि 3 और 4 जुलाई, 2025 को गुरुग्राम में आयोजित होने जा रहा है, का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलनों के माध्यम से विभिन्न राज्यों की विधायी व प्रशासनिक संस्थाओं के बीच संवाद और समन्वय स्थापित होगा, जिससे देशभर में बेहतर शासन व्यवस्था सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

20 गैर मान्यता प्राप्त स्कूलों को बंद करने का नोटिस

निजी स्कूलों में अनियमितताओं पर भी होगी कार्रवाई

एजेंसी

तावडू। जिला शिक्षा विभाग ने गैर मान्यता प्राप्त निजी स्कूलों के खिलाफ सख्त रुख अपनाते हुए तावडू में 20 ऐसे स्कूलों को तुरंत बंद करने का नोटिस जारी किया है।

खंड शिक्षा अधिकारी विजय प्रतीक धनखड़ ने बताया कि इन स्कूलों के पास मान्यता या अनुमति संबंधी कोई दस्तावेज नहीं हैं, जो हरियाणा विद्यालय शिक्षा नियमावली का उल्लंघन है। धनखड़ ने कहा कि गैर मान्यता प्राप्त स्कूलों का संचालन कानूनी अपराध है और ऐसे स्कूलों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों को केवल सरकारी या मान्यता प्राप्त निजी स्कूलों में ही दाखिल कराएं, ताकि उनके भविष्य को खतरा न हो। इसी कड़ी में मंगलवार को धनखड़ ने अपनी टीम के साथ बिस्सर अकबरपुर और मोहम्मदपुर अहिर के दो निजी स्कूलों का औचक निरीक्षण किया। यह निरीक्षण हाल ही में मिली शिकायतों के आधार पर किया गया, जिसमें निजी स्कूलों द्वारा

महंगी किताबें और वर्दी बेचने की बात सामने आई थी। निरीक्षण के दौरान कोई अनियमितता नहीं पाई गई, लेकिन स्कूल संचालकों को चेतावनी दी गई कि भविष्य में ऐसी शिकायतें मिलने पर सख्त कार्रवाई होगी। निरीक्षण टीम में बिस्सर अकबरपुर सीनियर सेकेंडरी स्कूल के प्राचार्य सतीश शास्त्री, इतिहास प्रवक्ता ज्ञान सिंह सहरावत, राकेश सचदेवा सहित अन्य सदस्य शामिल थे। शिक्षा विभाग का यह अभियान निरंतर जारी रहेगा ताकि शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता और नियमों का पालन सुनिश्चित हो। अभिभावकों से अनुरोध है कि वे स्कूलों की मान्यता की जांच कर बच्चों का दाखिला कराएं, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता और बच्चों का भविष्य सुरक्षित रहे।

फतेहाबाद जिले में नशे के विरूद्ध और ज्यादा गंभीर प्रयासों की जरूरत : सांसद कुमारी सैलजा

एजेंसी

फतेहाबाद। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की महासचिव, पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं सिरसा की सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि हमारे पड़ोसी राज्य में नशे की समस्या हरियाणा से भी ज्यादा है फतेहाबाद जिले की सीमाए पंजाब के साथ लगती है। ऐसे में फतेहाबाद जिले में नशे के विरूद्ध और ज्यादा गंभीर प्रयासों की जरूरत है। वे लघुसचवालय स्थित जिला परिषद हाल में जिला विकास, समन्वय एंव निगरानी समिति (दिशा) की बैठक की अध्यक्षता करते हुए अधिकारियों को दिशा निर्देश दे रही थी। बैठक में राज्सभा सांसद सुभाष बराला, टोहाना से विधायक परमवीर सिंह, रतिया से विधायक जरनैल सिंह, फतेहाबाद के विधायक बलवान सिंह दौलतपुरिया, फतेहाबाद की जिला उपायुक्त मनदीप कौर, पुलिस अधीक्षक सिद्धात जैन, एडीसी अनुराग ढालिया, डीएमसी संजय बिश्नोई,जयपाल सिंह लाली, अरविंद शर्मा, लाल बहादुर खोवाल, राजेश चाडीवाल सहित फतेहाबाद जिले के आला अधिकारी मौजूद थे। बैठक में कांग्रेस नेता अरविंद शर्मा व जयपाल सिंह लाली भी मौजूद थे। बैठक में भाग लेने पहुंची सांसद कुमारी सैलजा का लघु सचिवालय पहुंचने पर उपायुक्त मनदीप कौर ने पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत किया तो वहीं राज्यसभा सांसद सुभाष बराला का स्वागत डीएमसी संजय बिश्नोई ने पुष्पगुच्छ भेंट कर किया। बैठक को संबोधित करते हुए सांसद कुमारी सैलजा ने फतेहाबाद जिले के क्राइम व नशे की गंभीर समस्या बने पुलिस अधीक्षक सिद्धात जैन से पूछा कि आप जानकारी दे कि पुलिस नशे के विरूद्ध क्या अभियान चला रही है। अपराधों के नियन्त्रण के लिए क्या प्रसास हो रहे है। पुलिस अधीक्षक सिद्धात जैन ने कहा जिला फतेहाबाद पुलिस नशे को लेकर हाई अलर्ट पर है। नशा तस्करों का नेटवर्क तोड़ने की पुरी कोशिश की जा रही है। जिले में अपराध ना हो इस बात के पुलिस पूरे प्रयास कर रही है। अपराध घटित हो जाने के बाद पुलिस अपराधियों को पकड़ने पर पुरी तरह से कामयाब हो रही है। सांसद कुमारी सैलजा ने कहा कि हमारे पड़ोसी राज्य में नशे की समस्या हरियाणा से भी ज्यादा है फतेहाबाद जिले की सीमाए पंजाब के साथ लगती है। पुलिस को और ज्यादा प्रयास करने होंगे। सासंद कुमारी सैलजा ने बैठक में फतेहाबाद जिले की स्वास्थय सेवाओं को लेकर भी जानकारी मांगी। बैठक में मौजूद डिप्टी सिविल सर्जन डेंटल सर्जन डा. शरद तुली ने बताया कि फतेहाबाद जिले में सरकार ने 83 चिकित्सकों के पदों पर नियुक्ति आदेश जारी किए थे।

अब देश में सभी मोबाइल नंबरों के लिए केवॉयसी अनिवार्य, सरकार ने लिया फैसला

नई दिल्ली।

सरकार ने मोबाइल सेवाओं में पारदर्शिता और सुरक्षा को लेकर बड़ा फैसला किया है। अब देश में सभी मोबाइल नंबरों के लिए केवॉयसी यानी नो योर कस्टमर प्रक्रिया को पूरी तरह अनिवार्य कर दिया है। सरकार के इस फैसला विशेष रूप से उन उपभोक्ताओं पर असर पड़ेगा जो अब तक बिना पूरी पहचान के प्रीपेड सिम कार्ड ले लेते थे। पहले तक प्रीपेड ग्राहकों को कुछ हद तक केवॉयसी में छूट दी गई थी, लेकिन अब यह छूट पूरी तरह से समाप्त कर दी गई है। अब चाहे मोबाइल नंबर प्रीपेड हो या पोस्टपेड, ग्राहक को पहचान और पते का प्रमाण भी देना ही होगा। यह प्रक्रिया ऑनलाइन माध्यम से जैसे टेलीकॉम कंपनियों की वेबसाइट या ऐप के जरिए या फिर ऑफलाइन टेलीकॉम स्टोर्स पर जाकर पूरी की जा सकती है। सरकार का कहना है कि यह कदम देश में अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए उठाना जरुरी था। मोबाइल नंबरों का दुरुपयोग टेरर फंडिंग, मनी लॉन्ड्रिंग और साइबर फ्रॉड जैसी गतिविधियों में किया जाता है।

बिना केवॉयसी वाले नंबर इन अपराधों में सहायक हो सकते हैं, इसलिए इस फैसले से इन पर काफी हद तक नियंत्रण लगेगा। इसके अलावा हर मोबाइल नंबर एक वैध और प्रमाणित व्यक्ति से जुड़ा होगा, जिससे सरकार को आपातकालीन सेवाओं और कल्याणकारी योजनाओं की डिलीवरी में भी मदद मिलेगी। इस नए नियम का असर प्रीपेड मोबाइल यूजर्स पर पड़ेगा। उन्हें अब सिम खरीदते समय पूरी केवॉयसी प्रक्रिया से गुजरना होगा। यह प्रक्रिया थोड़ी समय लेने वाली और असुविधाजनक लग सकती है, लेकिन सरकार का मानना है कि इससे लंबे समय में आम नागरिकों को ही फायदा होगा।

वहीं पोस्टपेड यूजर्स पर इसका प्रभाव सीमित रहेगा क्योंकि वे पहले से ही केवॉयसी प्रक्रिया से गुजर होंगे। हालांकि उन्हें भी समय-समय पर अपनी जानकारी अपडेट करनी होगी। कुल मिलाकर सरकार का यह कदम मोबाइल यूजर्स की सुरक्षा बढ़ाने, डिजिटल ट्रैकिंग को मजबूत करने और अवैध कार्यों को रोकने की दिशा में एक अहम कदम माना जा रहा है।

अमेरिकी फेड ने बेंचमार्क ब्याज दर में नहीं किया कोई बदलाव

-बढ़ती महंगाई की वजह ट्रंप के लगाए गए टैरिफ को बताया

नई दिल्ली।

अमेरिकी केंद्रीय बैंक फेडरल रिजर्व की फेडरल ओपन मार्केट कमेटी ने अपनी बेंचमार्क ब्याज दर में कोई बदलाव नहीं किया है। अब यह दर 4.25 फीसदी से 4.5फीसदी के बीच ही बनी रहेगी। यह चौथी बार जब फेड ने दरों को स्थिर रखा है। कमेटी के सदस्यों ने इस फैसले का समर्थन किया। बैठक के बाद फेड ने कहा कि महंगाई अभी भी कुछ हद तक ज्यादा है। साथ ही यह भी बताया गया कि हाल के आंकड़े बताते हैं कि अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मजबूती के साथ विकास जारी है। फेड ने कहा कि बेरोजगारी दर अब भी कम है और श्रम बाजार की स्थिति मजबूत बनी हुई है, जिससे यह पता चलता है कि अर्थव्यवस्था को लेकर फेड का भरोसा कायम है। फेडरल रिजर्व के चेयरमैन ने कहा है कि अमेरिका में गर्मी के मौसम में वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी देखने को मिल सकती है। उन्होंने इसकी वजह राष्ट्रपति ट्रंप द्वारा लगाए गए टैरिफ को बताया। चेयरमैन ने कहा कि हम देख रहे हैं कि वस्तुओं की महंगाई थोड़ी बढ़ रही है। हमें उम्मीद है कि गर्मियों में यह और बढ़ेगी। उन्होंने बताया कि टैरिफ का असर पूरी सप्लाई चेन पर पड़ता है, क्योंकि बहुत सी वस्तुएं महीनों पहले आयात की गई थीं। उन्होंने यह भी बताया कि अब कुछ श्रेणियों जैसे पर्सनल कंप्यूटर और ऑडियो-विजुअल उपकरणों में कीमतें बढ़ रही हैं, और यह टैरिफ बढ़ने की वजह से है। उनका कहना है कि आने वाले महीनों में इस तरह की कीमतों में और इजाफा हो सकता है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने ब्याज दरों में कटौती को लेकर प्रतिक्रिया दी। उन्होंने दिन की शुरुआत में मांग की कि फेडरल रिजर्व को 1 से 2.5 फीसदी अंक तक की बड़ी कटौती करनी चाहिए। बता दें फेड की दरों से जुड़ा फैसला सात राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त गवर्नरों और पांच क्षेत्रीय बैंकों के अध्यक्षों के एक रोटेशन समूह के बीच गहन विचार-विमर्श के बाद लिया जाता है।

अहमदाबाद हादसे के बाद एयर इंडिया ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में की कटौती

-कंपनी ने कहा- आगे भी सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी

नई दिल्ली।

अहमदाबाद विमान हादसे के बाद एयर इंडिया ने अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में 15 फीसदी कटौती का फैसला किया है। ये फैसला अभी से लागू होगा और कम से कम 15 जुलाई तक जारी रहेगा। कंपनी ने कहा कि ये कदम यात्रियों की सुरक्षा और उड़ानों की स्थिरता को ध्यान में रखते हुए लिया गया। पिछले छह दिनों में एयर इंडिया की 83 फ्लाइट्स रद्द हो चुकी है। एयर इंडिया के पास 33 बोइंग 787-8 और 787-9 विमान हैं। इनमें से 26 विमानों की सुरक्षा जांच पूरी हो चुकी है और उन्हें सेवा के लिए मंजूरी मिल गई है। बाकी विमानों की जांच अगले कुछ दिनों में पूरी कर ली जाएगी। एयर इंडिया ने कहा है कि वह अपने बोइंग 777 विमानों की भी अतिरिक्त सुरक्षा जांच करेगी ताकि कोई जोखिम न रहे। कंपनी ने बताया कि पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव, यूरोप और पूर्वी एशिया के कई देशों में रात के समय उड़ानों पर पाबंदी और सुरक्षा जांचों के कारण अंतरराष्ट्रीय उड़ानों में बाधाएं आई हैं। इसके चलते इंजीनियरिंग स्टाफ और पायलट भी सावधानी बरत रहे हैं। 12 जून को हुआ अहमदाबाद विमान हादसा भारत के इतिहास की सबसे बड़ी हवाई दुर्घटनाओं में से एक बन गया है। फ्लाइट एआई171 अहमदाबाद से लंदन जा रही थी लेकिन टेकऑफ के कुछ ही मिनटों बाद क्रैश हो गई। हादसे में 241 यात्रियों और क्रू की मौत हो गई, साथ ही जमीन पर मौजूद डॉक्टर मेस में 30 से ज्यादा लोग भी इसकी चपेट में आ गए। एयर इंडिया ने कहा कि हम अब भी एआई171 फ्लाइट में मारे गए 241 यात्रियों और क्रू मेंबर्स के दुख में डूबे हुए हैं। हमारी संवेदनाएं उन सभी परिवारों और समुदायों के साथ हैं जो इस दर्दनाक हादसे से प्रभावित हुए हैं। कंपनी ने भरोसा दिलाया कि आगे भी सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी और सभी जरूरी कदम उठाए जाएंगे।

टीवीएस आईक्यूब इलेक्ट्रिक स्कूटर ने की रिकॉर्ड बिक्री, ओला-बजाज को पीछे छोड़ा

नई दिल्ली।

टीवीएस आईक्यूब भारतीय बाजार में बिक्री के नए इतिहास रच रहा है। इसने घरेलू बाजार में 6 लाख थोक बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है। ओला और बजाज को पीछे छोड़ा। आंकड़ों के मुताबिक अप्रैल 2025 के आखिर में केवल 1,345 यूनिट की कमी थी, जो मई 2025 के पहले दो दिनों में हासिल की गई, जिसमें 27,642 यूनिट की बिक्री हुई और कुल मिलाकर 6,26,297 यूनिट हो गईं। ये कंपनी का पहला इलेक्ट्रिक स्कूटर है। ये मई में देश का नंबर-1 ई-स्कूटर भी है।

आईक्यूब की पहली 1,00,000 यूनिट की बिक्री में तीन साल से थोड़ा ज्यादा समय लगा। 1,00,000 से 2,00,000 यूनिट तक का सफर सिर्फ 10 महीने में पूरा कर लिया, जबकि, 3,00,000 यूनिट थोक बिक्री मई 2024 की शुरुआत में पार कर ली, जो 53 महीने या चार साल और चार महीने है। पिछले 3,00,000 यूनिट्स को सिर्फ 12 महीनों में पूरे भारत में टीवीएस डीलरों को भेजा गया है, जो ई-स्कूटर की बढ़ती मांग को दर्शाता है।

बता दें आईक्यूब को जनवरी 2020 में लॉन्च किया गया था, जो फुल एलईडी लाइट्स, कनेक्टेड टेक्नोलॉजी से लैस है और इसे एक बड़ी सीट और बढ़िया स्टोरेज स्पेस के साथ एक फैमिली ई-स्कूटर के रूप में पेश किया गया है।

इलेक्ट्रिक स्कूटर को 6,00,000 बिक्री करने में 65 महीने लगे हैं। जैसा कि डेटा दिखता है कि पिछले तीन फाइनेंशियल ईयर में मांग बढ़ी है, जो फाइनेंशियल ईयर 2025 में तेजी से बढ़ेगी।

शेयर बाजार निवेशकों को सतर्कता बरतने की जरुरत

नई दिल्ली।

बढ़ती वैल्यूएशन, कंपनियों के कमजोर मुनाफे और घरेलू मांग की सुस्ती के चलते शेयर बाजार के निवेशकों के लिए यह समय सतर्कता बरतने का है। भारत के शेयर बाजार में कोविड-19 के बाद शुरू हुई तेजी का दौर अब अपने अंतिम चरण में पहुंच चुका है।

विशेषज्ञों का मानना है कि हर बुल या बेयर मार्केट लगभग पांच वर्षों में चरम पर पहुंचता है, और मार्च 2025 में यह बुल रन पांच साल पूरा कर लेगा। ऐसे में अब बाजार को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने वाले प्रमुख कारक लगभग समाप्त हो चुके हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, कोविड के बाद कंपनियों के मुनाफे की गति उनकी आमदनी से कहीं अधिक तेज थी, लेकिन वित्त वर्ष 2025 तक आते-आते यह दोनों लगभग समान स्तर पर पहुंच गए हैं। मार्च 2025 की तिमाही में कंपनियों की मुनाफे की ग्रोथ 10 प्रतिशत से नीचे रही और पिछले आठ तिमाहियों से यही धीमा रुझान बना हुआ है। अर्थव्यवस्था में नकदी तो है, लेकिन वह ÷मनी मल्टीप्लायर÷ नहीं बन पा रही है। यानी मजबूत निर्यात, सरकारी खर्च में विस्तार और वेतन वृद्धि जैसे तत्वों की अनुपस्थिति के कारण पैसा बाजार में तेजी से घूम नहीं रहा है। मांग की ग्रोथ भी कई बाधाओं से जूझ रही है। भारत का निर्यात वैश्विक व्यापार युद्ध, भूराजनीतिक तनाव और चीन की डंपिंग नीतियों की वजह से दबाव में है।

कंपनियां अपने पूंजीगत खर्च और वेतन वृद्धि में कटौती कर रही हैं, जिससे फ्री कैश फ्लो तो बढ़ा है, लेकिन मांग पर प्रतिकूल असर पड़ा है। सरकार भी उधारी लेने से बच रही है

और आमदनी में कोई बड़ा सुधार नहीं दिख रहा है। इन सभी कारणों से डोमेस्टिक डिमांड के लिए कोई ठोस इंजन नजर नहीं आ रहा। भारत का बाजार अब भी ऊंची वैल्यूएशन पर है। निफटी500 का प्राइस-टू-बुक रेशियो 3.9× है और मार्केट कैप बनाम जीडीपी रेशियो 132 प्रतिशत के आसपास है, जो कि इसके दीर्घकालिक औसत से काफी अधिक है। ऐसे में आने वाले वर्षों में रिटर्न सीमित रह सकता है।

रुपया गिरावट पर बंद

मुंबई।

अमेरिकी डॉलर के मुकाबले गुरुवार को भारतीय रुपया 25 पैसे की गिरावट के साथ ही 86.74 पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस रुपया 45 पैसे की गिरावट के साथ ही 86.49 पर बंद हुआ था। कच्चे तेल की कीमतों में तेजी और मजबूत डॉलर के दबाव को दरकिनार करते हुए रुपया गत दिवस शुरुआती कारोबार में 11 पैसे की बढ़त के साथ 85.93 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया, डॉलर के मुकाबले 85.96 पर खुला। फिर 85.93 प्रति डॉलर पर पहुंच गया जो पिछले बंद भाव से 11 पैसे की बढ़त दिखाता है।

एआई अभी एक इंटर्न, जल्द ही सॉफ्टवेयर इंजीनियर बन जाएगा

ओपनएआई के सीईओ का बड़ा बयान

मुंबई। इन दिनों कई बड़ी टेक दिग्गज कंपनियां एआई को और ज्यादा एडवांस बनाने में लगी हैं। इसी बीच ओपनएआई के सीईओ सैम ऑल्टमैन ने सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई की मौजूदा क्षमता को लेकर बड़ा बयान दिया है। दरअसल उनका कहना है कि एआई अभी एक इंटर्न है, लेकिन बहुत तेजी से यह टेक्नोलॉजी अनुभवी सॉफ्टवेयर इंजीनियर जैसी योग्यता हासिल कर लेगा। यानी आने वाले दिनों में एआई नेक्स्ट लेवल पर पहुंच सकता है। ऑल्टमैन ने बताया कि आज एआई ऐसा इंटर्न है जो कुछ घंटों तक काम कर सकता है, लेकिन जल्द ही यह ऐसा अनुभवी इंजीनियर बन जाएगा जो कई दिनों तक लगातार मुश्किल काम भी आसानी से कर लेगा। इस दौरान उन्होंने कहा कि अगले साल तक हमें इसतरह के एआई एजेंट भी देखने को मिल जाएंगे जो मुश्किल काम आसानी से कर दें और नए ज्ञान की खोज तक कर सकते हैं। ऑल्टमैन का कहना है कि फ्यूचर में एआई मुश्किल कोडिंग को आसानी से हल करने, सॉफ्टवेयर आर्किटेक्चर डिजाइन करने और स्ट्रेटेजिक डेवलपमेंट के फैसलों में अहम भूमिका निभा सकता है। इतना ही नहीं ऑल्टमैन ने यहां तक कह दिया है कि आने वाले वक्त में सॉफ्टवेयर इंजीनियरों को रेगुलर कोडिंग से आगे बढ़कर अपने आप को और बेहतर करना होगा। सीईओ ने यह बात तब कही है जब एआई की वजह से लोगों की नौकरियां जा रही हैं और हर तरफ इस पर बहस छिड़ गई है।

डील साइन करने के बाद रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयरों भारी खरीदारी

नई दिल्ली।

रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर के शेयरों में जबरदस्त खरीदारी हो रही है। अनिल अंबानी की कंपनी के शेयर में 5 प्रतिशत का अपर सर्किट लग गया और यह 386.05 रुपये के इंट्रा डे हाई पर पहुंच गया। कंपनी के शेयरों में इस तेजी के पीछे एक बड़ी डिफेंस संबंधित डील है। दरअसल, फ्रांस की दिग्गज डिफेंस कंपनी डसॉल्ट एविएशन और रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर की सहायक कंपनी रिलायंस एयरोस्ट्रक्चर के बीच भारत में फाल्कन 2000 बिजनेस जेट बनाने के लिए एक डील साइन की गई है। बता दें कि डसॉल्ट एविएशन ने ही राफेल फाइटर जेट को भी बनाती है। राफेल का इस्तेमाल ऑपरेशन सिंदूर में किया गया था। 18 जून को कारोबार के दौरान एक एक्सचेंज फाइलिंग के जरिए अनिल अंबानी के स्वामित्व वाली फर्म ने घोषणा की कि इसकी सहायक कंपनी रिलायंस एयरोस्ट्रक्चर लिमिटेड ने ग्लोबल मार्केट्स के लिए भारत में फाल्कन 2000 बिजनेस एग्जीक्यूटिव जेट बनाने के लिए डसॉल्ट एविएशन के साथ एक रणनीतिक साझेदारी की है। 18 जून को अपनी एक्सचेंज फाइलिंग में रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर ने कहा, डसॉल्ट एविएशन और रिलायंस इंफ्रास्ट्रक्चर की सहायक कंपनी, रिलायंस एयरोस्ट्रक्चर लिमिटेड (आरएएल) ने आज पेरिस एयर शो में वैश्विक बाजारों के लिए भारत में फाल्कन 2000 बिजनेस एग्जीक्यूटिव जेट बनाने के लिए एक ऐतिहासिक रणनीतिक साझेदारी की घोषणा की। यह साझेदारी भारत की एयरोस्पेस विनिर्माण क्षमताओं को आगे बढ़ाने में एक महत्वपूर्ण कदम है। बता दें कि डसॉल्ट एविएशन पहली बार भारतीय और वैश्विक बाजारों के लिए फ्रांस के बाहर फाल्कन 2000 बिजनेस जेट का निर्माण करेगा। संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्रांस, कनाडा और ब्राजील के बाद भारत अगली पीढ़ी के बिजनेस जेट बनाने वाले देशों के कुलीन वर्ग में शामिल हो गया।

शेयर बाजार गिरावट पर बंद

मुम्बई।

भारतीय शेयर बाजार गुरुवार को भी गिरावट पर बंद हुआ। इस प्रकार लगातार तीसरे कारोबारी सत्र में बाजार में गिरावट रही। आज सुबह दुनिया भर के बाजारों से मिले-जुले संकेतों के बीच ही ईरान और इजरायल के बची संघर्ष बढ़ने से भी निवेशक बाजार से दूर रहे। इस कारण बाजार नीचे आया है। दिन भर के कारोबार के बाद 30 शेयरों वाला बीएसई सेंसेक्स 82.79 अंक की गिरावट के साथ ही 81,361.87 अंकों पर बंद हुआ। वहीं इसी प्रकार 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 18.80 अंकों की गिरावट के साथ ही 24,793.25 अंकों पर बंद हुआ। वहीं गत दिवस भी बाजार गिरावट पर बंद हुआ था।

आज सेंसेक्स की 30 में से केवल 8 कंपनियों के शेयर ही बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि बाकी की सभी 22 कंपनियों के शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। इसी तरह, निफ्टी 50 की 50 में से सिर्फ 17 कंपनियों के शेयर बढ़त के साथ बंद हुए और बाकी की सभी 33 कंपनियों के शेयर नुकसान के साथ बंद हुए। आज सेंसेक्स की कंपनियों में शामिल महिंद्रा एंड महिंद्रा के शेयर सबसे ज्यादा 1.57 फीसदी की बढ़त के साथ बंद हुए जबकि अडाणी पोर्ट्स के शेयर आज सबसे ज्यादा 2.50 फीसदी की गिरावट के साथ बंद हुए।

सेंसेक्स की अन्य कंपनियों में आज टाइटन के शेयरों में 0.74 फीसदी, मारुति सुजुकी 0.45 फीसदी, भारती एयरटेल 0.43 फीसदी, लार्सन एंड टुब्रो 0.32 फीसदी, कोटक महिंद्रा बैंक 0.31 फीसदी, एचडीएफसी बैंक 0.13 फीसदी की बढ़त रही।

वहीं बजाज फाइनेंस के शेयर 2.19 फीसदी, टेक महिंद्रा 1.95 फीसदी, इंडसइंड बैंक 1.73फीसदी, नेस्ले इंडिया 1.28 फीसदी, भारतीय स्टेट बैंक 1.13 फीसदी, एनटीपीसी 1.07 फीसदी, बजाज फिनसर्व 1.05 फीसदी, टाटा स्टील 0.99 फीसदी, इंफोसिस 0.95 फीसदी, टीसीएस 0.89 फीसदी, एशियन पेंट्स 0.58 फीसदी, पावरग्रिड 0.50 फीसदी, एक्सिस बैंक 0.41 फीसदी रही। इससे पहले आज सुबह बाजार गिरावट के साथ खुला। सेंसेक्स आज सुबह 98 अंक टूटकर 81,347 पर पहुंच गया। वहीं 50 शेयरों वाला एनएसई निफ्टी भी 24 अंकों की गिरावट के साथ ही 24,788 पर कारोबार कामकाज करता दिखा।

बाजार में इस गिरावट का कारण अमेरिका के फेडरल रिजर्व का ब्याज दरों को यथावत बनाए रखना, इजरायल और ईरान के बीच बढ़ता तनाव, निफ्टी एफएंडओ की एक्सपायरी आदि रही। सुबह करीब 7¬30 बजे गिफ्ट निफ्टी वायदा 60 अंकों की गिरावट के साथ 24,766 के स्तर पर ट्रेड कर रहा था, जो बाजार में नकारात्मक शुरुआत का संकेत दे रहा है। एशिया-पैसिफिक बाजारों में भी गिरावट दर्ज की गयी है। निवेशकों की नजर एक ओर जहां अमेरिका की मौद्रिक नीति पर है, वहीं दूसरी ओर इजरायल-ईरान संघर्ष को लेकर बाजार टूटा है। जापान का निक्केई इंडेक्स 0.63 फीसदी गिरा, टोपिक्स इंडेक्स 0.44 फीसदी गिरा, कोरिया का कोस्पी शुरू में बढ़त के बाद 0.18 फीसदी नीचे आया। ऑस्ट्रेलिया का एएसएक्स 200 में भी गिरावट रही।

इस बीच, अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों को चौथी बार 4.25फीसदी से 4.50 फीसदी के स्तर पर बनाए रखा। फेड अधिकारियों का मानना है कि भले ही आर्थिक अनिश्चितता थोड़ी कम हुई हो पर 2025 में दो बार दरों में कटौती की संभावना बनी हुई है। अमेरिकी शेयर बाजार बुधवार को मिश्रित रुख रुख के साथ बंद हुए।

मोटोरोला और सैमसंग के स्मार्टफोन्स में मिल रहे दमदार कैमरे

नई दिल्ली। स्मार्टफोन निर्माता कंपनी मोटोरोला और सैमसंग के ऐसे कई स्मार्टफोन्स हैं जो 50 मेगापिक्सल के दमदार फ्रंट कैमरे के साथ आते हैं और साथ ही शानदार रियर कैमरा सेटअप, पावरफुल बैटरी और हाई-रिफ्रेश रेट डिस्प्ले भी ऑफर करते हैं। मोटोरोला का एक फोन 50एमपी फ्रंट और रियर में 50एमपी +50एमपी अल्ट्रावाइड+मैक्रो कैमरा के साथ आता है। इसमें डायमेंसिटी 8350 प्रोसेसर और 6000 एमएएच की बैटरी दी गई है, जो 90वॉट फास्ट चार्जिंग को सपोर्ट करती है। यह फोन आईपी68+आईपी69 रेटिंग से लैस है। एक अन्य मोटोरोला फ्लिप फोन 6.96 इंच के मेन और 4 इंच के कवर डिस्प्ले के साथ आता है। इसमें स्नैपड्रेगन 8 इलाइट प्रोसेसर, 4700एमएएच बैटरी, 68 वॉट फास्ट और 30वॉट वायरलेस चार्जिंग का सपोर्ट है। एक और मोटोरोला डिवाइस 50एमपी सेल्फी कैमरा, 1.5के रेजॉलूशन, 144एचझेड रिफ्रेश रेट और 125वॉट फास्ट चार्जिंग के साथ आता है। सैमसंग भी 50एमपी सेल्फी कैमरा वाले किफायती और प्रीमियम दोनों सेगमेंट्स में फोन ऑफर कर रहा है। एक मॉडल में 50 एमपी फ्रंट, 50एमपी+8एमपी+2एमपी रियर कैमरा, 6.7 इंच सुपर अमोलेड+ डिस्प्ले और स्नैपड्रेगन 7 जेन 1 प्रोसेसर है। इसकी 5000एमएएच बैटरी 45वॉट फास्ट चार्जिंग सपोर्ट करती है। एक अन्य सैमसंग फोन में 50एमपी सेल्फी, 50एमपी मेन कैमरा, 5एमपी अल्ट्रावाइड और 2एमपी डेप्थ लेंस के साथ शानदार कैमरा अनुभव मिलता है। 6.7 इंच डिस्प्ले और 120 एचझेड रिफ्रेश रेट के साथ यह फोन भी 45वॉट चार्जिंग सपोर्ट करता है। मालूम हो कि वीडियो शूटिंग और सोशल मीडिया के दौर में लोग अब ऐसे स्मार्टफोन को प्राथमिकता दे रहे हैं जिनमें कैमरा क्वॉलिटी जबर्दस्त हो, खासकर सेल्फी कैमरा। ऐसे ग्राहकों के लिए ये स्मार्टफोन उपयोगी साबित हो सकते हैं।

विमान हादसे के पीड़ितों के दावों का निपटान करना बीमा कंपनियों के लिए चुनौती

अहमदाबाद।

अहमदाबाद में हुए एयर इंडिया विमान हादसे के पीड़ितों के दावों का निपटान करना बीमा कंपनियों के लिए चुनौती है। वजह ये है कि कई मामलों में पॉलिसीधारक और उसके नामित व्यक्ति (नॉमिनी), दोनों ही इस त्रासदी में मारे गए हैं। अहमदाबाद में 12 जून को हुई भयावह दुर्घटना में पूरे परिवार के खत्म हो जाने या पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाने के मामले सामने आए हैं। इस विमान में सवार 241 लोगों और जमीन पर मौजूद 29 लोगों की जान चली गई थी।

हालांकि हादसे के तुरंत बाद, भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (इरडा) ने बीमा कंपनियों से कहा कि वे विदेशी चिकित्सा बीमा, व्यक्तिगत दुर्घटना और जीवन बीमा पॉलिसियों के जारी करने संबंधी अपने आंकड़ों से मृतक के विवरण का सत्यापन करें। परामर्श में यह भी कहा गया कि यात्रियों की सूची में शामिल पुष्टिकृत मृत व्यक्तियों तथा दुर्घटना से प्रभावित इमारतों में रहने वाले व्यक्तियों के मामले में प्रक्रियात्मक औपचारिकताओं के कारण किसी भी दावे को अस्वीकार या विलंबित नहीं किया जाएगा। एलआईसी के एक अधिकारी ने बताया कि कंपनी को अब तक 10 दावे प्राप्त हुए हैं।

एक मामला ऐसा भी है, जिसमें बीमित व्यक्ति ने अपने जीवनसाथी को नामित किया था और दुर्घटना में दोनों की मौत हो गई। इफ्को टोकियो इंश्योरेंस के प्रबंधक ने भी एक ऐसे मामले का जिक्र किया जिसमें एक कंपनी के निदेशक और उनकी नामित पत्नी दोनों की विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई। टाटा एआईजी के अधिकारी ने कहा कि उन्हें अब तक सात क्लेम प्राप्त हुए हैं, जिनमें से एक ऐसा मामला है जिसमें मृतक ने अपने जीवनसाथी को नामित किया था और उसकी भी विमान दुर्घटना में मृत्यु हो गई। बीमा कंपनी के अधिकारी ने कहा, अगर बीमाधारक और नामांकित व्यक्ति, दोनों की मृत्यु हो गई है, तो हम श्रेणी-1 के वारिसों की तलाश करते हैं, जो आमतौर पर बच्चों जैसे रक्त संबंधी होते हैं। यदि कई बच्चे हैं, तो हम वारिसों से एक घोषणापत्र लेते हैं कि दावे का निपटान कैसे किया जाना है और कंपनी को क्षतिपूर्ति बॉन्ड जमा करना होता है। उनकी कंपनी की कानूनी टीम इस बात पर विचार कर रही है कि क्या उन मामलों में उत्तराधिकारियों की संयुक्त घोषणा मांगी जा सकती है, जहां बीमाधारक और नामित व्यक्ति, दोनों की मृत्यु हो गई हो।

सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट

नई दिल्ली। घरेलू बाजार में गुरुवार को सुबह सोने और चांदी की कीमतों में गिरावट आई है। इन दोनो के वायदा भाव आज नीचे आये हैं। युबह घरेलू बाजार में सोने की कीमत 99,300 रुपये, जबकि चांदी 1,08,400 रुपये थी। वहीं अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी सोने और चांदी की कीमतों में कमी आई है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का बेंचमार्क अगस्त अनुबंध 335 रुपये टूटकर 99,202 रुपये के भाव पर खुला। इसका पिछ्ला बंद भाव 99,537 रुपये था। एक समय यह अनुबंध 247 रुपये नीचे आकर 99,290 रुपये के भाव पर था। ये 99,304 रुपये के भाव पर दिन के उच्च और 99,152 रुपये के भाव पर दिन के निचला स्तर पर पहुंचा। सोने के वायदा भाव इस साल 1,01078 रुपये के भाव पर सर्वोच्च स्तर पर पहुंचे थे। चांदी के वायदा भाव की शुरुआत भी कमजोर रही। एमसीएक्स पर चांदी का बेंचमार्क जुलाई अनुबंध 405 रुपये नीचे आकर 1,08,161 रुपये पर खुला। वहीं इसका पिछ्ला बंद भाव 1,08,566 रुपये था। एक समय यह अनुबंध 179 रुपये टूटकर 1,08,387 रुपये के भाव पर कामकाज कर रहा था। दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय बाजार में आज सोने चांदी के वायदा भाव में कमी आई है। कामेक्स पर सोना 3,387.10 डॉलर प्रति औंस पर खुला। इसका पिछ्ला बंद भाव 3,408.10 डॉलर प्रति औंस था। वहीं एक समय यह 15.50 डॉलर की कमी के साथ ही 3,392.60 डॉलर प्रति औंस के भाव पर कामकाज कर रहा था। सोने के वायदा भाव इस साल 3,509.90 डॉलर के शीर्ष स्तर पर पहुंचे हैं जबकि कॉमेक्स पर चांदी के वायदा भाव 36.75 डॉलर के भाव पर खुले। इसका बंद भाव 36.91 डॉलर था।

राहुल गांधी के 'मिशन बिहार' को बड़ा झटका- अब कांग्रेस क्या करेगी?

संतोष कुमार पाठक

बिहार में वर्ष 2020 में हुए पिछले विधानसभा चुनाव में महागठबंधन के सबसे बड़े दल के तौर पर राजद 144 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। जबकि कांग्रेस के खाते में 70 सीटें आई थी। सीपीआई-माले 19, सीपीआई 6 और सीपीएम 4 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ी थी।

कांग्रेस पार्टी को देशभर में मजबूत बनाने के अभियान में जुटे राहुल गांधी पिछले कुछ महीनों से लगातार बिहार का दौरा कर रहे हैं। वर्ष 2025 में वह अब तक कुल मिलाकर पांच बार बिहार का दौरा कर चुके हैं। अपने इन दौरे के दौरान कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष ने बिहार के दलित मतदाताओं, अन्य पिछड़ी जाति के लोगों और अत्यंत पिछड़ी जाति के लोगों के साथ-साथ युवाओं और महिलाओं के साथ संवाद कर,उन्हें साधने की कोशिश की। पार्टी संगठन को धार और नई रफ्तार देने के लिए उन्होंने प्रदेश प्रभारी और प्रदेश अध्यक्ष से लेकर जिला अध्यक्षों तक को बदल दिया।

जाहिर तौर पर, राहुल गांधी अपनी इन तमाम कोशिशों के जरिए बिहार में कांग्रेस पार्टी को मजबूत बनाने की रणनीति पर ही काम कर रहे थे। इसका एक मकसद और भी था कि बिहार में होने वाले आगामी विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी विपक्षी इंडिया गठबंधन (महागठबंधन) में ज्यादा से ज्यादा सीटें हासिल कर सकें।

लेकिन राहुल गांधी के इस 'मिशन बिहार' को उनके अपने ही सहयोगी दल राष्ट्रीय जनता दल ने बड़ा झटका दे दिया है। लालू यादव के फॉमूर्ले ने कांग्रेस पार्टी को बेचैन कर दिया है। कांग्रेस 2020 की तरह इस बार भी 70 विधानसभा सीटों पर ही चुनाव लड़ना चाहती है लेकिन राजद ने इतनी सीटें देने से साफ-साफ इनकार कर दिया है। यानी अब यह तय हो गया है कि विपक्षी महागठबंधन में कांग्रेस को इस बार 2020 की तरह 70 सीटें नहीं मिलेगी। गठबंधन और सीटों को लेकर होने वाली बैठकों की अध्यक्षता भले ही तेजस्वी यादव कर रहे हो लेकिन पर्दे के पीछे से सब कुछ लालू यादव ही तय कर रहे हैं। सूत्रों के मुताबिक, राजद ने यह साफ कर दिया है कि राजनीतिक दलों की संख्या और क्षमता के आधार पर गठबंधन में कांग्रेस को लगभग 53 सीटें ही मिल सकती है।

बिहार में वर्ष 2020 में हुए पिछले विधानसभा चुनाव में महागठबंधन के सबसे बड़े दल के तौर पर राजद 144 सीटों पर चुनाव लड़ी थी। जबकि कांग्रेस के खाते में 70 सीटें आई थी। सीपीआई-माले 19, सीपीआई 6 और सीपीएम 4 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ी थी। पिछले विधानसभा चुनाव में एनडीए गठबंधन के साथ चुनाव लड़ने वाले मुकेश सहनी की विकासशील इंसान पार्टी भी इस बार विपक्षी गठबंधन का हिस्सा है। एक तरफ जहां मुकेश सहनी की पार्टी को सीट बंटवारे में एडजस्ट करने की चुनौती है वहीं लेफ्ट फ्रंट के दल खासकर सीपीआई-माले सीट बढ़ाने की मांग को लेकर अड़ गया है। ऐसे में लालू यादव भी अपनी पार्टी के कोटे को घटाने पर तैयार हो गए हैं। लेकिन वो किसी भी कीमत पर 140 से कम पर जाने को तैयार नहीं है।

सूत्रों के मुताबिक, तेजस्वी यादव ने कांग्रेस के सामने जो पहला फॉमूर्ला रखा है उसके तहत आरजेडी 144 की बजाय 140 सीटों पर चुनाव लड़ेगी। पिछली बार की तरह ही इस बार भी सीपीआई को 6 और सीपीएम को 4 सीटें ही दी जाएगी। लेकिन सीपीआई-माले को 6 सीटें बढ़ाकर 25 सीटें दी जा सकती है। मुकेश सहनी की पार्टी वीआईपी को 15 सीटों पर लड़ाया जाएगा। वहीं पिछली बार 70 सीटों पर चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस को इस बार 53 सीटों के आसपास ही संतोष करना पड़ेगा। इस फॉमूर्ले में 2-3 सीटों का हेरफेर किया जा सकता है।

लेकिन अगर आने वाले दिनों में पशुपति पारस, असदुद्दीन ओवैसी, हेमंत सोरेन और अखिलेश यादव को भी बिहार में होने वाले विधानसभा चुनाव के मद्देनजर गठबंधन में शामिल किया गया तो फिर सभी दलों को त्याग करना पड़ेगा। ऐसे हालात में, कांग्रेस के हाथ में सिर्फ 45-46 सीटें ही आ पाएंगी। यानी लालू यादव के पहले फॉमूर्ले के तहत कांग्रेस को 53-55 और दूसरे फॉमूर्ले के तहत सिर्फ 45-46 सीटें ही मिल सकती है।

आपको याद दिला दें कि, वर्ष 2020 में हुए पिछले विधानसभा चुनाव के दौरान राजद मुखिया लालू यादव जेल में थे। यह आरोप लगाया जाता है कि लालू यादव के जेल में रहने का फायदा उठाते हुए कांग्रेस ने तेजस्वी यादव पर दबाव डालकर गठबंधन में 70 सीटें झटक ली। लेकिन 70 सीटों पर चुनाव लड़ने वाली कांग्रेस सिर्फ 19 सीटों पर ही जीत हासिल कर पाई। लालू यादव और तेजस्वी यादव सहित विपक्षी गठबंधन के कई नेताओं का यह मानना है कि कांग्रेस के खराब प्रदर्शन के कारण ही बिहार में नीतीश कुमार फिर से मुख्यमंत्री बनने में कामयाब हो गए थे।

लालू यादव 2020 के विधानसभा चुनाव के समय पर जेल में थे लेकिन इस बार बाहर है और सीट बंटवारे के अपने फॉमूर्ले पर अडिग है।

राजद के इस फॉमूर्ले ने कांग्रेस नेताओं को दुविधा की स्थिति में डाल दिया है। अब गेंद राहुल गांधी के पाले में है कि वह इतनी ही सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए तैयार हो जाएं या सीधे लालू यादव से बात करके कांग्रेस के कोटे की सीटों की संख्या को बढ़ाने का प्रयास करें। हालांकि बिहार में कांग्रेस के कई नेता दबी जुबान में एक तीसरे विकल्प की बात भी कर रहे हैं। तीसरा विकल्प यानी राहुल गांधी बिहार में अन्य छोटे-छोटे दलों को साथ लेकर तीसरा मोर्चा बनाए और बड़े भाई की भूमिका में चुनाव लड़ जाएं।

संपादकीय

ट्रंप की नूराकुश्ती

मध्य-पूर्व में अमेरिका और इस्राइल को नया शिकार मिल गया है। ट्रंप और नेतनयाहू की जुगलबंदी से ईरान तबाही की ओर बढ़रू रहा है। अलग-थलग पड़. चुका ईरान कितना प्रतिरोध कर पाएगा यह तो भविष्य ही बताएगा क्योंकि जहां से मदद की उसे उम्मीद थी वह रूस तीन साल से यूक्रेन से पार नहीं पा सका है, और चीन इस्राइल को संयम रखने वाली नसीहतें देकर काम चला रहा है। इस समय दुनिया की जो हालत है उसमें सबने अपने-अपने टारगेट तय किए हुए हैं, चीन को भी कालांतर में ताइवान से निपटना है। ट्रंप की चेतावनियों से तो लगता है कि अमेरिका युद्ध में कूद ही पड़ा है। अमेरिका पहले अपने शत्रु तैयार करता है और फिर विध्वंसक रासायनिक, परमाणु हथियार बनाने और लोकतंत्र हनन के अनर्गल आरोप लगा कर लड़ाई करता है। इराक, अफगानिस्तान, लीबिया और सीरिया की तबाही इसके ज्वलंत उदाहरण हैं। दरअसल, अमेरिका की मजबूत हथियार लॉबी, जो नये-नये हथियार ईजाद करती है, के हथियारों का कहीं परीक्षण भी तो होना चाहिए। युद्ध के बहाने हथियारों का परीक्षण हो जाता है और कई देश दहशत में भी आ जाते हैं। हथियारों की बिक्री का यह उसका आजमाया हुआ तरीका है। इस्राइल की मदद के बहाने अमेरिका ईरान के पीछे पड़ा है जो ईरान उसके साथ पांच दौर की परमाणु वार्ता कर चुका था, छठे दौर की वार्ता से ठीक पहले अमेरिका ने इस्राइल को उकसा कर हमला करवा दिया। ईरान परमाणु हथियार विकसित करने का सपना छोड़. कर परमाणु के शांतिपूर्ण इस्तेमाल पर सहमत होने ही वाला था कि इस्राइल ने युद्ध छेड़. दिया। इस खेल में ट्रंप की मिलीभगत है। ट्रंप अब ईरानियों को तेहरान छोड़.जाने की चेतावनी दे रहे हैं। वह अब खेल को लोकतंत्र स्थापना के नाम पर खेलना चाहते हैं। ईरान के शीर्ष नेता खामेनेई को उन्होंने विलेन घोषित कर दिया है और ईरानी जनता को खामेनेई से मुक्ति दिलाने के बहाने भड़काने की पूरी तैयारी है। इसी के चलते ट्रंप यह जानने का दावा भी कर रहे हैं कि खामेनेई कहां छिपे हैं। यह युद्ध अब पूरी तरह प्रोपेगैंड़ा के आधार पर लड़ा जा रहा है। इसमें पश्चिमपरस्त मीड़िया की अहम भागीदारी है। इस्राइल और अमेरिका के दावों को तो बढ़ा-चढ़ा कर बताया-दिखाया जा रहा है। ईरान में हुए नुकसान को ही मिर्च मसाला लगा कर बताया जा रहा है जबकि ईरान का प्रतिरोध और इस्राइल में हो रही क्षति की बातें कम करके बताई जा रही हैं। ट्रंप मामले में खालिश नूराकुश्ती कर रहे हैं, और विश्वसनीय नहीं रहे।

कटाक्ष/सहीराम

फिर मौका है

लो जी, एक बार फिर मौका आ गया वॉर रुकवाने का। यह मौका अमेरिका को तो जी गाहे-बगाहे मिल ही जाता है। आखिर तो वह अमेरिका है। और अमेरिका का राष्ट्रपति अगर ट्रंप हो तो फिर वह मौका न भी मिले तो छीन लेता है। जैसे इधर हमारा पाकिस्तान से जो नन्हा सा युद्ध हुआ, उसे रोकने का श्रेय उसने न हमें लेने दिया और न ही पाकिस्तान को। बोला-इसका श्रेय तो मैं ही लूंगा। तुम नहीं लेने दोगे तो मैं जबर्दस्ती लूंगा। शोर मचा दूंगा। हल्ला काट दूंगा। क्या कर लोगे। आखिर तो मैं अमेरिका ही नहीं, ट्रंप भी तो हूं। कुछ लोग इसे करेला और नीम चढ़ा भी कह सकते हैं। तो अमेरिका को तो यह मौका मिलता ही रहता है। क्योंकि न तो वह दुनिया में युद्ध रुकने देता है और न ही चौधराहट छोड़ता है। कोई उसे विश्व दरोगा कहता है, कोई उसे दुनिया का चौधरी कहता है। पता नहीं आखिर वह बला क्या है।

लेकिन अब तो यह मौका एक फिर से हमें भी मिल रहा है। एक बार पहले जब रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवाने का मौका मिला था तो वह यूक्रेन में फंसे अपने छात्रों के बहाने से मिला था। पता नहीं किसकी नजर लगी कि वह श्रेय हमें मिल नहीं पाया। फिर अभी हम ट्रंप भी तो नहीं हुए कि श्रेय जबर्दस्ती ले लें। लोग कह रहे हैं कि हो सकता है यह नजर मणिपुर की ही लगी हो। अब उन्हें कौन बताए कि जिस मणिपुर को खुद ही किसी की नजर लगी हो, वह किसी और को क्या नजर लगाएगा भला। फिर भी जलकुकड़े कहने से बाज नहीं आए कि मणिपुर की मार-काट तो रुकवा नहीं पा रहे। उसके बाद तो खैर हमारा अपना ही पाकिस्तान से युद्ध हो गया। वॉर रुकवाने से वॉर करने तक का सफर यूं रहा।

अब इसे मेहरबानी तो किस की कहें, पर एक बार फिर वॉर रुकवाने का मौका मिल रहा है। खैर बहाना एक बार फिर से छात्र ही बन रहे हैं। अब ईरान में भी हमारे छात्र फंसे हुए हैं। जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध रुकवा कर-जैसा कहा गया-उन छात्रों को निकाला गया था, वैसे ही अब इन छात्रों को भी निकाल ही लेना चाहिए। फिर जैसे पुतिन और जेलेंस्की से दोस्ती थी, वैसी ही दोस्ती बीबी-यानी नेतन्याहू और ईरानी नेताओं-से भी है ही। एक से थोड़ी ज्यादा गाढ़ी होगी तो दूसरों से थोड़ी हल्की होगी। दुनिया घूमने का आखिर, इतना फायदा तो होना ही चाहिए। नहीं क्या?

विश्व शरणार्थी दिवस : मान्यता के माध्यम से एकजुटता

किशन सनमुखदास भावनानीं

वैश्विक स्तरपर हर वर्ष विश्व शरणार्थी दिवस 20 जून को मनाया जाता है जिसकी प्रतिवर्ष एक थीम होती है,जो 20 जून 2025 की थीम मान्यता के माध्यम से एकजुटता है।असल में,दुनिया भर में एक बड़ी संख्या में शरणार्थी रहते हैं। इनके साथ आए दिन प्रताड़ना, संघर्ष और हिंसा जैसी कई चुनौतियों के कारण इनको अपना देश छोड़कर बाहर भागने को मजबूर होना पड़ता है। जिसके बाद इन सभी को कई देशों में पनाह मिल जाती है। वहीं, कई देशों से इनको निकाल भी दिया जाता है। बेशक इन्हें पनाह मिल जाए, लेकिन वो सम्मान और अधिकार नहीं मिल पाते।शरणार्थी के साहस, शक्ति और संकल्प के प्रति सम्मान व्यक्त करना है। इसके साथ ही इस दिन को मनाये जाने का एक अन्य उद्देश्य शरणार्थियों की बुरी दुर्दशा की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करना और उनकी समस्याओं का हल करना है,संयुक्त राष्ट्र 1951 शरणार्थी सम्मेलन और इसके प्रोटोकाल 1967, हालांकि भारत अमेरिका ने इसपर हस्ताक्षर नहीं किए हैं,परंतु इसके अनुसार शरणार्थी सम्मेलन और इसका 1967 प्रोटोकॉल अत्यंत महत्वपूर्ण है शरणार्थी दुनियाँ के सबसे कमजोर लोगों में से हैं। यह सम्मेलन और प्रोटोकॉल उनकी सुरक्षा में मदद करता है। वे एकमात्र वैश्विक कानूनी साधन हैं जो स्पष्ट रूप से एक शरणार्थी के जीवन के सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं को कवर करते हैं। उनके प्रावधानों के अनुसार, शरणार्थी, कम से कम, किसी दिए गए देश में अन्य विदेशी नागरिकों के साथ व्यवहार के समान मानकों के पात्र हैं और, कई मामलों में,नागरिकों के समान व्यवहार।1951 के कन्वेंशन में कई अधिकार शामिल हैं और यह अपने मेजबान देश के प्रति शरणार्थियों के दायित्वों पर भी प्रकाश डालता है। 1951 के कन्वेंशन की आधारशिला गैर-रिफाउलमेंट का सिद्धांत है। इस सिद्धांत के अनुसार, एक शरणार्थी को उस देश में नहीं लौटाया जाना चाहिए जहां उसे अपने जीवन या स्वतंत्रता के लिए गंभीर खतरा है। शरणार्थियों द्वारा इस सुरक्षा का दावा नहीं किया जा सकता है,जिन्हें देश की सुरक्षा के लिए उचित रूप से खतरा माना जाता है, या विशेष रूप से गंभीर अपराध के लिए दोषी ठहराया गया है,उन्हें समुदाय के लिए खतरा माना जाता है। परंतु मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भाववाणी गोंदिया महाराष्ट्र, यह मानता हूं कि अभी 1951 सम्मेलन तथा 1967 के प्रोटोकॉल को संशोधन करने की जरूरत आन पड़ी है? क्योंकि वर्तमान समय में हम अमेरिका- भारत-पाकिस्तान सहित अनेकों देशों में हो रहे गंभीर दंगों व आवर्जन विवादों के कारण माहौल दंगों में बदलने की संभावना हो गई है?भारत का ऑपरेशन पुशबैक व अमेरिका का टारगेट@3000 से दंगा भड़क उठा है,इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे वैश्विक परिपेक्ष में जबरन स्वार्थी पलायन शरणार्थी बनाम भय उत्पीड़न हिंसा व पर्यावरणीय जलवायु परिवर्तन शरणार्थी।

साथियों बात अगर हम अमेरिका की करें तो,वहां भी घुसपैठ का हाल कमोबेश ऐसा ही है। यह जब एक बार घुसपैठिया अंदर आ जाता है तो उसको डिपोर्ट करना भी इसी तरह एक लंबा और विवादास्पद मामला बन जाता है। अमेरिका में लॉस एंजिल्स न्यूयॉर्क और सैन फ्रांसिस्को जैसे कुछ ऐसे शहर हैं,जहाँ अधिकारियों को इन घुसपैठियों से पूछताछ करने या उन्हें हिरासत में लेने की अनुमति नहीं है। ये शहर डिपोर्ट करने के आदेशों या पुलिस के साथ सहयोग करने से साफ इनकार करते हैं, उन्हें कानून प्रवर्तन के राजनीतिक हथियार के रूप में देखते हैं।जून 2025 की शुरूआत से लॉस एंजिल्स में इसी से जुड़ा एक नाटक चल रहा है। यहाँ घुसपैठियों पर जब एक्शन चालू हुआ तो इसके विरोध में प्रदर्शन होने लगे। पुलिस ने इन प्रदर्शनकारियों पर आंसू गैस और रबर की गोलियाँ चलाईं। यहाँ इसके बाद यूनियन नेता को गिरफ्तार कर लिया गया, सरकार ने इसके बाद टाइटल 10 कानून के तहत 4,000 नेशनल गार्ड सैनिकों और 700 मरीन को तैनात करके जवाब दिया। इसके बाद तो बवाल और बढ़ा। कई कारों को जला दिया गया, सड़कों को अवरुद्ध कर दिया गया, कई पत्रकारों को घायल कर दिया गया। इस पूरे बवाल से ट्रंप सरकार की घुसपैठियों को लेकर नीति और किसी शहर को उनके लिए स्वर्ग बनाने की राजनीति माना जा सकता है। इन सब चक्करों में डिपोर्टेशन और भी कठिन हो जाता है। भले ही अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति सख्त सीमा प्रवर्तन और भूमि से अवैध अप्रवासियों को हटाने के लिए जोर दे रहे हैं, लेकिन कानूनी प्रणाली और कुछ विशिष्ट शहर इससे कड़ी लड़ाई लड़ रहे हैं।

साथियों बात अगर हम भारत की करें तो यहाँ भी वर्तमान में ऑपरेशन पुशबैक चल रहा है। इसके तहत बांग्लादेशी घुसपैठियों को वापस भेजने का प्रयास हो रहा है। यह कार्रवाई अभी कुछ हजार लोगों तक ही सीमित है।भारतीय फैशन,असल में एक बार जब अवैध प्रवासी किसी देश में प्रवेश कर जाते हैं तो चाहे वह भारत हो, अमेरिका फिर या यूरोप के देश, तो उन्हें वापस भेजना कानूनी अड़चन, राजनीतिक विरोध और एक्टिविज्म का एक चक्रव्यूह बन जाता है। कायदा तो यह होना चाहिए कि किसी देश में अवैध रूप से रहने वालों को उठा कर सीधे वापस भेज दिया जाना चाहिए। हालाँकि, यह लंबी अदालती लड़ाइयों, एक्टिविज्म और कानूनी दाँवपेंच में बदल गया है। दिलचस्प बात यह है कि जहाँ भारत जैसे देशों में घुसपैठियों को बाहर निकालना मुश्किल का काम है, वहीं पाकिस्तान धड़ाधड़ अफगानिस्तान के लोगों को निर्वासित कर रहा है। रिपोर्ट बताती है कि फरवरी 2025 तक, पाकिस्तान ने 8 लाख से ज्यादा अफगानों को बिना किसी बवाल के डिपोर्ट कर दिया है।

साथियों बात अगर हम भारत अमेरिका के 1951 के शरणार्थी सम्मेलन व1967 के प्रोटोकॉल में शामिल नहीं होने की करें तो, भारत शामिल नहीं है। इसका मतलब है कि भारत कानूनी रूप से इन अंतर्राष्ट्रीय समझौतों द्वारा बाध्य नहीं है, जो शरणार्थियों के अधिकारों को परिभाषित करते हैं और देशों को उन्हें वापस अपने देशों में भेजने से रोकते हैं। हालांकि, भारत ने हमेशा पड़ोसी देशों से आने वाले शरणार्थियों को मानवीय आधार पर स्वीकार किया है और उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया है। भारत का मानना है कि शरणार्थी समस्या एक द्विपक्षीय मुद्दा है और स्थिति सामान्य होने पर शरणार्थियों को अपने देशों में वापस लौट जाना चाहिए। भारत में शरणार्थियों के लिए कोई विशिष्ट कानून नहीं है, लेकिन संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत, सभी व्यक्तियों को जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार है, चाहे वे भारत के नागरिक हों या नहीं। इसका मतलब है कि शरणार्थियों को भी इस अधिकार से सुरक्षा मिलती है, और उन्हें मनमाने ढंग से वापस नहीं भेजा जा सकता है। भारत में शरणार्थी समस्या के समाधान के लिए एक स्पष्ट शरणार्थी नीति की आवश्यकता है जो शरणार्थियों के प्रबंधन के लिएपारदर्शी और जवाबदेह व्यवस्था का निर्माण करे। अमेरिका 1951 के अंतर्राष्ट्रीय शरणार्थी सम्मेलन में शामिल नहीं है, लेकिन उसने 1967 के प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए हैं, 1967 का प्रोटोकॉल 1951 के सम्मेलन के दायरे को व्यापक बनाता है,इसका मतलब है कि अमेरिका ने शरणार्थियों की स्थिति से संबंधित कुछ दायित्वों को स्वीकार किया है, लेकिन सभी दायित्वों को नहीं, 1951 का शरणार्थी सम्मेलन शरणार्थियों की परिभाषा और उन्हें प्रदान किए जाने वाले अधिकारों को निर्धारित करता है, 1980 का शरणार्थी अधिनियम अमेरिकी आव्रजन कानून में शरणार्थी की परिभाषा और शरण की प्रक्रिया को शामिल करता है. इस अधिनियम में, अमेरिका ने 1967 के प्रोटोकॉल के तहत अपने दायित्वों को पूरा करने की बात कही है। साथियों बात अगर हम सही अर्थों में शरणार्थी दिवस के समर्पित पीड़ितों की करें तो, बता दें कि विश्व शरणार्थी दिवस उन लोगों के लिए समर्पित दिन है, जो किसी मजबूरी के कारण अपने घर से बाहर रहने के लिए मजबूर होते हैं और वहां पर कई तरह की परेशानियों का सामना करते हैं. दुनियाभर के कई देशों में देखा गया है कि लोग आपदा, बाढ़, किसी महामारी,युद्ध के कारण,हिंसा समेत अन्य कारणों से अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर हुए हैं. संयुक्त राष्ट्र ने विश्व भर में ऐसे लोगों के मदद और उनके संघर्षों के लिए इस दिन को उनके लिए समर्पित किया है. इतना ही नहीं इन शरणार्थी को प्रेरित किया जाता है, वह दूसरे देशों में जाकर खुद के जीवन को दोबारा से शुरू कर सकते हैं. जिससे उन्हें और उनके परिवार को वहां पर नया जीवन मिले और उन्हें जीवन जीने के लिए बेहतर सुविधाएं भी मिल सके।

अतः अगर हम अपरूप पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि विश्व शरणार्थी दिवस 20 जून 2025 - मान्यता के माध्यम से एकजुटता वैश्विक बदलते परिपेक्ष में जबरन स्वार्थी पलायनशरणार्थी बनाम भय उत्पीड़न हिंसा व पर्यावरणीय जलवायु परिवर्तन पीड़ित शरणार्थी।दुनियाँ की बदलती परिस्थितियों से क्या अंतरराष्ट्रीय शरणार्थी सम्मेलन 1951व इसके प्रोटोकॉल 1967 के संशोधन की जरूरत नहीं?भारत के ऑपरेशन पुशबैक व अमेरिका के टारगेट@3000 इसके सटीक उदाहरण हैं।

मुद्दा: ड़िजिटल होगी जाति जनगणना

प्रमोद भार्गव

दुनिया की सबसे बड़ी आबादी की जनगणना की अधिसूचना जारी हो गई है। कोविड महामारी के कारण 2021 में होने वाली यह जनगणना अब शुरू होगी। कांग्रेस समेत पूरा विपक्ष जातिवार जनगणना कराने की मांग कर रहा था। अचानक मोदी सरकार ने जातिवार जनगणना कराने का फैसला लेकर उसे चौंका दिया क्योंकि अब यह मुद्दा हमेशा के लिए समाप्त हो जाएगा। सभी वर्गों की प्रमुख जातियों के साथ उपजातियों की जनगणना के आंकड़े जब सामने आएंगे, तब यह भी स्पष्ट हो जाएगा कि सैद्धांतिक रूप से जातिगत गणना कराना उचित था या नहीं?

ई-बाजार, ई-आवेदन, ई-रेल व बस में आरक्षण ई-भुगतान के बाद अब ई-जनगणना यानी डिजिटल गिनती होगी। इस गिनती में जाति की गिनती भी साथ-साथ होगी। इसमें जन्म और मृत्यु, दोनों ही डिजिटल जनगणना से जुड़े होंगे। हर जन्म के बाद डिजिटल जनगणना खुद ही अद्यतन हो जाएगी और जब किसी की मृत्यु होगी तो उसका नाम खुद ही डाटा से डिलीट हो जाएगा। सेंसर रजिस्टर यानी जनगणना में बच्चे के जन्म, माता-पिता, जाति और जन्म स्थान की जानकारी समेत 16 भाषाओं में 36 प्रश्नों के उत्तर दर्ज हो जाएंगे। बालक जब 18 साल का होगा तो खुद ही उसका नाम चुनाव आयोग के पास चला जाएगा। नतीजतन, उसका मतदाता पहचान पत्र बनने के साथ मतदाता सूची में भी नाम स्वयमेव दर्ज हो जाएगा। फिर जब किसी की मौत हो जाएगी तो ऑनलाइन जनगणना के डाटा से उस शख्स का नाम खुद ही डिलीट भी हो जाएगा। इस तरह से जनगणना का डाटा हमेशा खुद अद्यतन होता रहेगा। राष्ट्रीय जनसंख्या रजिस्टर (एनपीआर) की प्रक्रिया पर करीब 12000 करोड़ रुपये खर्च होंगे। डिजिटल जनगणना की घोषणा 1 फरवरी, 2021 को वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने की थी। जनगणना-2021 में नागरिकों को गणना में शामिल होने की एक बेहतर और अनूठी ऑनलाइन सुविधा दी गई है।

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने भारतीय नागरिकों को ऑनलाइन स्व-गणना का अधिकार देने के लिए नियमों में परिवर्तन किए हैं। जनगणना (संशोधन), 2022 के अनुसार परंपरागत तरीके से तो जनगणना घर-घर जाकर सरकारी कर्मचारी करेंगे ही, लेकिन अब नागरिक स्व-गणना के माध्यम से भी अनुसूची प्रारूप भर सकता है। इसके लिए पूर्व नियमों में 'इलेक्ट्रॉनिक फार्म' शब्द जोड़ा गया है, जो सूचना प्रौद्योगिकी कानून, 2000 की धारा दो की उपधारा (एक) के खंड आर में दिया गया है। इसके अंतर्गत मीडिया, मैग्नेटिक, कंप्यूटरजनित माइक्रोचिप या इसी तरह के अन्य उपकरण में तैयार कर भेजी या संग्रहित की गई जानकारी को इलेक्ट्रॉनिक फार्म में दी गई जानकारी माना जाएगा यानी एनरायड मोबाइल से भी अपनी गिनती दर्ज की जा सकेगी, जो आजकल घर-घर में उपलब्ध है। इस ऑनलाइन प्रविष्टि के अलावा घर-घर जाकर भी जनगणना की जाएगी। गिनती के विकेंद्रीकरण के इस नवाचार से देश जहां 10 साला जनगणना की बोझिल परंपरा से मुक्त होगा वहीं देश के पास प्रति माह प्रत्येक पंचायत स्तर से जीवन और मृत्यु की गणना के सटीक आंकड़े मिलते रहेंगे।

जनगणना में निरंतरता इसलिए भी जरूरी है कि देश-दुनिया में जनसंख्या वृद्धि विस्फोटक बताई जा रही है। संयुक्त राष्ट्र के मुताबिक दुनिया की जनसंख्या लगभग सात सौ करोड़ हो चुकी है। धरती पर जितनी तेजी से मानव समुदायों की आबादी उन्नसवीं सदी में बढ़ी है, उतनी तेजी से बढ़ोतरी पहले कभी दर्ज नहीं हुई। एक अनुमान के मुताबिक ईसवी सन एक में धरती पर कुल आबादी लगभग तीस करोड़ थी। अठारहवीं शताब्दी के अंत में दुनिया की जनसंख्या एक अरब के आंकड़े को भी पार नहीं कर पाई थी। इन शताब्दियों में जन्म दर की मात्रा अधिक होने के बावजूद जनसंख्या वृद्धि दर बेहद मंदी थी। प्रकृति पर निर्भर गर्भनिरोधकों से दूर और उपचार की आसान-सुलभ पद्धतियों से अनजान स्त्री-पुरुष बच्चे तो खूब पैदा करते थे, लेकिन उनमें से ज्यादातर मर जाया करते थे। बीमारियों की पहचान-उपचार से नियंत्रण के चलते बीसवीं शताब्दी के पहले ही तीन दशकों में आबादी दोगुनी होकर करीब पौने दो अरब के आंकड़े को छू गई थी।

हरेक दस साल में की जाने वाली जनता-जनार्दन की गिनती में करीब 34 लाख कर्मचारी जुटते हैं। छह लाख ग्रामों, पांच हजार कस्बों, सैकड़ों नगरों और दर्जनों महानगरों के रहवासियों के द्वार-द्वार दस्तक देकर जनगणना का कार्य करना कर्मचारियों के लिए जटिल होता है। यह काम तब और बोझिल हो जाता है, जब किसी कर्मचारी-दल को उसके स्थनीय दैनंदिन कार्य से दूर कर उसे दूरांचल गांव में भेज दिया जाता है। ऐसे हालात में गिनती की जल्दबाजी में वे मानव समूह छूट जाते हैं, जो आजीविका के लिए मूल निवास स्थल से पलायन कर जाते हैं। इन विस्थापितों का जनगणना के समय स्थायी ठिकाना कहां है, जनगणना करने आए दल को यह पता लगाना मुशकिल होता है?

3000 के फास्टैग पास का फायदा देश के कई शहरों को नहीं मिलेगा

–कई हाईवे और एक्सप्रेसवे राज्य या निजी कंपनियां कर रही हैं ऑपरेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। सड़क परिवहन मंत्रालय ने तीन हजार रुपए सालाना पास का ऐलान किया है। इससे सालभर में आप 200 ट्रिप एनएच के टोल प्लाजा से फ्री में गुजर सकते हैं। इससे उन लोगों को फायदा होगा, जो एनएच के टोल से गुजरते हैं, लेकिन देश में बहुत से एक्सप्रेस-वे और हाईवे ऐसे हैं, जिन पर आपको टोल चुकाना होगा। देश में कई हाईवे और एक्सप्रेसवे राज्य सरकारों या बीओटी मॉडल के तहत निजी कंपनियों द्वारा ऑपरेट किए जा रहे हैं।

बता दें यूपी में पूर्वांचल एक्सप्रेसवे, बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे, और आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे के तहत इसी तरह, महाराष्ट्र में मुंबई-नागपुर एक्सप्रेसवे भी एमएसआरडीसी द्वारा बीओटी मॉडल पर आपरेट हैं। ये सभी परियोजनाएं एनएचएआई से अलग हैं, इसलिए इन पर नया फास्टैग नियम लागू नहीं होगा। यूपी एक्सप्रेसवे औद्योगिक विकास प्राधिकरण राज्य के अधिकांश एक्सप्रेसवे का निर्माण और संचालन करता है। यूपी में गंगा एक्सप्रेसवे, लंबाई- 594 किमी यह राज्य सरकार की परियोजना है, इसलिए नया फास्टैग नियम इस पर लागू नहीं होगा। इसके अलावा पूर्वांचल एक्सप्रेसवे की लंबाई-340.8 किमी है। बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे की लंबाई 296 किमी आगरा-लखनऊ एक्सप्रेसवे की लंबाई 302 किमी शामिल है।

वहीं मुंबई-पुणे एक्सप्रेसवे, जिसे यशवंतराव चव्हाण एक्सप्रेसवे भी कहा जाता है, महाराष्ट्र राज्य सड़क विकास निगम द्वारा ऑपरेट किया जा रहा है। यह भारत का पहला छह-लेन एक्सप्रेसवे है, जिसका निर्माण बिल्ड-ऑपरेट-ट्रांसफर (बीओटी) मॉडल के तहत किया गया है चूंकि यह एनएचएआई के तहत नहीं आता है इसकी लंबाई 94.5 किमी है। मुंबई-नागपुर एक्सप्रेसवे लंबाई 701 किमी, मुंबई-वडोदरा एक्सप्रेसवे की लंबाई 379 किमी है।

कर्नाटक सड़क विकास निगम लिमिटेड और सार्वजनिक निर्माण विभाग प्रमुख परियोजनाओं का प्रबंधन करते हैं। बेंगलुरु-मैसूर एक्सप्रेसवे-लंबाई 119 किमी, शिवमोग्गा-हावेरी एक्सप्रेसवे- लंबाई 200 किमी प्रस्तावित है।

तमिलनाडु सड़क विकास कंपनी और राज्य राजमार्ग विभाग प्रमुख परियोजनाएं संचालित करते हैं। चेन्नई-बेंगलुरु एक्सप्रेसवे-लंबाई-262 किमी (तमिलनाडु हिस्सा)

ईस्ट कोस्ट रोड (ईसीआर)-लंबाई 160 किमी है। वहीं गुजरात राज्य सड़क विकास निगम कई परियोजनाएं संभालता है। अहमदाबाद-वडोदरा एक्सप्रेसवे-दलंबाई 93.1 किमी, राजकोट-जामनगर एक्सप्रेसवे लंबाई 117 किमी है आंध्र प्रदेश में अमरावती-अनंतपुर एक्सप्रेसवे (176 किमी, निर्माणाधीन)। केरल का कोच्चि-मदुरै एक्सप्रेसवे (227 किमी, प्रस्तावित) है।

भारी बारिश में कुआं ढहा, दो स्कूली छात्र मिट्टी में दबे

खूंटी (एजेंसी)। झारखंड के खूंटी जिले में भारी बारिश के कारण एक कुआं ढहने से दो स्कूली छात्र मिट्टी के नीचे दब गए। प्रशासन ने बताया कि मुरहू पंचायत में यह घटना तब हुई जब दोनों छात्र कुएं के करीब थे। प्रशासन ने बताया कि राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के एक दल को बचाव अभियान में तैनात किया है, लेकिन मिट्टी में दबे छात्रों का अभी पता नहीं चल सका है। भारी बारिश के कारण खूंटी के तोरपा में बनाई नदी पर पुल का एक हिस्सा भी ढह गया है जिससे खूंटी-सिमडेगा सड़क मार्ग बाधित हो गया है। एक अधिकारी ने बताया कि रांची सहित कई जिलों में भारी बारिश के कारण जनजीवन बाधित हो गया है। भारी बारिश के मद्देनजर बृहस्पतिवार को रांची और खूंटी सहित कई जिलों में स्कूल बंद किए गए हैं। एनडीआरएफ अधिकारियों ने बताया कि इन जिलों में किसी भी अप्रिय स्थिति से निपटने के लिए दल तैयार है। मौसम विभाग के एक अधिकारी ने बताया कि रांची में बीते दो दिन से मूसलाधार बारिश हो रही है और गुरुवार सुबह से तेज बारिश हो रही है। रांची मौसम विज्ञान केंद्र के उप निदेशक अभिषेक आनंद ने रांची, लोहरदगा, गुमला, खूंटी और सिमडेगा के लिए अत्यधिक भारी बारिश का 'रेड अलर्ट' जारी किया गया है।

असम में फिर एक गद्दार की गिरफ्तारी, पाकिस्तान के समर्थन में पोस्ट कर रहा था सफीकुल हक

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के अंदर भी कई दुश्मन नकाब पहन कर घूम रहे हैं, जो समय-समय पर देश के खिलाफ साजिश रचते हैं या साजिश रचने वालों की मदद करते हैं। पहलगाम हमले के बाद ज्योति मल्होत्रा रहित कई जासूसों को गिरफ्तार किया गया। इसी कड़ी में असम राज्य से अब तक सबसे ज्यादा गिरफ्तारियां इन गददरों की हुई है। सोशल मीडिया पर ''पाकिस्तान समर्थक और सांप्रदायिक पोस्ट'' साझा करने के आरोप में असम में एक और व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। राज्य में इसतरह के मामलों में अब तक गिरफ्तार किए गए लोगों की कुल संख्या 94 हो गई है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने यह जानकारी दी। सीएम शर्मा ने बताया कि आरोपी पर लगातार नजर रखी जा रही थी और नलबाड़ी से गिरफ्तार किया। मुख्यमंत्री ने पोस्ट कर बताया कि कामरूप पुलिस ने सफीकुल हक को गिरफ्तार किया है, जो अलग-अलग सिम कार्ड का इस्तेमाल कर फेसबुक पर पाकिस्तान के समर्थन में और सांप्रदायिक पोस्ट साझा कर रहा था।'' पुलिस ने उन लोगों के खिलाफ कार्रवाई शुरू की है, जो कथित तौर पर ''भारत विरोधी और पाकिस्तान समर्थक गतिविधियों'' में लिप्त हैं। विपक्षी 'ऑल इंडिया यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट' (एआईयूडीएफ) के विधायक अमीनुल इस्लाम को पाकिस्तान और पहलगाम आतंकवादी हमले में उसकी मिलीभगत का बचाव करने के लिए देशद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया था। इस मामले में जमानत मिलने के बाद उन पर रासुका के तहत मामला दर्ज किया गया।

भय के वातावरण के बाद अब पटरी पर लौट रहा जम्मू-कश्मीर का पर्यटन

श्रीनगर (एजेंसी)। पहलगाम आतंकी हमले के बाद जिस असुरक्षा और भय का वातावरण पैदा होने की बात कही जा रही थी, वह अब खत्म हो रहा है। कश्मीर तक वंदे भारत ट्रेन के चलने और अमरनाथ यात्रा से पर्यटन फिर पटरी पर लौटने लगा है, जिससे स्थानीय लोगों में खुशी का माहौल है। पर्यटकों की बढ़ती भीड़ और अमरनाथ यात्रा को देखते हुए सरकार ने बैसरन हमले के बाद बंद किए गए 50 पर्यटन स्थलों में से 16 को फिर खोल दिया है। उम्मीद की जा रही है कि सरकार अन्य पर्यटन स्थलों को भी जल्द ही खोल देगी। चंद दिनों में अमरेश्वर धाम की तीर्थयात्रा भी शुरू हो रही है। यह तीर्थयात्रा भी आतंकियों के निशाने पर रहती है। अगर तीर्थयात्रा आतंकी अपने किसी नापाक मंसूबे में सफल रहते हैं तो कश्मीर का पर्यटन पूरी तरह से पटरी से उतर जाएगा। ऐसा हुआ तो कश्मीर की अर्थव्यवस्था को भी बड़ा नुकसान पहुंचेगा। आम लोगों को भी ऐसे तत्वों के प्रति सचेत रहना होगा जो माहौल बिगाड़ने का षड्यंत्र रच रहे हैं। इसलिए सुरक्षातंत्र में किसी भी तरह के समझोते की गुंजाइश नहीं हैं।

बेंगलुरु में मिले मानव कंकाल से सनसनी, पुलिस ने फॉरेंसिक जांच के लिए भेजा

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक की राजधानी और भारत की सिलिकॉन वैली के नाम से मशहूर बेंगलुरु की एक हाउसिंग सोसाइटी में मानव कंकाल मिलने से सनसनी फैल गई है। मामले की जानकारी मिलते ही हरकत में आई स्थानीय पुलिस ने मानव खोपड़ी और कंकाल को जब्त कर छानबीन शुरू कर दी गई है। फिलहाल इसे फॉरेंसिक एनालिसिस के लिए भेजा गया है। जानकारी के अनुसार, बेंगलुरु के मिको लेआउट स्थित बेगूर के एक अपार्टमेंट परिसर क्रेडेंस फ्लोरा में रह रहे निवासियों को उस समय गहरा झटका लगा जब सफाई के दौरान परकोलेशन पिट (आमतौर पर बारिश का पानी इकट्ठा करने के लिए बनाया गया गड्ढा) से मानव खोपड़ी और हड्डियां बरामद हुईं। यह सनसनीखेज घटना 16 जून को उस समय सामने आई जब रेजिडेंट वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा सफाई का कार्य चलाया जा रहा था। इस मामले की शिकायत अध्यक्ष स्कारिया जॉन ने दर्ज कराई, जिसके आधार पर बेगूर पुलिस ने अननैचुरल डेथ का मामला दर्ज किया है। बरामद खोपड़ी और हड्डियों को आगे की जांच के लिए फोरेंसिक जांच के लिए भेजा गया है। पुलिस को एक्सपर्ट की रिपोर्ट का इंतजार है, जिससे मृतक की उम्र और मौत के समय से जुड़ी जानकारी सामने आ सकती है। स्कारिया जॉन ने अपनी शिकायत में बताया कि अपार्टमेंट परिसर में मौजूद 16 परकोलेशन पिट्स काफी समय से काम नहीं कर रहे थे, जिसके चलते नगर निकाय की ओर से नोटिस भी जारी हुए थे। इसी कारण पिट्स की सफाई के लिए एक ठेका दिया था। सफाईकर्मियों ने जब एक पिट को साफ करना शुरू किया, तो उसमें से उन्हें मानव अवशेष दिखाई दिए।

नक्सल मुक्त अभियान सफल हो रहा है, पर पीड़ितों की समस्याओं का समाधान कब होगा

नई दिल्ली। कांकेर(ईएमएस)। जिले के अति संवेदनशील नक्सल प्रभावित इलाकों से दिल को झकझोर देने वाली सच्चाई सामने आई है। यहां के कई ग्रामीण वर्षों से नक्सलियों के भय और उत्पीड़न का दंश झेलते आ रहे हैं। किसी ने अपने बेटे को खोया, किसी ने पति को, तो किसी ने अपनी बहन को नक्सल हिंसा में गंवा दिया। मजबूरीवश इन्हें अपना पुश्तैनी घर, खेत-खलिहान और पहचान छोड़कर दूसरे गांवों में शरण लेनी पड़ी। पीडित परिवारों का कहना है, ÷हम थक चुके हैं, लेकिन जब तक हमें पुनर्वास नीति के तहत नौकरी, मकान और बच्चों की शिक्षा नहीं मिलेगी, हम चुप नहीं बैठेंगे। हमने अपने जीवन के कीमती साल खो दिए, अब हमारी पीड़ा को समझिए।÷यह सिर्फ एक सरकारी योजना का सवाल नहीं है, यह इंसानियत, अधिकार और सम्मान की पुकार है।

सबसे बड़ा दर्द यह है कि जो लोग हाल ही में नक्सल हिंसा से पीड़ित हुए हैं, उन्हें तो सरकार की पुनर्वास नीति का लाभ तुरंत मिल रहा है, लेकिन जिन्होंने दशकों पहले सब कुछ खोया, वे आज भी दर-दर भटक रहे हैं। आज ये पीड़ित परिवार कांकेर एसपी कार्यालय पहुंचे और पुनः आवेदन दिया बस एक ही मांग के साथ कि हमें न्याय चाहिए, हमें सम्मान के साथ जीने का हक चाहिए। इन पीड़ित परिवारों को गांव छोड़े अब 20 साल से ज्यादा हो चुके हैं। वे आज भी अस्थाई झोपड़ियों में रह रहे हैं, बिना किसी स्थायी घर, रोजगार या बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था के। हालांकि शासन ने इन्हें नक्सल पीड़ित होने का प्रमाण पत्र दे दिया है, लेकिन इसका ठोस लाभ आज तक नहीं मिला।

संजय कपूर की मौत मधुमक्खी के काटने से नहीं हुई, विशेषज्ञ ने बताई वजह

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के जाने-माने बिजनेसमैन और बॉलीवुड एक्ट्रेस करिश्मा कपूर के पूर्व पति संजय कपूर की 12 जून को इंग्लैंड में पोलो मैच के दौरान मौत हो गई थी। इस मौत का कारण मधुमक्खी का डंक बताया जा रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पोलो मैच खेलने के दौरान उनके मुंह में मधुमक्खी चली गई जिसने डंक मार दिया था और उसकी वजह से संजय कपूर की मौत हुई। संजय कपूर के आखिरी शब्द भी यही थे कि मैंने कुछ निगल लिया है। मधुमक्खी के डंक के बाद दिल का दौरा पड़ने की वजह से संजय की मौत हो जाने के बाद यह मामला चर्चा का विषय बना गया है कि आखिर क्या मधुमक्खी का डंक इतना जहरीला होता है कि किसी की जान चली जाए या वजह कुछ और ही है। इसको लेकर एलर्जी विशेषज्ञ और आईएपी एलर्जी चैप्टर के चेयरपर्सन ने बताया कि संजय कपूर की मौत दिल का दौरा पड़ने से नहीं हुई है। दिल का दौरा उन्हें क्यों पड़ा यह जानने की जरूरत है। विशेषज्ञ ने बताया कि असल में संजय कपूर ने मधुमक्खी निगल ली थी और जिसने उनके मुंह में डंक मार दिया था और जानकारी यह भी मिल रही है कि संजय कपूर को पहले से ही मधुमक्खी के डंक से एलर्जी थी। ऐसे में संजय कपूर की जो मौत हुई है वह असल में एक गंभीर एलर्जी की वजह से हुई है, जिसे एनाफिलैक्सिस कहा जाता है। यह गंभीर एलर्जी किसी चीज के संपर्क में आने से जैसे धूल, खाना, परफ्यूम या मिट्टी या फिर कोई भी ऐसी चीज जिसके संपर्क में आने से आपके शरीर पर दाने हो जाएं, आपको खांसी, सांस लेने में दिक्कत, होठों पर सूजन या ब्लड प्रेशर लो, तो समझ लीजिए कि आपको उस चीज से एलर्जी है और आप सावधानी करनी शुरू कर दें।

राजा हत्याकांडः रिमांड पूरी, हत्यारों को शिलॉन्ग कोर्ट में पेश करेगी पुलिस

–आरोपियों की हिरासत बढ़ाने करेगी आग्रह, पूछताछ में रो पड़ती है सोनम

इंदौर (एजेंसी)। मध्य प्रदेश के इंदौर के चर्चित व्यापारी राजा रघुवंशी हत्याकांड में गिरफ्तार पांचों आरोपियों को शिलॉन्ग की जिला एवं सत्र न्यायालय में पेश किया जाएगा। इन सभी की आठ दिन की पुलिस रिमांड आज समाप्त हो रही है। मेघालय पुलिस अब आरोपियों की हिरासत बढ़ाने कोर्ट से आग्रह करेगी, ताकि जांच को और गहराई से आगे बढ़ाया जा सके। यह मामला सिर्फ एक हत्या नहीं, बल्कि एक गहरे षड्यंत्र की परतों को उजागर कर रही है, जिसमें पत्नी, प्रेमी और पेशेवर हत्यारों की भूमिका सामने आई है।

इंदौर के राजा रघुवंशी को उनकी पत्नी सोनम ने अपने प्रेमी राज कुशवाहा के साथ मिलकर मरवाया था। इस साजिश को अंजाम देने के लिए उन्होंने तीन बदामाश आनंद सिंह कुर्मी, आकाश राजपूत और विशाल सिंह चौहान को पैसे देकर हायर किया था। हत्या की साजिश उस वक्त रची गई जब सोनम और राजा मेघालय में हनीमून मनाने गए थे। जानकारी के मुताबिक सोनम पहले से ही अपने प्रेमी राज कुशवाहा के संपर्क में थी और उसी दौरान योजना बनाई गई कि मेघालय में राजा की हत्या कर दी जाएगी।

बता दें राजा रघुवंशी का शव 2 जून को एक सुनसान पहाड़ी इलाके में मिला था। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शरीर पर घावों के निशान मिले हैं, जिससे साबित होता है कि उनकी बेरहमी से हत्या की गई थी। घटना के बाद मेघालय पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए सभी पांचों आरोपियों सोनम, राज कुशवाहा, आनंद, आकाश और विशाल को गिरफ्तार कर लिया था। इन्हें 11 जून को शिलॉन्ग की जिला एवं सत्र अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें आठ दिन की पुलिस हिरासत में भेजा गया। पुलिस पूछताछ में सोनम ने राजा की हत्या की साजिश में शामिल होने की बात कबूल की है। वहीं पुलिस ने सभी आरोपियों का आमना-सामना कराकर परिस्थितिजन्य साक्ष्यों की पुष्टि भी की। पूछताछ में सोनम कई बार रो पड़ी और अपने मोबाइल फोन के न मिलने की बात बताई। अब पुलिस जांच मेघालय से इंदौर की ओर मुड़ गई है। मेघालय पुलिस की एक विशेष टीम इंदौर पहुंची, जहां वह सोनम और राजा के परिवारजनों से पूछताछ कर रही है।

देश में कमजोर पड़ रहा कोविड-19 संक्रमण, बीते 24 घंटे में सक्रिय मामलों में गिरावट

नई दिल्ली। कोविड-19 संक्रमण का नया वैरिएंट अब कमजोर होता दिख रहा है। इससे संक्रमण के सक्रिय मामलों में लगातार गिरावट दर्ज हो रही है। आम लोगों और सरकारों के लिए ये बड़ी राहत है। फिलहाल भारत में कोविड संक्रमण के सक्रिय केस घटकर 6 हजार से नीचे आ चुके हैं। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय ने कोविड को लेकर 19 जून की सुबह 8 बजे तक के आंकड़े जारी किए। स्वास्थ्य मंत्रालय के मुताबिक, पूरे देश में 507 संक्रमण के मामले कम हुए हैं। इससे कुल सक्रिय केस घटकर 5976 बचे हैं। गुरुवार को सबसे बड़ी गिरावट कर्नाटक में दर्ज की गई, जहां संक्रमण के 187 केस घटे। स्वास्थ्य मंत्रालय ने बताया कि बीते 24 घंटों में कर्नाटक के अलावा राजस्थान में 83, केरल में 75, गुजरात में 59, महाराष्ट्र में 46, उत्तर प्रदेश में 18 और आंध्र प्रदेश में 13 सक्रिय केस घटे हैं। हरियाणा में 9, मध्य प्रदेश में 7, झारखंड में 6, बिहार में 3, जम्मू कश्मीर में 2 और तेलंगाना-छत्तीसगढ़ में एक-एक कोरोना केस कम हुए हैं। 24 घंटों में संक्रमण के केस घटने के बाद केरल में अब कुल सक्रिय केस 1309 बचे हैं। गुजरात में अभी 1046 सक्रिय केस हैं। वहीं कर्नाटक में 466, महाराष्ट्र में 443, उत्तर प्रदेश में 257, राजस्थान में 219, तमिलनाडु में 187 और हरियाणा में 106 लोग अभी कोविड से संक्रमित हैं।

चार राज्यों की 5 सीटों पर वोटिंग जारी, केजरीवाल-ममता दीदी के सामने चुनौती

नई दिल्ली (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल, केरल, गुजरात और पंजाब की पांच विधानसभा सीटों पर उपचुनाव हो रहे हैं। इन उपचुनावों को अगले साल होने वाले विधानसभा चुनावों से पहले एक बड़ा लिटमस टेस्ट माना जा रहा है। तृणमूल कांग्रेस और माकपा जहां पश्चिम बंगाल और केरल में अपनी सत्ता को और मजबूत करने की कोशिश में हैं, वहीं भाजपा और आम आदमी पार्टी गुजरात और पंजाब में अपनी सीटें बचाने के लिए जोर लगा रही हैं। इन चुनावों के नतीजे 23 जून को आएंगे और सभी की नजरें इस बात पर टिकी हैं कि क्या ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल जैसे नेता अपनी पकड़ बरकरार रख पाएंगे।

पश्चिम बंगाल के कालिगंज में उपचुनाव टीएमसी विधायक नासिरुद्दीन अहमद की मृत्यु के बाद हो रहा है। टीएमसी ने उनकी बेटी अलिफा अहमद को उम्मीदवार बनाया है, ताकि महिला और अल्पसंख्यक वोटरों को अपने पक्ष में किया जा सके। भाजपा ने स्थानीय कार्यकर्ता आशीष घोष को मैदान में उतारा है, जबकि कांग्रेस-सीपीआई(एम) गठबंधन ने कबील उद्दीन शेख को चुना है।

केरल के नीलांबुर में उपचुनाव माकपा-समर्थित निर्दलीय विधायक पीवी अनवर के इस्तीफे के बाद हो रहा है, जिन्होंने मुख्यमंत्री पिनराई विजयन से मतभेद के बाद पार्टी छोड़ दी थी। माकपा ने एम स्वराज को उम्मीदवार बनाया है, जबकि कांग्रेस ने पुराने नेता अर्यादान शौकत को उतारा है।

गुजरात की दो सीटों विसावदर और कड़ी पर उपचुनाव हो रहे हैं। विसावदर सीट आप विधायक भूपेंद्र भायानी के इस्तीफे और भाजपा में शामिल होने के बाद खाली हुई थी। भाजपा ने किरीट पटेल को उम्मीदवार बनाया है, जो सहकारी नेता और पूर्व जिला पार्टी अध्यक्ष हैं।

पंजाब के लुधियाना (पश्चिम) में उपचुनाव आप विधायक गुरप्रीत बसी गोगी की मृत्यु के बाद हो रहा है। आप ने राज्यसभा सांसद संजीव अरोड़ा को उम्मीदवार बनाया है, जो इस शहरी सीट को बचाने के लिए पूरी ताकत लगा रहे हैं। उनके खिलाफ कांग्रेस के भारत भूषण आशु, भाजपा के जीवान गुप्ता और शिरोमणि अकाली दल के परुपकर सिंह घुम्मन मैदान में हैं। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान, अरविंद केजरीवाल और आतिशी ने आप के लिए जमकर प्रचार किया, जबकि भाजपा ने दिल्ली और हरियाणा के मुख्यमंत्रियों रेखा गुप्ता और नायब सिंह सैनी को उतारा।

पीके ने तेजस्वी पर साधा निशाना बोले- नीतीश का बेटा नहीं आ रहा राजनीति में

गोपालगंज (एजेंसी)। जनसुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने सीएम नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार के बहाने राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद के बेटे तेजस्वी यादव पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार के बेटे निशांत कभी भी राजनीति में नहीं आएंगे। तेजस्वी को लेकर कहा कि

जिस हालत में वो खुद और उनका परिवार है। सभी जानते हैं कि उनके परिवार पर परिवारवाद का आरोप लगता है। तो ऐसे तेजस्वी यादव जैसे लोग चाहते हैं कि अगर नीतीश कुमार का लड़का राजनीति में आ जाए तो हमको यह कहने को हो जाएगा कि सभी के बच्चे राजनीति में हैं। हमाम में सब नंगे हैं।

एक राजनीतिक विश्लेषक के तौर पर अपनी पहचान रखने वाले प्रशांत किशोर ने आगे कहा कि मैं जहां तक समझता हूं नीतीश कुमार का लड़का राजनीति में नहीं आ रहा है। अभी तक नहीं आ रहा है और आगे भी नहीं आएगा। लेकिन यह अफवाह तेजस्वी यादव जैसे लोग इसलिए उड़ाते हैं ताकि यह कहने को हो जाए कि हम अकेले नहीं हैं परिवारवाद करने वाले बिहार में सारे लोग परिवारवाद कर रहे हैं। बता दे कि बीते कई दिनों से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बेटे निशांत कुमार के सक्रिय राजनीति में आने और चुनाव लड़ने की अटकलें लगाई जा रहीं थी। इसको लेकर कई राजनैतिक दलों में चर्चा है कि निशांत के चुनाव लड़ने से बिहार में क्या असर होगा। यहां सवाल सिर्फ एक सीट का नहीं है बल्कि पूरे प्रदेश में किस तरह का असर होगा इसको लेकर चर्चा चल रही है। हालांकि निशांत की पहचान सिर्फ सीएम के बेटे के तौर पर है। वो कभी सक्रिय राजनीति में नहीं रहे, लेकिन नीतीश के बेटे के तौर पर राज्य की कुछ सीटों को प्रभावित कर सकते हैं।

अब एयरपोर्ट के आसपास ऊंची इमारतों पर होगी कार्रवाई, डीजीसीए ने उठाया कदम

–अधिकारियों को ढांचे को गिराने या ऊंचाई कम करने का होगा अधिकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। अहमदाबाद एयर इंडिया विमान दुर्घटना के बाद नागरिक उड्डयन मंत्रालय (डीजीसीए) ने एक अहम कदम उठाया है। मंत्रालय ने विमान सुरक्षा में जोखिम पैदा करने वाली भौतिक संरचनाओं पर नियंत्रण को कड़ा करने के लिए नए मसौदे और नियम जारी किए हैं। बता दें 12 जून को अहमदाबाद से लंदन का रहा विमान उड़ान भरते ही कुछ दूरी पर जाकर विमान बीजे मेडिकल कॉलेज के हॉस्टल से टकराया और उसमें आग लग गई। इस दुर्घटना में विमान में सवार 242 में से 241 लोगों की मौत हो गई थी। घटना के बाद अब केंद्र सरकार कड़े कदम उठा रही है।

नए मसौदा नियमों का नाम 'विमान अवरोधों को गिराने के नियम-2025' रखा गया है। ये नियम राजपत्र में प्रकाशित होते ही लागू हो जाएगा। इनका उद्देश्य एयरपोर्ट के आसपास के क्षेत्रों में ऊंचाई की सीमा से ज्यादा इमारतों और पेड़ों पर त्वरित कार्रवाई के लिए अधिकारियों को अधिकार देना है। इस पहल को विमान मार्गों में आने वाली रुकावटों के कारण होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए एक सक्रिय कदम के रूप में देखा जा रहा है।

मसौदा नियमों के तहत यदि कोई इमारत तय ऊंचाई से ज्यादा है तो संबंधित क्षेत्र के प्रभारी अधिकारी की ओर से उसे नोटिस जारी किया जाएगा। संपत्ति मालिक को 60 दिनों के अंदर साइट प्लान और ढांचे की माप समेत अन्य विवरण प्रस्तुत करने होंगे। यदि ऐसा नहीं किया गया तो अधिकारियों को ढांचे को गिराने या ऊंचाई कम करने की कार्रवाई का अधिकार होगा।

यदि डीजीसीए या कोई अधिकृत अधिकारी किसी ढांचे को नियमों का उल्लंघन मानता है तो वो इसे हटाने या कम करने का आदेश जारी कर सकता है। मालिक को पालन करने के लिए 60 दिन का समय दिया जाएगा, जो उचित कारणों पर और 60 दिन तक बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा अधिकारियों को दिन के समय स्थल का निरीक्षण करने की इजाजत होगी, बशर्ते वह संपत्ति मालिक को पहले से सूचित करें। अगर संपत्ति मालिक सहयोग नहीं करता तो अधिकारी जानकारी के आधार पर आगे की कार्रवाई कर सकते हैं और मामला डीजीसीए को भेज सकते हैं।

मसौदा नियमों के तहत यदि किसी ढांचे को हटाने या कम करने का आदेश दिया जाता है तो संपत्ति मालिक पहले या दूसरे अपीलीय अधिकारी के सामने तय फॉर्म, जरुरी दस्तावेज और एक हजार रुपए शुल्क के साथ अपील कर सकते हैं। इसमें मुआवजे की शर्तें भी रखी गई हैं। सिर्फ वह मालिक जिन्हें आधिकारिक आदेशों के मुताबिक ढांचे को गिराने या संशोधित करने के लिए कहा गया है और जिन्होंने आदेश का पालन किया है, उन्हें मुआवजा दिया जाएगा। अधिसूचना की तिथि के बाद नियमों का उल्लंघन कर बनाए गए किसी भी ढांचे को मुआवजा नहीं मिलेगा। डीजीसीए ने इन मसौदा नियमों पर प्रकाशन के 20 दिनों के अंदर जनता से सुझाव और आपत्तियां मांगी हैं।

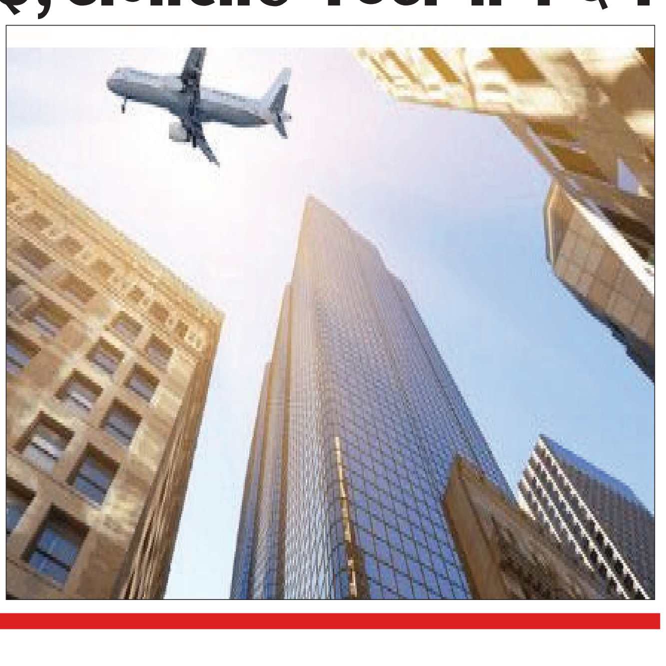

स्वस्थ लीवर के लिए बेस्ट फूड

हमारे देश में लीवर की ही समस्या सबसे ज्यादा आ रही है। जानते हैं क्यों, क्योंकि हम बिना सोचे समझे ही कुछ भी अपने शरीर पर आजमाते रहते हैं यानी जो चीजें हमारे शरीर के लिए बनी ही नहीं हैं उसे जबरदस्ती अंदर ढकेल लेते हैं। वह चाहे खाने की चीजें हो या पीने की चीजें। ज्यादातर लोगों को यह मालूम होता है कि फला चीजों से हमारे शरीर को नुकसान ही पहुंचेगा लेकिन फिर भी लोग ''आ बैल सींग मार' वाली काहवत पर उतारूर रहते हैं। सभी जानते हैं की सिगरेट-शराब, कोल्ड ड्रिंक आदी लीवर को खराब व गला देते हैं। लेकिन फिर भी लोग इनपर पानी की तरह पैसा और अपना जीवन दांव पर लगाते रहते हैं और नतीजा लीबर खराब हो जाता है।लीवर या जिसे जिगर भी कहा जाता है, शरीर के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक है जिसका वजन लगभग 1.3 किलोग्राम होता है। लीवर, एक प्रकार की ग्रंथि होती है जिससे शरीर के अन्य भागों के लिए आवश्यक पदार्थो का स्त्रव होता है। लीवर ही शरीर का एक ऐसा हिस्सा है जो अंग और ग्रंथि दोनों है। एक स्वस्थ लीवर, रक्त को शुद्ध, विषाक्तरहित कर देता है और पोषक तत्वों को अवशोषित करके मल आदी को बाहर निकालने की प्रक्रिया में शरीर में अहम भूमिका निभाता है। अगर लीवर के इतने काम हैं तो इसे स्वस्थ बनाएं रखना बेहद आवश्यक होता है। ऐसे में आपको ध्यान रखना होगा कि आप अपनी जीवनशैली को दुरुस्त बनाएं रखें और शरीर को स्वस्थ बनाने वाले भोजन का सेवन ही करें।

■ लीवर ही शरीर का एक ऐसा हिस्सा है जो अंग और ग्रंथि दोनों है

■ एक स्वस्थ लीवर, रक्त को शुद्ध, विषाक्त रहित कर देता है और पोषक तत्वों को अवशोषित करके मल आदी को बाहर निकालता है

स्वस्थ लीवर के लिए सेवन करें

1. लहसुन : लहसुन में कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड का स्तर कम करने के गुण होते हैं जिससे लीवर पर जोर कम पड़ता है। इस तरह, इसका सेवन करने मात्र से ही लीवर के संचालन में सरलता आ जाती है और पाचन संबंधी गड़बड़ियां भी सही हो जाती हैं।

2. अंगूर : अंगूर में विटामिन ''सी' होता हैं, साथ ही इसमें पेक्टिन और एंटीऑक्सीडेंट भी भरपूर मात्रा में होते हैं। इससे लीवर की क्लीनिंग प्रॉसेस अच्छी रहती है। ग्रेपफ्रूट में फ्लोवेनॉयड भी होता है जिससे लीवर स्वस्थ बना रहता है। साथ ही इसके सेवन से वसा भी नहीं बढ़ता है, जिसे पचाने में लीवर को कोई जोर नहीं लगाना पड़ता है।

3. चुकंदर : चुकंदर, रक्त बनाने के साथ-साथ लीवर के स्वास्थ्य के लिए भी अच्छा होता है। इसमें भरपूर मात्रा में फ्लैवोनॉयड्स और बीटा-कारोटीन होता है जिससे लीवर अच्छी तरह काम करता है।

4. नींब : नींबू में कई गुण होते हैं, जो पूरे शरीर के लिए फायदेमंद होता है लेकिन क्या आपको मालूम है कि इसमें एंटी-ऑक्सीडेंट ''डी लिमोनेन' भी होता है जो शरीर में अच्छे एंजाइम्स को एक्टिव कर देता है।

5. ग्रीन टी : हर दिन ग्रीन टी पीने से शरीर की विषाक्तता समाप्त हो जाती है, यानी सारे टॉक्सिन निकल जाते हैं। ऐसे में लीवर का काम कम हो जाता है। ग्रीन टी, लीवर में लिपिड कैटाबोल्जिम को बढ़ाने में मदद करती है जिससे लीवर स्वस्थ हो जाता है।

..और यह न करें

धूम्रपान व शराब : लीवर को स्वस्थ बनाएं रखने के लिए हर संभव प्रयास करें और स्वास्यवर्धक चीजें ही खाएं। धूम्रपान न करें, शराब का सेवन भी हानिकारक होता है। इससे लीवर को ज्यादा क्षति पहुंचती है।

नैनो तकनीक से मिनटों में साफ होंगे गंदे कपड़े

मेलबर्न। अभी तक हम अपने कपड़ों को साफ करने के लिए डिटर्जेंट पाउडर और वॉशिंग मशीन का उपयोग करते हैं। कपड़ों को साफ करने के लिए हम ज्यादा मेहनत करते हैं डिटर्जेंट में उन्हें बार-बार रंगड़ते हैं पर अब वो दिन ज्यादा दूर नहीं जब आपको अपने कपड़े साफ करने के लिए न मेहनत करनी होगी। न तो डिटर्जेंट का इस्तेमाल करना होगा, न पानी का और न ही वॉशिंग मशीन का। कुछ न करके भी आपके कपड़े सफेद, चमकदार बने रहेंगे।शोधकर्ताओं का कहना है कि उन्होंने एक ऐसी तकनीक विकसित की है जिससे कपड़ों को बल्ब की रोशनी या धूप में रखने पर वे छह मिनट के अंदर खुद ही साफ हो जाएंगे। मेलबर्न के ''आरएमआईटी विविद्यालय' के शोधकर्ताओं ने विशेष नैनो-तकनीक से एक ऐसा कपड़ा बनाया है जो रोशनी में खुद साफ हो जाता है। शोधकर्ताओं के इस दल में एक भारतीय मूल के वैज्ञानिक भी शामिल हैं। हालांकि शोधकर्ता राजेश रामनाथन के अनुसार अभी इस क्षेत्र में काफी काम किए जाने की जरूरत है। यह शोध ''एडवांस मैटेरियल इंटरफेसेस जर्नल' में प्रकाशित हुआ है।शोधकर्ताओं ने यह कपड़ा चांदी और तांबा आधारित नैनो-संरचनाओं से विकसित किया है जो अपनी प्रकाश को सोखने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं। जब इन नैनो-संरचाओं पर रोशनी पड़ती है तो इनमें ऊर्जा के संचार से गर्म इलेक्ट्रॉन निकलते हैं। ये गर्म इलेक्ट्रॉन ऊर्जा का संचार करते हैं जिससे ये कपड़ा कार्बिनक पदार्थो (धूल-मिट्टी) को हटा देता है। रामनाथन का कहना है कि यह कपड़ा कार्बिनक पदार्थो को तो साफ कर लेता है लेकिन इसे जैविक पदार्थो को भी साफ करने लायक बनाने की चुनौती अब भी बनी हुई है। अभी इसे आने में कुछ समय बाकी है।

बच्चों की टीवी देखने की लत कैसे छूटे

नई दिल्ली। बच्चों की आदत खराब करने में सबसे बड़ा योगदान अगर टीवी को कहें तो गलत न होगा। बच्चे सबसे ज्यादा चीजें टीवी कार्यक्रमों से ही सीखते हैं और अपने जीवन में ढालते हैं। इस तरह बच्चों की आदत बिगड़ जाती है। सबसे ज्यादा वच्चे टीवी पर एड की चीजों को देख कर वही चीजें डिमांड करते हैं और उस जैसा बनना बच्चों को अच्छा लगता है और इस तरह बच्चों की आदत बिगड़ जाती है। वैसे बच्चें हों चाहे बड़े, टीवी देखने की आदत हर किसी को होती है। टीवी देखना बुरा नहीं होता, मगर टीवी के सामने हर वक्त पूरा काम-काज छोड़ कर बैठना एक गंदी आदत होती है। वहीं अगर बच्चे टीवी के आदि हो गए तो उनकी पढ़ाई-लिखाई चौपट समझो। टीवी को कभी भी अपनी जिंदगी का अहम हिस्सा नहीं बनाना चाहिए। अगर आप या आपके घर में किसी को टीवी देखने की बुरी आदत पड़ी हुई है तो आप उसकी आदत को इस तरह दूर कर सकते हैं।

■ अगर बच्चे टीवी के आदी हो गए तो उनकी पढ़ाई-लिखाई चौपट हो सकती है

■ टीवी की आदत तब तक अच्छी है जब तक उससे आपका खाली समय व्यतीत हो रहा है, बाकी इसे कभी भी अपनी जिंदगी का अहम हिस्सा नहीं बनाना चाहिए

घर में एक ही टीवी रखें : घरों में एक से ज्यादा टीवी होने के कारण सदस्य हर वक्त टीवी से ही चिपके रहते हैं। अगर घर में एक ही टीवी रहेगा तो हर कोई अपने समय से टीवी देख कर दूसरे को टीवी देखने का मौका देगा। जिससे कोई भी व्यक्ति ज्यादा समय तक टीवी के सामने नहीं बैठेगा।

टीवी का रिमोट छुपा दें : अगर पास में टीवी का रिमोट नहीं होगा तो चैनल को बार-बार कौन बदलेगा? इसी तरह से देखने वाला बोर हो जाएगा और वह टीवी बंद कर देगा।

फर्नीचर में बदलाव करें : अपने कमरे का फर्नीचर ऐसा कर दें जिससे कि टीवी आसानी से उपलब्ध न हो सके। यानी जिसे भी टीवी देखना हो, उसे टीवी देखने के लिए फर्नीचर इधर-उधर करना पड़े। ऐसे में परेशानी की वजह से व्यक्ति टीवी देखने में आलस करेगा।

बिना टीवी देखे भोजन करें : अपने घर में एक नियम बनाएं कि कोई भी सदस्य टीवी देखते हुएभोजन नहीं करेगा।

केवल कुछ ही टीवी शो देखें : अपने टीवी देखने का कार्यक्रम हर हफ्ते बदलते रहें। टीवी गाइड ले कर बैठ जाइये और उसमें से कुछ ऐसे प्रोग्राम्स चुन लीजिए जो आपको हफ्तेभर में देखने हों। फिर उसे देखिये और फिर टीवी बंद कर दीजिए।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ): मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। धार्मिक कार्य में समय और धन व्यय होगा। अपना काम दूसरों के सहयोग से पूरा होगा। ले देकर की जा रही काम की कोशिश ठीक नहीं। पुराने मित्र से मिलन होगा। शुभांक-5-7-9

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो): समय नकारात्मक परिणाम देने वाला बन रहा है। अपने हितैषी समझे जाने वाले ही पीठ पीछे नुकसान पहुंचाने की कोशिश करेंगे। परिवारजन का सहयोग व समन्वय काम को बनाना आसान करेगा। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। स्वविवेक से कार्य करें। समय का लाभ लें। शुभांक-2-5-7

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा): एकाकी वृत्ति त्यागें। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। धार्मिक स्थलों की यात्रा का योग। जीवन साथी अथवा यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। शुभांक-2-5-6

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो): कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कार्यक्षेत्र में आगे बढ़ने में रुकावट का एहसास होगा। विरोधियों के सक्रिय होने की संभावना है। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे। राजकीय कार्यो से लाभ। शुभांक-4-6-8

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे): मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश सफल होगी। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। अपने काम में सुविधा मिल जाने से प्रगति होगी। समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा। नवीन जिम्मेदारी बढ़ने के आसार रहेंगे। यात्रा शुभ रहेगी। अपने काम को प्राथमिकता से करें। शुभांक-3-5-7

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो): आत्मविश्वास बढ़ेगा। कारोबारी काम में बाधा उभरने से मानसिक अशांति बनी रहेगी। यात्रा का दूरगामी परिणाम मिल जाएगा। सुविधा और समन्वय बना रहने से कामकाज में प्रगति बन जाएगी। आर्थिक हित के काम को साधने में मदद मिल जाएगी। मांगलिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। शुभांक-2-4-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते): स्वास्थ्य लाभ में समय और धन व्यय होगा। लेन-देन में अस्पष्टता ठीक नहीं। मध्याह्न पूर्व समय आपके पक्ष का बना रहेगा। कारोबारी काम में प्रगति बनती रहेगी। लेन-देन में आ रही बाधा दूर करने का प्रयास होंगे। अपने काम पर नजर रखिए। परिश्रम प्रयास से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। शुभांक-3-5-7

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू): पर-प्रपंच में ना पड़कर अपने काम पर ध्यान दीजिए। कल का परिश्रम आज लाभ देगा। आलस्य का त्याग करें। कारोबारी काम में नवीन तालमेल और समन्वय बन जाएगा। यार-दोस्तों के साथ साझे में किए जा रहे काम में लाभ मिल जाएगा। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। शुभांक-3-5-7

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे): कार्यक्षेत्र में संतोषजनक सफलता मिलेगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान पक्ष से थोड़ी ड्ढचता रहेगी। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। नौकरी में पदोन्नति की संभावना है। मित्रों से सावधान रहें तो ज्यादा उत्तम है। यात्रा से लाभ। शुभांक-1-3-5

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी): पठन-पाठन में स्थिति कमजोर रहेगी। खान-पान में सावधानी रखें। कामकाज में आ रहा अवरोध दूर होकर प्रगति का रास्ता मिल जाएगा। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। शुभांक-2-4-8

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा): शारीरिक सुख के लिए व्यसनों का त्याग करें। खान-पान में सावधानी रखें। व्यापार में प्रगति होगी। अपने अधीनस्त लोगों से कम सहयोग मिलेगा। भ्रातृपक्ष में विरोध होने की संभावना है। शिक्षा में आशानुकूल कार्य होने में संदेह है। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। यात्रा का योग है। आय के योग बनेंगे। शुभांक-4-6-8

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची): जीवनसाथी का परामर्श लाभदायक रहेगा। व्यापार व नौकरी में स्थिति अच्छी रहेगी। आलस्य का त्याग करें। पुरुषार्थ का सहारा लें। कार्यसिद्धि होने में देर नहीं लगेगी। आर्थिक लाभ उत्तम रहेगा। शैक्षणिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। परिवार में किसी मांगलिक कार्य पर वार्ता होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभांक-4-6-7

लॉफिंग ज़ोन

एक सूटबूटधारी सज्जन एक व्यस्त बाजार में कारो के बीच हाथ-पैर फैलाए लेटा हुआ था. सिपाही ने देखा तो पूछा- क्या हुआ? दौरा-वौरा पड़ गया या चक्कर आ गए?

सज्जन बोले - नहीं जी दरअसल मेरी बीवी कार लेकर यहां पहुंचने वाली है और मैं इस व्यस्त बाजार में कार पार्क करने की जगह घेरे हुए हूं.

☺ ☺ ☺

रोहित (राहुल से) - तुम स्विटरजरलैड में कहां रहे?

राहुल (रोहित से) - 'जानहेग' कस्बे में.

रोहित (राहुल से) - तुम्हे मालूम होना चाहिए कि स्विस भाषा में 'जे' का उगारण 'एच' होता है. वह 'जानहेग' नहीं 'हानहेग' है. वैसे आप वहां कब तक रहे?

राहुल (रोहित से) - हून-हुलाई तक.

☺ ☺ ☺

एक युवक पायलट के लिए इंटरव्यू देने पहुंचा. इंटरव्यू में उससे पूछा गया - आपका दिल कहीं कमजोर तो नहीं?

युवक - जी मेरा दिल तो इतना मजबूत है कि पिछले तीन सालों में मुझे तीन-तीन दिल के दौरे पड़े फिर भी मै जिंदा हूं.

युवक से फिर पूछा गया- दौरे तुम्हें कब-कब पड़े?

युवक - जी जब श्रीदेवी, माधुरी और काजोल की शादी हुई थी तब.

काकुरो पहेली - 4089

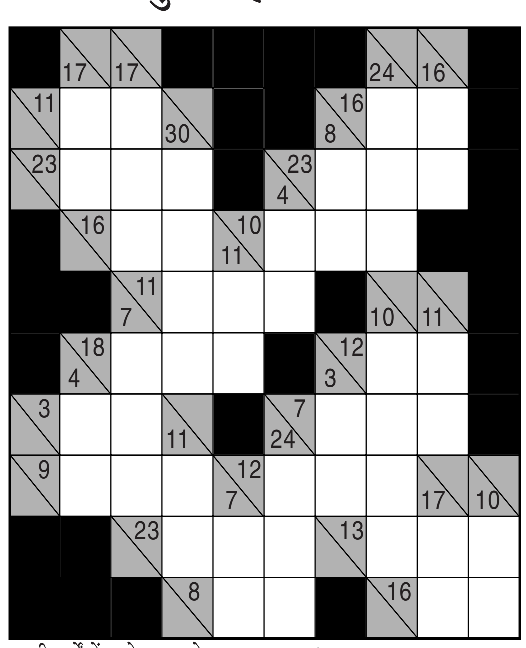

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए.किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

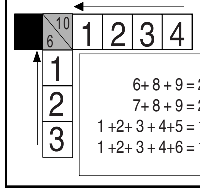

6+8+9=23
7+8+9=24
1+2+3+4+5=15
1+2+3+4+6=16

काकुरो -4088 का हल

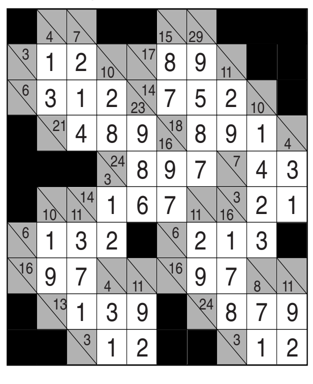

फिल्म वर्ग पहेली-4089

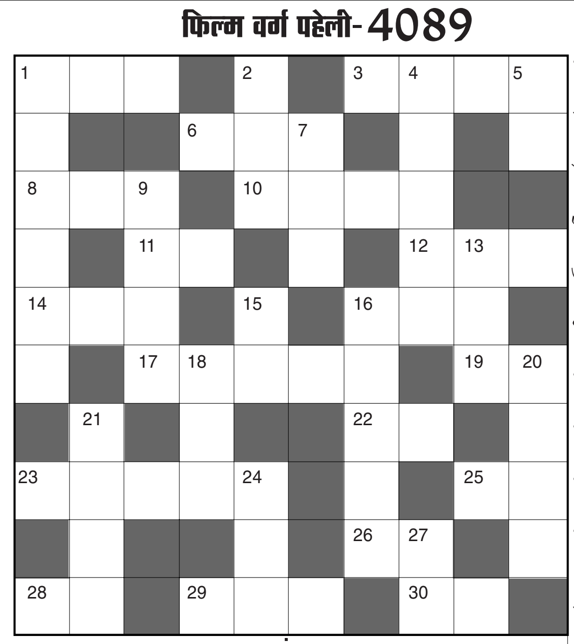

बायें से दायें:-

१. जतिन ग्रेवाल, यश पाठक, नेहा की 'चलती है पुरवाई' गीतवाली फिल्म-३
३. 'मेरा मन तेरा प्यासा' गीत वाली देव आनंद, जाहिदा, जाहिरा की फिल्म-४
६. सनी, मीनाक्षी की सोचना क्या जो भी होगा' गीत वाली फिल्म-३
८. 'कब तक हुजूर रूठे रहोगे' गीत वाली जीतेंद्र, बबीता की फिल्म-३
१०. धर्मेन्द्र, हेमा, रीना राय की 'नागिन सा रूप है तेरा' गीत वाली फिल्म-४
११. 'सपने में मिलती है' गीत वाली डी. चक्रवर्ती, मनोज, उर्मिला की फिल्म-२
१२. रघुवीर यादव, कुणालकपूर, तब्बू, नादिरा बब्बर की 'ये रिश्ता क्या कहलाता है' गीत वाली फिल्म-३
१४. 'क्या करे क्या ना करें' गीत वाली जैकी श्रॉफ, उर्मिला की फिल्म-३
१६. सनी देओल, करिश्मा की 'छम्मक छल्लो जरा धीरे' गीत वाली फिल्म-३
१७. जैकी श्रॉफ, संजय, माधुरी की फिल्म-५
१९. फारूख शेख, नसीरूद्दीनशाह, दीप्ति नवल की सई परांजपे निर्देशित एक फिल्म-२
२२. 'कंधों से मिलते हैं कंधे' गीत वाली अमिताभ, रितिक, प्रीति की फिल्म-२
२३. राकेश रोशन, रेखा की 'सुन सुन सुन दीदी तेरे लिये' गीत वाली फिल्म-५
२५. 'पर्दे में कोई बैठा है' गीत वाली अमजद खान, विनोद मेहरा, बिंदिया गोस्वामी की फिल्म-२
२६. संजय दत्त, सलमान खान, रवीना की 'सुनो गौर से' गीत वाली फिल्म-२
२८. 'जिसका मुझे था इंतजार' गीत वाली अमिताभ, जीनत अमान की फिल्म-२
२९. मिलिंद सोमण, विक्रम सलूजा, किरण झवेरी की फिल्म-३
३०. फिल्म 'रफूचक्कर' में नायिका थी-२

ऊपर से नीचे:-

१. 'मेरा नाम है चमेली' गीत वाली संजीव कुमार, नाजिमा, कुमकुम की फिल्म-२,२,२
२. तुषार कपूर, अंतरा माली की 'मैं लव तुमसे' गीत वाली फिल्म-३
४. 'सिर्फतुम ही तो हो जिसपे' गीत वाली शम्मीकपूर, साधना की फिल्म-५
५. अभिषेक बच्चन, भूमिका चावला की 'दिल में जो बात' गीत वाली फिल्म-२
७. 'मधुबन में जो कन्हैया' गीत वाली आमिरखान, ग्रेसीसिंह की फिल्म-३
९. संजयखान, बबीता की 'आ लगजा गले' गीत वाली फिल्म-२,२
१३. 'रूखी सूखी रोटी' गीत वाली अनिल कपूर, रानी मुखर्जी की फिल्म-३
१५. 'क्या सही प्यार है' गीत वाली फिल्म 'रॉकी' में संजयदत्त, के साथ नायिका कौन थी-३
१६. जीतेंद्र, श्रीदेवी की 'आई लव यू आई लव यू' गीत वाली फिल्म-५
१८. 'ओफ्फो जलता है बुझता है' गीत वाली सनी, सोहेल, सुनील, जॉन अब्राहम, नौहीद की फिल्म-३
२०. संजय दत्त, माधुरी दीक्षित की 'तम्मा तम्मा लोगे' गीत वाली फिल्म-४
२१. 'लो आगई उनकी याद' गीत वाली मनोज कुमार, आशा पारेख की फिल्म-१,३
२४. अक्षय कुमार, करीना कपूर की 'तूने कहा जब से हाँ' गीत वाली फिल्म-३
२७. 'और क्या अहद ए वफा' गीत वाली सनी देओल, अमृतासिंह की फिल्म-२

फिल्म वर्ग पहेली- 4088

सूडोकु 4089

	8			6				
					5			
		9				7		3
	1			8				2
			7		4			
6				3			8	
5		7				4		
			8					
				1			6	

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.

■ प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.

■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते .

■ पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु -4088 हल

9	4	5	3	1	8	7	6	2
1	8	6	7	2	5	4	9	3
2	7	3	9	4	6	8	1	5
6	3	9	1	7	4	2	5	8
5	2	4	8	9	3	6	7	1
7	1	8	6	5	2	9	3	4
4	6	7	5	8	1	3	2	9
8	9	1	2	3	7	5	4	6
3	5	2	4	6	9	1	8	7

शब्द पहेली -4089

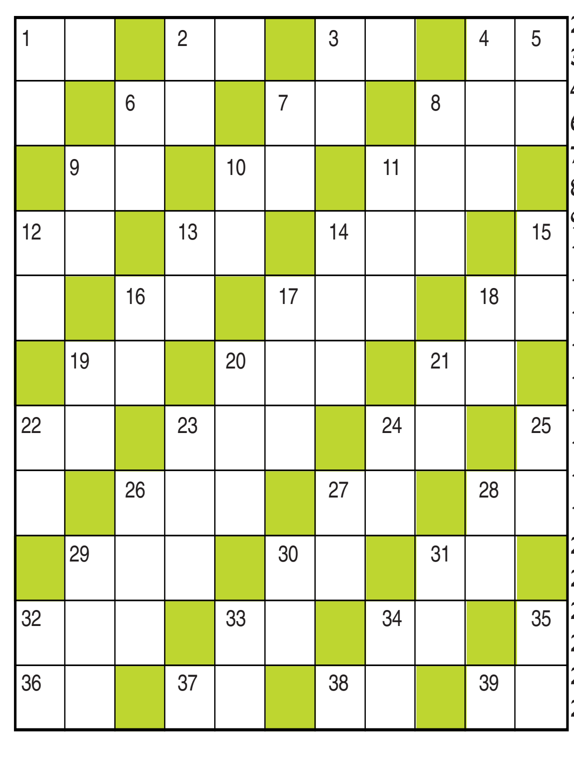

बाएँ से दाएँ

1.कार्य,काम-2
2.अग्नि,अनल-2
3.संग,संगत-2
4.मदिरा,शराब-2
6.चुटीली बात-2
7.उम्मीद-2
8.समाचार,सूचना-3
9.भगवान कृष्ण के खेल-2
10.छाया,परछाई-2
11.कहासुनी-3
12.जी,चित-2
13.निशा-2
14.पासों का खेल-3
16.करीना की फिल्म-2
17.आगे वाला-3
18.सीधा,सरल-2
19.वीर,बहादुर-2
20.दलदल,गाद-3
21.तांत,टेलीग्राम -2
22.वंश,खानदान-2
23.नशा,नशापानी-3
24.चिट्ठी,पत्र-2
26.सही का विलोम-3
27.ठिकाना-2
28.प्राण,दम-2
29.नरक (उर्दू-3)
30.बीता हुआ दिन-2
31.पोखर,तालाब-2
32.हताहत-3
33.दर,मूल्य-2
34.आयु-2
36.अंधकार-2
37.पांव,पैर-2
38.कान्हा-2
39.टैक्स,हाथ-2

ऊपर से नीचे

1.समय,वक्त-2
2.आगमन-2
3.पति की मां-2
4.भोर,सवेरा-3
5.झगड़ा-2
6.लॉक,द्वारयंत्र-2
7.धाय,नर्स,दाई-2
8.अवरोध,रुकावट-3
9.मगन,मग्न-2
10.सप्त,सप्तम-2
11.लक्ष्मी,रमा-3
12.मौज,मजा-2
13.महाराजा-2
14.घिसन,रगस-3
15.गमन,जाना-2
16.पुनः,वापस-2
17.स्थिर-3
18.निष्कर्ष-2
19.कांटा-2
20.मूल्य,दाम-3
21.पितामह-2
22.मजदूर-2
23.ईश्वर-3
24.भूल,गलती-2
25.मछली-2
26.नगमा-3
27.क्षण-2
28.पाश-2
29.दूसरा-3
30.थोड़ा-2
31.तांबा-2
32.हमला-2
33.कलंक-2
34.गरम-2
35.मयूर-2

शब्द पहेली - 4088 हल

मध्य प्रदेश के टाइगर रिजर्व में बढ़ी विदेशी पर्यटकों की संख्या

एजेंसी

भोपाल। वन्य-जीव पर्यटन में मध्य प्रदेश विशेष आकर्षण का केन्द्र बनकर उभरा है। टाइगर रिजर्व में देशी और विदेशी पर्यटकों की संख्या में लगातार बढ़ोतरी हो रही है। जनसम्पर्क अधिकारी केके जोशी ने बताया कि प्रदेश के टाइगर रिजर्व में वर्ष 2024-25 में बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व में 32 हजार 528, कान्हा टाइगर रिजर्व में 23 हजार 59, पन्ना टाइगर रिजर्व में 15 हजार 201, पेंच टाइगर रिजर्व में 13 हजार 127 और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में 10 हजार 38 विदेशी पर्यटक आये। जबकि गत वर्ष 2023-24 में बाँधवगढ़ टाइगर रिजर्व में विदेशी पर्यटकों की संख्या 25 हजार 894, कान्हा टाइगर रिजर्व में 18 हजार 179, पन्ना टाइगर रिजर्व में 12 हजार 538, पेंच टाइगर रिजर्व में 9 हजार 856 और सतपुड़ा टाइगर रिजर्व में 6 हजार 876 थी। उन्होंने बताया कि बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व पर्यटकों की पहली पसंद बन रहा है। टाइगर रिजर्व में पर्यटकों की संख्या में प्रतिवर्ष वृद्धि हो रही है। वर्ष 2020-21 में भारतीय पर्यटकों की संख्या एक लाख 20 हजार 800, वर्ष 2021-22 में एक लाख 69 हजार 738, वर्ष 2022-23 में एक लाख 64 हजार 559, वर्ष 2023-24 में एक लाख 23 हजार 32 और वर्ष 2024-25 में माह मई तक एक लाख 60 हजार 500 रही। साथ ही विदेशी पर्यटकों की संख्या में भी बढ़ोत्तरी हो रही है।

भारत आदिकाल से हिन्दू राष्ट्रः मोहन भागवत

हमीरपुर। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने बुधवार को कहा कि भारत आदिकाल से हिन्दू राष्ट्र है और यह यहां के हिन्दू समाज ने तय किया है। यहां सिकंदर आया, अंग्रेज व अन्य आक्रांता भी आये लेकिन यहां का समाज अपनी संस्कृति से जुड़ा रहा। डॉ. भागवत ने संघ के कार्यकर्ता विकास वर्ग (प्रथम) के शिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए यह बात कही। वर्ग कार्यवाह डॉ. प्रताप सिंह ने बताया कि सरसंघचालक डॉ. भागवत वर्ग में चार दिवसीय प्रवास पर आए थे। आज अपने प्रवास के अंतिम दिवस उन्होंने शिक्षार्थियों का मार्गदर्शन किया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्वयंसेवक संघ के शताब्दी वर्ष में पञ्च परिवर्तन के विषयों- जैसे कि सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण, नागरिक कर्तव्य, स्वदेशी जीवन शैली को लेकर समाज में जाएं। इससे समाज में सकारात्मक परिवर्तन आएगा। स्वभाषा, भूषा, भोजन, भजन, भ्रमण इन सब में भारतीयता झलकनी चाहिए। आधुनिकीकरण बुरा नहीं होता किन्तु पाश्चात्य का अंधानुकरण ठीक नहीं है। डॉ. भागवत ने आज देश महत्व के विभिन्न विषयों पर शिक्षार्थियों की जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। डॉ. प्रताप ने बताया कि वर्ग के समापन कार्यक्रम की तैयारी चल रही है जो 19 जून को सायं 5 बजे होगा। 20 जून प्रातः दीक्षांत सत्र के साथ ही कार्यकर्ता विकास वर्ग प्रथम संपन्न होगा।

आईईडी विस्फोट में शामिल गिरफ्तार नक्सली के खिलाफ एनआईए ने चार्जशीट पेश की

जगदलपुर। दंतेवाड़ा जिले के अरनपुर में अप्रैल 2023 को जवानों से भरे वाहन को आईईडी विस्फोट से उड़ाने के मामले में गिरफ्तार नक्सली बांद्रा ताती के खिलाफ एनआईए के अधिवक्ता संजय शुक्ला ने बुधवार को जगदलपुर के विशेष न्यायालय में चार्जशीट पेश की है। इस वारदात में डीआरजी के 10 जवान बलीदान हुए थे एवं एक वाहन चालक की मौत हो गई थी। जानकारी के अनुसार एनआईए ने जांच के दौरान पाया कि गिरफ्तार नक्सली बांद्रा ताती छत्तीसगढ़ के दंतेवाड़ा जिले के एक गांव में दंडकारण्य आदिवासी किसान मजदूर संघ (डीकेएमएस) का अध्यक्ष था। वह अरनपुर में हुए हमले में इस्तेमाल किए गए आईईडी के परिवहन में शामिल था जिसका उद्देश्य भारत सरकार के खिलाफ युद्ध छेड़ने और लोगों के मन में आतंक पैदा करना था। साथ ही आपराधिक साजिश के तहत सुरक्षा बलों के हथियार लूटना था। बांद्रा ताती के पास विस्फोटक सामग्री थी, जो उसे नक्सली संगठन से मिली थी। एनआईए की जांच के अनुसार वह नक्सल साजिश की बैठकों में भी शामिल हुआ था। राज्य पुलिस ने प्रारंभिक जांच के दौरान 2023 में 26 आरोपितों के खिलाफ चार्जशीट पेश की थी, एनआईए की जांच जारी है।

कर्नाटक सरकार ने रोजाना 10 घंटे काम का रखा प्रस्ताव, श्रमिक संगठनों ने जताया विरोध

बेंगलुरु। श्रम अधिकारों की समीक्षा के लिए कर्नाटक सरकार राज्य के रोजगार कानूनों में एक बड़े संशोधन पर विचार कर रही है।राज्य सरकार कर्नाटक दुकान और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान अधिनियम, 1961 की धारा 7 में संशोधन करके अधिकतम कार्य घंटों को मौजूदा 9 घंटों से बढ़ाकर 10 घंटे करने पर विचार कर रही है। कर्नाटक सरकार रोजाना काम करने के घंटे को बढ़ाने की तैयारी कर रही है। इसके लिए वह कर्नाटक दुकान और वाणिज्यिक प्रतिष्ठान अधिनियम, 1961 में संशोधन का प्रस्ताव लाई है। प्रस्ताव के अनुसार, अब अधिकतम दैनिक कार्य घंटे 9 से बढ़ाकर 10 किए जाएंगे और ओवरटाइम सहित कुल 12 घंटे तक काम की अनुमति होगी। इसके साथ ही तिमाही ओवरटाइम सीमा भी 50 से बढ़ाकर 144 घंटे की जा सकती है। सप्ताह में शनिवार और रविवार को अवकाश देने के संबंध में विचार किया जा रहा है। इस संबंध में बेंगलुरू के विकास सौधा में उद्योग प्रतिनिधियों और श्रमिक संगठनों के साथ श्रम विभाग की बैठक हुई। बैठक में श्रम विभाग की सचिव रोहिणी सिंधुरी, विभिन्न व्यवसायिक प्रतिष्ठानों के मालिक, श्रमिक नेता और श्रम विभाग के अन्य अधिकारी शामिल हुए।

पाकिस्तान ने सीजफायर के लिए खुद किया था फोन, भारत को नहीं मध्यस्थता की जरूरत : देवेंद्र फडणवीस

एजेंसी

मुंबई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच फोन पर हुई बातचीत को लेकर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस का बयान आया है। उन्होंने कहा कि पहले दिन से भारत ने अपना रुख साफ कर रखा था कि हम कोई मध्यस्थता स्वीकार नहीं करेंगे। देवेंद्र फडणवीस ने मीडिया से बात करते हुए कहा, पहले दिन से ही भारत ने अपना रुख तय कर रखा था कि हम किसी भी मध्यस्थता को स्वीकार नहीं करेंगे। हम सभी जानते हैं कि जब भारतीय मिसाइलों ने पाकिस्तान के 11 एयरबेसों को ऐसी स्थिति में पहुंचा दिया, जहां से कोई भी विमान उड़ान नहीं भर सकता था, तो पाकिस्तान को यह स्पष्ट हो गया कि वह यह युद्ध नहीं लड़ सकता। इसके बाद पाकिस्तान ने कई देशों से गुजारिश की और कहा कि आप मध्यस्थता करें और साथ ही भारत

को समझाएं और सीजफायर कराएं। उन सभी देशों को भारत ने स्पष्ट रूप से बताया कि यह हमारा आपसी मामला है और कोई भी बीच में न आए। अगर पाकिस्तान सीजफायर चाहता है तो वह सामने से आकर हमसे बातचीत करे, जिस पर भारत विचार करेगा। उन्होंने कहा, बाद में पाकिस्तान ने खुद फोन किया और गुजारिश की, जिसके बाद सीजफायर किया गया। इसमें किसी भी देश ने कोई मध्यस्थता नहीं की थी। भारत ने पहले भी यही बात कही थी और आज भी पीएम मोदी ने इसी बात को दोहराया है। उन्होंने सीधे तौर पर कहा है कि हमारा ऑपरेशन जारी है। अगर कोई हम पर हमला करता है तो हम उस पर हमला करेंगे। हमको किसी की मध्यस्थता की जरूरत नहीं है। सीएम फडणवीस ने कांग्रेस पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा, ÷मुझे ऐसा लगता है कि उन्हें (कांग्रेस को) जवाब मालूम था, लेकिन ये लोग सोते नहीं हैं, बल्कि सोने का ढोंग करते हैं। इसलिए ढोंगी लोगों से आप क्या ही उम्मीद कर सकते हैं। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बीच 35 मिनट की बातचीत में कई विषयों पर चर्चा हुई।

केदारनाथ यात्रा मार्ग पर भूस्खलन, दो पालकी मजदूरों की मौत, तीन घायल

एजेंसी

रुद्रप्रयाग/गुप्तकाशी। केदारनाथ धाम की पैदल यात्रा मार्ग पर जंगलचट्टी के पास बुधवार को हुए भूस्खलन में दो पालकी मजदूरों की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य लोग घायल हो गए। घायलों को प्राथमिक उपचार के बाद गौरीकुंड अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जिला आपदा प्रबंधन अधिकारी नंदन सिंह रजवार ने जानकारी देते हुए बताया कि घटना सुबह करीब 11=20 बजे घटी, जब अचानक पहाड़ी से मलबा और पत्थर गिरने लगे। इससे कई डंडी-कंडी संचालक और यात्री चपेट में आ गए, जिनमें से कुछ नीचे खाई में गिर गए।उन्होंने बताया कि एसूचना मिलते ही एनडीआरएफ, एसडीआरएफ, पुलिस और डीडीआरएफ की टीमें सक्रिय हो गईं और संयुक्त रूप से रेस्क्यू ऑपरेशन शुरू किया। रेस्क्यू टीमों ने घायलों को खाई से बाहर निकालकर प्राथमिक उपचार कराया, जिसके बाद उन्हें तत्काल गौरीकुंड अस्पताल

भिजवाया। तीन घायलों में एक महिला को हल्की चोटें और दो पुरुषों को गंभीर चोट आई हैं। प्रशासन ने घायलों के उचित इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित की है। इस हादसे में दो डंडी कंडी संचालको की मृत्यु हो गई।

मृतकों की जानकारी

1. नितिन कुमार, निवासी जम्मू-कश्मीर (पालकी मजदूर)।
2. चंद्रशेखर, निवासी जम्मू-कश्मीर (पालकी मजदूर)।

पुणे में मोरगांव रोड पर भीषण हादसा, आठ लोगों की मौके पर मौत, कई घायल

एजेंसी

पुणे । महाराष्ट्र के पुणे जिले में जेजुरी मोरगांव रोड पर एक कार और पिकअप ट्रक के बीच जोरदार टक्कर हो गई। इस दुर्घटना में एक महिला समेत आठ लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में दो बच्चों समेत पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस घटनास्थल पर पहुंची और जांच शुरू कर दी गई है। यह हादसा किर्लोस्कर कंपनी के सामने शाम करीब 7=15 बजे हुई। जेजुरी से इंदापुर जा रही एक कार ने पास में खड़े एक पिकअप टेंपो को टक्कर मार दी।

घटनास्थल से मिली जानकारी के अनुसार, श्रीराम होटल के बाहर जब पिकअप टेंपो से सामान उतारा जा रहा था, तभी पीछे से कार ने जोरदार टक्कर मार दी। पीड़ितों में टेंपो से सामान उतार रहे कर्मचारी, होटल मालिक और कार में सवार यात्री शामिल हैं। दुर्घटना इतनी भीषण थी कि आठ लोगों की मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि पुणे से मोरगांव जा रही स्विफ्ट डिजायर कार (नंबर एमएच 42

एएक्स 1060) जेजुरी से मोरगांव जा रही थी।

इस दौरान कार ने श्रीराम ढाबा के सामने एक पिकअप टेम्पो (नंबर एमएच 12 एक्स एम 3694) को टक्कर मार दी। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ लग गई। पुलिस ने पहुंचकर शवों और घायलों को अस्पताल भेजा। बाद में क्रेन बुलाकर, कार और पिकअप को रास्ते से हटाया गया। जिले में पिछले कुछ समय में यह दूसरा बड़ा हादसा है। इससे पहले 15 जून को मावल तहसील में इंद्रायणी नदी पर बना पुल टूटने से चार लोगों की मौत की खबर सामने आई थी और 18 लोग घायल हो गए थे।

राजगढ़ जिले के पचोर में भीषण सड़क हादसा, चार की मौत पांच घायल

एजेंसी

राजगढ़ । मध्य प्रदेश के राजगढ़ जिले के पचोर में नेशनल हाईवे पर एक भीषण सड़क हादसे में चार लोगों की मौत हो गई, जबकि पांच लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसा सुबह करीब 8 से 9 बजे के बीच हुआ, जब एक एक्सयूवी 500 कार हाईवे पर डिवाइडर से टकरा गई।

मृतकों में दो बच्चे और दो वयस्क शामिल हैं। पुलिस के अनुसार, हादसे का कारण ड्राइवर को नींद की झपकी आना बताया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक, कार सवार सभी लोग उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले के दुबेपुरवा भवानीपुर मोजा से अयोध्या होते हुए सूरत जा रहे थे। कार में कुल नौ लोग सवार थे। पचोर के नेशनल हाईवे पर ड्राइवर को झपकी आने के कारण वाहन अनियंत्रित होकर डिवाइडर से जा टकराया। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। हादसे में दो बच्चों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दो अन्य लोगों ने शाजापुर जिला अस्पताल में दम तोड़ दिया। पांच घायल लोगों का इलाज विभिन्न अस्पतालों में जारी है।

हादसे के तुरंत बाद अहमदाबाद की ओर जा रहे एक एम्बुलेंस चालक

यग्नेश भाई रावल ने कार से धुआं उठता देखा। उन्होंने तत्परता दिखाते हुए आसपास के ट्रक चालकों की मदद से कार का दरवाजा तोड़ा और घायलों को बाहर निकाला। इस दौरान पचोर पुलिस भी एम्बुलेंस के साथ घटनास्थल पर पहुंच गई। पुलिस और स्थानीय लोगों ने मिलकर घायलों को तुरंत पचोर अस्पताल पहुंचाया, जहां से उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद राजगढ़ और शाजापुर जिला अस्पतालों में रेफर कर दिया गया। दो घायलों का इलाज सारंगपुर अस्पताल में चल रहा है, जबकि दो महिलाओं और दो बच्चों का पोस्टमॉर्टम शाजापुर और सारंगपुर अस्पतालों में किया जा रहा है। हादसे में मौजूद एक परिजन, आयुष दुबे, ने बताया कि वे लोग बुधवार शाम को दो कारों में सूरत के लिए रवाना हुए थे। हादसे के एक घंटे पहले ड्राइवर ने नींद की झपकी की शिकायत की थी। इसके बाद सभी ने एक ढाबे पर रुककर चाय पी और कुछ देर आराम किया। इसके बावजूद पचोर पहुंचते ही ड्राइवर को फिर से झपकी आ गई, जिससे यह दुखद हादसा हो गया। आयुष के पिता, भोलेनाथ दुबे, उस समय दूसरी कार में थे। पचोर पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस हादसे के सटीक कारणों का पता लगाने के लिए कार की तकनीकी जांच और चश्मदीदों के बयान दर्ज कर रही है। घायलों का इलाज जारी है, और उनके स्वास्थ्य की निगरानी की जा रही है।

जल संचयन एवं पौधरोपण का लें संकल्प, प्रदेश को बनाएं हरियालो राजस्थान : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

एजेंसी

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि 5 जून को पर्यावरण दिवस और गंगा दशहरे के शुभ संयोग पर प्रारंभ हुआ 'वंदे गंगा' जल संरक्षण-जन अभियान अपार जनसहयोग से जन-जन का अभियान बन रहा है। इस अभियान के तहत अब तक प्रदेशभर में आयोजित लगभग डेढ़ लाख गतिविधियों में 1 करोड़ 10 लाख नागरिकों की भागीदारी रही है। शर्मा जालोर में सीलू घाट पर जनसभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति में नदी, पहाड़ एवं प्रकृति को पूजा जाता है तथा 'वंदे गंगा' जल संरक्षण-जन अभियान प्रकृति को सहेजने के साथ ही संस्कृति को सम्मान देने का अवसर है। उन्होंने आह्वान किया कि वे सभी जल संचयन एवं पौधरोपण का संकल्प लेकर प्रदेश

को हरियालो राजस्थान बनाएं। इससे पहले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के तहत सीलू घाट पर नर्मदेश्वर महादेव मंदिर के दर्शन किए तथा मां नर्मदा की विधिवत पूजा-अर्चना एवं आरती करते हुए प्रदेश की खुशहाली एवं सुख-समृद्धि की कामना की। इस दौरान मुख्यमंत्री ने मंदिर परिसर स्थित वाटिका में पीपल का पौधा लगाकर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। मुख्यमंत्री ने कहा कि वंदे गंगा जल संरक्षण-जन अभियान के अन्तर्गत अब तक 20 हजार से अधिक जल स्त्रोतों के साथ ही, लगभग 17 हजार कार्यालयों, अस्पतालों एवं विद्यालयों की साफ-सफाई की गई। इस अभियान में 7 हजार पूर्ण कार्यों का अवलोकन-लोकार्पण हुआ और 2 हजार 200 नए कार्यों का शुभारंभ भी किया गया है। उन्होंने कहा कि जल संरक्षण गतिविधियों के अन्तर्गत लगभग 33 हजार स्थानों पर श्रमदान के कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि यह अभियान 20 जून तक ही सीमित नहीं रहेगा बल्कि आगामी समय में जल संरक्षण के क्षेत्र में प्रेरणा स्त्रोत के रूप में उभरेगा।

सुकमा जिले में एक हार्डकोर इनामी नक्सली सहित पांच नक्सलियों को गिरफ्तार कर भेजा गया जेल

सुकमा। छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले के जगरगुण्डा थाना क्षेत्रान्तर्गत सक्रिय पामेड़ एरिया कमेटी के दो लाख के एक हार्डकोर इनामी सहित 05 नक्सलियों को पुलिस ने गिरफ्तार न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है। सुकमा पुलिस अधीक्षक कार्यालय की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार नक्सल उन्मूलन अभियान के तहत बीते 16 जून को थाना जगरगुण्डा एसडीओपी तोमेश वर्मा जगरगुण्डा के हमराह जिला बल का बल एवं कैम्प पूवर्ती से एसी. अजय त्यागी, एसी. रवि चंदर के हमराह 150 वाहिनी सीआरपीएफ बल की संयुक्त पार्टी गश्त ड्यूटी एवं नक्सल आरोपितों की गिरफ्तारी के लिए ग्राम पूवर्ती एवं आसपास क्षेत्र की ओर रवाना हुए थी। इस दौरान ग्राम पूवर्ती के मिसीपारा और ओईपारा की घेराबंदी कर थाना जगरगुण्डा के प्रकरण में फरार चल रहे पामेड एरिया कमेटी के सक्रिय 05 नक्सलियों को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार नक्सलियों में दो लाख का इनामी मुचाकी बुधरा (35 वर्ष), पूवर्ती आरपीसी मिलिशिया कमांडर, निवासी पूवर्ती ओईपारा थाना जगरगुण्डा जिला सुकमा शामिल हैं। इसके अतिरिक्त माड़वी सोमडू (30 वर्ष), पूवर्ती आरपीसी मिलिशिया सदस्य, निवासी पूवर्ती मिसीपारा थाना जगरगुण्डा जिला सुकमा, कुंजाम बिच्चेम(25 वर्ष), पूवर्ती आरपीसी मिलिशिया सदस्य, निवासी पूवर्ती मिसीपारा थाना जगरगुण्डा जिला सुकमा, माड़वी धुरवा (30 वर्ष), पूवर्ती आरपीसी मिलिशिया सदस्य, निवासी पूवर्ती डब्बापारा थाना जगरगुण्डा जिला सुकमा एवं डोडी सोमडू (30 वर्ष), पूवर्ती आरपीसी मिलिशिया सदस्य,निवासी पूवर्ती नदमापारा थाना जगरगुण्डा जिला सुकमा को गिरफ्तार किया गया है।

निर्यात के अवसरों से भारत में हरित हाइड्रोजन की मांग में 1.1 एमएमटी तक की वृद्धि की उम्मीद : रिपोर्ट

एजेंसी

नई दिल्ली। भारत ने 2030 तक 5 मिलियन मीट्रिक टन (एमएमटी) हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता बनाने का लक्ष्य रखा है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बड़े पैमाने पर हरित हाइड्रोजन की मांग को पेश करना महत्वपूर्ण है। गुरुवार को आई एक रिपोर्ट के अनुसार, निर्यात के अवसरों से हरित हाइड्रोजन की मांग में 1.1 एमएमटी तक की वृद्धि हो सकती है। बैन एंड कंपनी, भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और रॉकी माउंटेन इंस्टीट्यूट (आरएमआई) की संयुक्त रिपोर्ट के अनुसार, हालांकि मांग पक्ष पर समान प्रोत्साहन के बिना यह क्षमता अप्रयुक्त रह सकती है। रिपोर्ट में स्पष्ट मार्ग की रूपरेखा दी गई है कि भारत किस तरह से हरित हाइड्रोजन की बड़े पैमाने पर मांग को प्रोत्साहित कर सकता है और अपने लक्ष्य को वास्तविकता में बदल सकता है। रिपोर्ट के अनुसार, ऑयल रिफाइनिंग, उर्वरक उत्पादन और पाइप्ड नेचुरल गैस (पीएनजी) वितरण जैसी मौजूदा औद्योगिक प्रक्रियाओं में ग्रीन हाइड्रोजन को मिलाकर 2030 तक 3 एमएमटी तक की मांग पैदा की जा सकती है। ग्लोबल फ्रंट पर, ग्रीन हाइड्रोजन, अमोनिया और ग्रीन स्टील के निर्यात से 1.1 एमएमटी का योगदान हो सकता है, जबकि इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए ग्रीन स्टील की सार्वजनिक खरीद से 0.6 एमएमटी की मांग पैदा हो सकती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि ग्रीन हाइड्रोजन का छोटा प्रतिशत भी मिलाना (रिफाइनिंग में 10 प्रतिशत और उर्वरकों में 20 प्रतिशत) न्यूनतम लागत वृद्धि के साथ हासिल किया जा सकता है। जैसे-जैसे उत्पादन लागत में गिरावट जारी रहेगी, इन मिश्रण दरों को बढ़ाया जा सकता है, जिससे अंतिम उपयोगकर्ताओं पर दबाव डाले बिना उच्च मांग को सक्षम किया जा सके। रिपोर्ट में रसायन, कांच और सिरेमिक जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में अवसरों पर भी प्रकाश डाला गया है। ये उद्योग पहले से ही हाइड्रोजन का बड़े पैमाने पर उपयोग करते हैं और ग्रीन हाइड्रोजन के साथ छोटे पैमाने पर प्रतिस्थापन - विशेष रूप से स्मॉल प्लेयर्स के लिए, जो ग्रे हाइड्रोजन के लिए अधिक भुगतान करते हैं, वे 2030 तक 0.07 एमएमटी तक की अतिरिक्त मांग को बढ़ा सकते हैं। रिपोर्ट में एक और महत्वपूर्ण सुझाव सार्वजनिक खरीद का लाभ उठाना है। पुल, आवास और रेलवे जैसी सरकारी परियोजनाओं में ग्रीन स्टील के उपयोग को अनिवार्य कर सरकार एक एंकर ग्राहक के रूप में कार्य कर सकती है और दीर्घकालिक मांग स्थिरता बना सकती है। रिन्यूएबल एनर्जी में भारत की बढ़ती ताकत और अपेक्षाकृत कम उत्पादन लागत भी इसे वैश्विक मांग का लाभ उठाने के लिए अच्छी स्थिति में रखती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि अगर भारत यूरोपीय संघ और दक्षिण कोरिया जैसे देशों की ग्रीन हाइड्रोजन आयात जरूरतों का केवल 5-7.5 प्रतिशत ही पूरा कर पाता है ।

आत्मनिर्भरता और आत्म गौरव का प्रभावी माध्यम ग्रामीण पर्यटन : मुख्यमंत्री डॉ यादव

एजेंसी

भोपाल। ग्रामीण पर्यटन आत्मनिर्भरता और आत्म गौरव का प्रभावी माध्यम है। ग्राम स्तर पर पर्यटन गतिविधियों से जहां युवाओं को स्थानीय स्तर पर रोजगार और आर्थिक उन्नति के अवसर उपलब्ध होते हैं, वहीं पर्यटन गतिविधियां, हमारी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, तीज-त्योहार-पर्व और खानपान को राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में भी सहायक होती हैं। प्रदेश में विकसित हो रहे होम-स्टे भारतीय सांस्कृतिक परंपरा के अतिथि देवो भव- के भाव को चरितार्थ करने का माध्यम बन रहे हैं। होम-स्टे संचालनकर्ता और राज्य सरकार का यह प्रयास है कि प्रदेश में आने वाले सभी अतिथि प्रदेश के बारे में सकारात्मक छवि और अच्छी स्मृतियां साथ लेकर जाएं। उक्त बातें मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि कहीं हैं। वे भोपाल में ग्रामीण रंग पर्यटन संग राज्य स्तरीय उत्सव को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा, पर्यटन के साथ पंचायत एवं ग्रामीण विकास, जनजातीय कार्य विभाग आदि समन्वित रूप से इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति में तीर्थाटन की परंपरा सदियों से रही है। दुनिया के लोग शौक और आनंद के लिए घर से निकलते हैं, वहां भारत के लोग चारधाम की मोक्ष यात्रा पर निकलते हैं, जहां वे सनातन सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात करते हुए अन्य प्रदेशों की विविध जीवनशैली और परंपराओं से परिचित होते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भारतीय मूल्यों के अनुरूप परस्पर विश्वास की भावना को बढ़ा रहे हैं। वैश्विक स्तर पर उथल-पुथल के बावजूद भी देश प्रगति पथ पर अग्रसर है। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने कहा कि प्रदेश में जल्द ही उत्तराखंड की तर्ज पर स्टेट टूरिज्म बोर्ड के माध्यम से पर्यटकों के लिए हेलीकॉप्टर सर्विस शुरू की जाएगी। प्रदेश सरकार ने पर्यटकों के लिए वेलनेस सुविधाएं बढ़ाने के लिए समिट की है। वे यहां आएंगे तो उन्हें वन्य जीव पर्यटन, धार्मिक पर्यटन के साथ स्वास्थ्य सुविधाएं भी मिलेंगी। इससे प्रदेश का मेडिकल टूरिज्म बढ़ेगा और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को लाभ होगा। प्रदेश टूरिज्म बोर्ड अपने दम पर विकास के पथ पर अग्रसर है। टूरिज्म बोर्ड के प्रचार-प्रसार के लिए तैयार की गई फिल्में अद्भुत थीं। नए सिरे से इनके उपयोग के लिए कार्ययोजना तैयार की जाए। मध्यप्रदेश पर्यटन क्षेत्र में भारत ही नहीं दुनिया में शीर्ष स्थान प्राप्त करेगा।

भाजपा सांसद अभिजीत गांगोपाध्याय की हालत गंभीर, आईसीयू में शिफ्ट किया गया

एजेंसी

कोलकाता । भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सांसद और कोलकाता हाई कोर्ट के पूर्व जस्टिस अभिजीत गांगोपाध्याय की हालत गंभीर बनी हुई है। उन्हें कोलकाता के वुडलैंड्स मल्टीस्पेशलिटी अस्पताल के गहन चिकित्सा कक्ष (आईसीयू) में शिफ्ट किया गया है। विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम लगातार उनकी निगरानी कर रही है। 63 वर्षीय गांगोपाध्याय को 14 जून को पेट दर्द, उल्टी और पेट फूलने की शिकायत के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जांच में तीव्र पैंक्रियाटाइटिस और गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल सेप्सिस की पुष्टि हुई। अस्पताल के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यकारी अधिकारी रूपक बरुआ ने बुधवार रात बताया कि गांगोपाध्याय की हालत 24 घंटों में थोड़ी बेहतर जरूर हुई है, लेकिन उन्हें आईसीयू में विशेष निगरानी में रखा गया है। उन्होंने कहा, स्थिति गंभीर है और हम कोई जोखिम नहीं ले रहे हैं। विशेषज्ञ डॉक्टरों की मल्टी स्पेशलिस्ट टीम उनकी देखभाल कर रही है। इस टीम में आंतरिक चिकित्सा विशेषज्ञ, हृदय रोग विशेषज्ञ, फेफड़े के रोग विशेषज्ञ, एंडोक्रिनोलॉजिस्ट, गैस्ट्रोएंट्रोलॉजिस्ट और पाचन तंत्र के सर्जन शामिल हैं। सोमवार को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार पार्टी नेताओं के साथ अस्पताल पहुंचे और डॉक्टरों से उनका हालचाल जाना। भाजपा नेताओं ने उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

इंदौर में मिले कोरोना के 12 नए मामले, सक्रिय मरीज बढ़कर 75 हुए

एजेंसी

इंदौर। मध्य प्रदेश के इंदौर शहर में कोरोना के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। यहां कोविड-19 के 12 नए संक्रमित मरीज सामने आए हैं। ये सभी मरीज स्थानीय निवासी हैं और फिलहाल उन्हें होम आइसोलेशन में रखा गया है। नए मामलों के साथ इस साल अब तक शहर में कोरोना संक्रमितों की संख्या 140 से अधिक हो चुकी है, जिनमें से 132 मरीज इंदौर के ही हैं। वर्तमान में इंदौर में सक्रिय मरीजों की संख्या 75 पर पहुंच गई है। इससे पहले भी शहर में आठ नए मामले दर्ज किए गए थे। स्वास्थ्य अधिकारियों के अनुसार,

इनमें से किसी मरीज की ट्रैवल हिस्ट्री नहीं पाई गई है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संक्रमण अब लोकल स्तर पर फैल रहा है। इंदौर के मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. माधव हसानी ने बताया कि सभी संक्रमितों में हल्के लक्षण देखने को मिले हैं और स्थिति चिंताजनक नहीं है। उन्होंने आम जनता से सतर्क रहने और कोविड-19 से संबंधित सावधानियों का पालन करने की अपील की है, खासकर भीड़भाड़ वाले स्थानों से बचने की सलाह दी गई है। उन्होंने बताया कि शहर में कोविड जांच की सुविधा अभी भी उपलब्ध है। एमवाय अस्पताल और एमआरटी में सरकारी स्तर पर निःशुल्क जांच करवाई जा सकती है। इसके अलावा मान्यता प्राप्त निजी लैब्स में भी टेस्टिंग की सुविधा मौजूद है। गौरतलब है कि इस वर्ष अब तक इंदौर में कोविड-19 से संक्रमित तीन महिलाओं की मृत्यु हो चुकी है। इनमें एक 72 वर्षीय महिला को किडनी सहित कई अन्य गंभीर बीमारियां थीं। अन्य दो महिलाएं खरगोन और रतलाम की रहने वाली थीं, जिन्हें पहले से स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं थीं।

छोटा चूहा

छोटा चूहा
नरम नरम सा
भूरा भूरा।
रेशम के धागों से जैसे
बुना हुआ सा।
मोती सी चमकीली आंखें
इसने मुझको काट लिया था।
शायद वो यह भूल गया था
यह भी तो
मेरे कमरे में ही
रहता है।
मेरी ही गुडियों के कपडे
और किताबें –
जातक कथा वेताल पचीसी
और पश्चिम की लोक कथाएं
खा खा कर यह बडा हुआ है
और अभी भी विश्वकोष के
शब्दकोष के पन्नों को
कुतरा करता है
इसी तरह पला करता है।
मेरी नीली साडी क़ा कोना काटा है
नये ट्राउजर्स थे मेरे छेद कर दिया
मेरी नारंगी चुन्नी को
काट खा गया
ना जाने किस रोज शरारे की बारी है ?
जाने दो इतना छोटा है
माफ कर दिया।
तन का जब इतना छोटा है
कहां इसे होगा दिमाग
कि याद रख सके
कौन कहां किसकी चीजे हैं।
केवल अपना पेट पालना
सीख लिया है
लेकिन यह भी क्या कम है सुंदर लगता है।
मेरे लाल गलीचे पर
घूमा करता है।
घूम घूम कर मेरे बहुत उदास दिनों में
एकाकीपन का एहसास
हरा करता है।

बड़ा कौन

एक बार राजा कृष्णदेव राय महल में अपनी रानी के पास विराजमान थे। तेनालीराम की बात चली, तो बोले सचमुच हमारे दरबार में उस जैसा चतुर कोई और नही है इसलिए अभी तक तो कोई उसे हरा नही पाया है।

यह बात सुनकर रानी बोली, आप कल तेनालीराम को भोजन के लिए महल में आमंत्रित करें। मैं उसे जरूर हरा दूंगी। राजा ने मुस्कुराकर हामी भर ली। अगले दिन रानी ने अपने अपने हाथों से स्वादिष्ट पकवान बनाए। राजा के साथ बैठा तेनालीराम उन पकवानों की जी-भरकर प्रशंसा करता हुआ खाता जा रहा था। खाने के बाद रानी ने उसे बढ़िया पान का बीड़ा भी खाने को दिया।

तेनालीराम मुस्कराकर बोला, 'सचमुच, आज जैसा खाने का आनंद तो मुझे कभी नहीं आया!'

तभी रानी ने अचानक पूछ लिया, 'अच्छा तेनालीराम एक बात बताओ। राजा बड़े हैं या मैं?

अब तो तेनालीराम चकराया। राजा-रानी दोनों ही उत्सुकता से देख रहे थे कि भला तेनालीराम क्या जवाब देता है। अचानक तेनालीराम को जाने क्या सूझी, उसने दोनों हाथ जोड़कर पहले धरती को प्रणाम किया, फिर एकाएक जमीन पर गिर पड़ा। रानी घबराकर बोली, 'अरे-अरे, यह क्या तेनालीराम?' तेनालीराम उठकर खड़ा हुआ और बोला 'महारानीजी, मेरे लिए तो आप धरती हैं और राजा आसमान! दोनों में से किसे छोटा, किसे बड़ा कहूं कुछ समझ में नहीं आ रहा है! वैसे आज महारानी के हाथों का बना भोजन इतना स्वादिष्ट था कि उन्हीं को बड़ा कहना होगा इसलिए मैं धरती को ही दंडवत प्रणाम कर रहा था।' सुनकर राजा और रानी दोनों की हंसी छूट गई। रानी बोली 'सचमुच तुम चतुर हो तेनालीराम। मुझे जिता दिया, पर हारकर भी खुद जीत गए।' इस पर महारानी और राजा कृष्णदेव राय के साथ तेनालीराम भी खिल-खिलाकर हंस दिए।

हाथी भैया का ब्याह

चूहे के छोटे से बिल में,
चार–चार हाथी घुस आए।
डर के मारे बिल के सारे,
चूहे बहुत–बहुत घबराए।

तब चूहों के 'मुखिया दादा',
सभी हाथियों पर चिल्लाए।
'बहू बेटियों वाले घर में,
बिना इजाजत क्यों घुस आए'
हाथी बोले, बहू बेटियों,
को हम ढेरों तोहफे लाए।
बचा एक कुंवारा हाथी है,
दुल्हन, उसे ढूढ़ने आए।
इसी बात पर चूहे दादा,
हुए मुदित, मन में मुस्काए।
प्यारी बिटिया मिस चुहिया को,
सजा धजा कर बाहर लाए।

नाकताम मच्छर

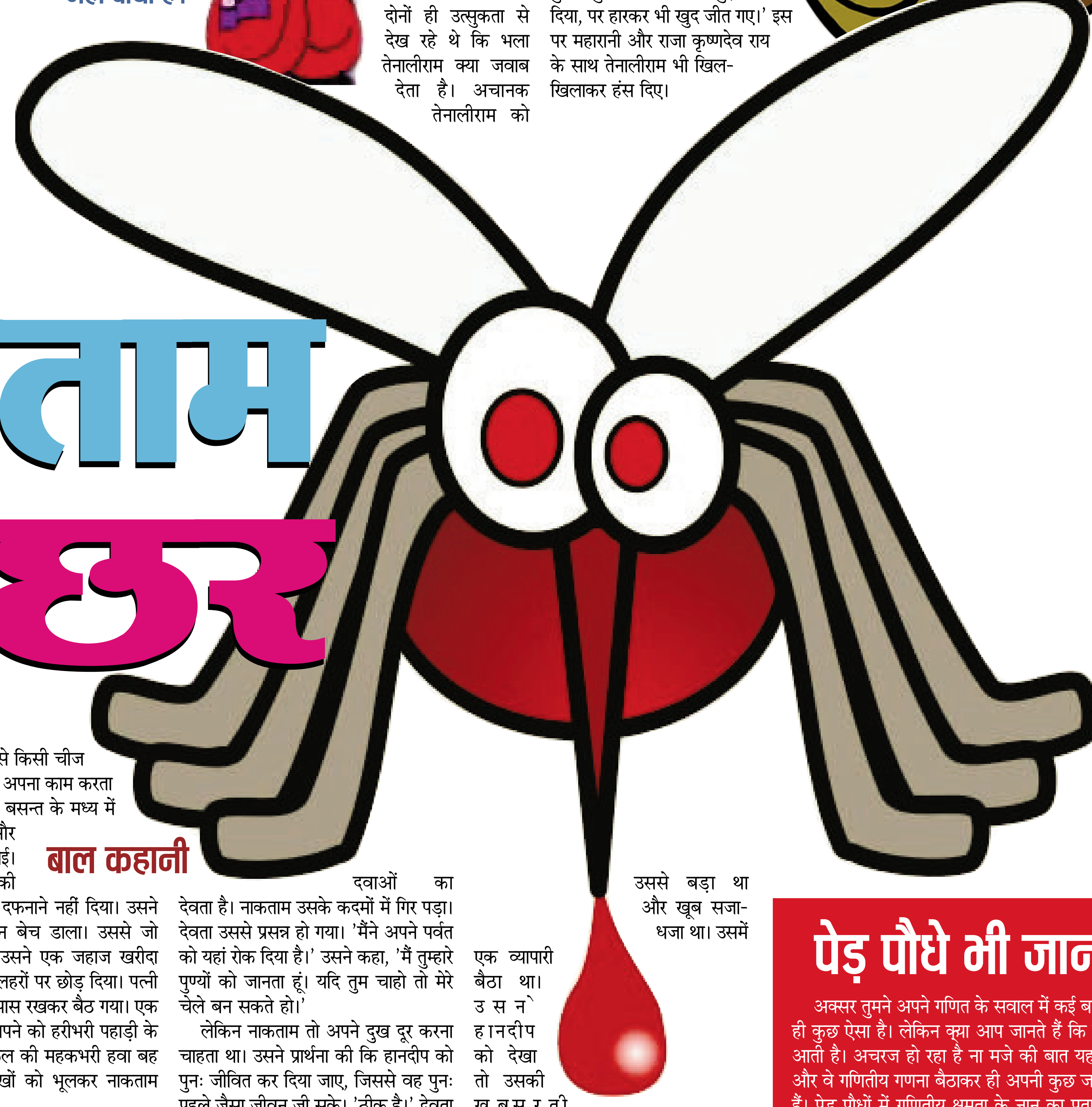

बाल कहानी

बहुत पुराने जमाने की बात है। एक सीधा-साधा किसान था। उसका नाम नाकताम था। उसका विवाह हानदीप नामक लड़की से हुआ था। हानदीप युवा और खूबसूरत थी। वह बहुत सुशील और मीठा बोलने वाली भी थी। दोनों सुखी जीवन बिताने के लिए सादगी से रहते थे और मेहनत करते थे। नाकताम धान के दो-चार खेत निहारता था और शहतूत का खेत देखता था। उसकी पत्नी रेशम के कीड़े पालती। हानदीप वास्तव में आरामतलब और सदा अपनी प्रशंसा की भूखी रहती थी। लेकिन उसने इस बात को अपने पति से छिपाए रखा। उसका पति उस पर बहुत विश्वास करता था और उससे किसी चीज की मांग किए बिना अपना काम करता रहता था। एक बार बसन्त के मध्य में मौत आई और हानदीप को ले गई। नाकताम के दुख की सीमा न रही। उसे दफनाने नहीं दिया। उसने अपना सारा सामान बेच डाला। उससे जो पैसा मिला उससे उसने एक जहाज खरीदा और एक नदी की लहरों पर छोड़ दिया। पत्नी का शव भी अपने पास रखकर बैठ गया। एक दिन सुबह उसने अपने को हरीभरी पहाड़ी के नीचे पाया। वहां फूल की महकभरी हवा बह रही थी। अपने दुखों को भूलकर नाकताम बाहर निकला और पहाड़ी पर चढ़ चला। जब वह चोटी के पास पहुंचा तो वहां वह एक बहुत बुढ़े आदमी को देखकर चौंका। वह बूढ़ा आदमी बांस की लाठी के सहारे खड़ा था। उसके चेहरे पर झुर्रियां पड़ी थीं, किन्तु उसकी मुस्कराहट सूरज की किरण?जैसी थी। उसकी आंखों में बच्चों की आंखों जैसी चमक थी। उसके बाल बादलों की तरह से लहरा रहे थे। उसकी बड़ी-बड़ी पलकों को देखकर नाकताम ने पहचान लिया कि वह दवाओं का देवता है। नाकताम उसके कदमों में गिर पड़ा। देवता उससे प्रसन्न हो गया। 'मैंने अपने पर्वत को यहां रोक दिया है।' उसने कहा, 'मैं तुम्हारे पुण्यों को जानता हूं। यदि तुम चाहो तो मेरे चेले बन सकते हो।'

लेकिन नाकताम तो अपने दुख दूर करना चाहता था। उसने प्रार्थना की कि हानदीप को पुनः जीवित कर दिया जाए, जिससे वह पुनः पहले जैसा जीवन जी सके। 'ठीक है।' देवता ने कहा, 'अगर तुम तकलीफों में ही रहना चाहते हो तो तुम्हारी मर्जी। पर तुम पछताओगे।'

इसके बाद उसने हानदीप को जीवित करने का उपाय बता दिया। उसके बताए हुए तरीके से नाकताम ने अपनी अंगुली का पोरू काटा और तीन बूंद खून हानदीप पर टपका दिया। उसने धीरे-धीरे अपनी आंखें खोलीं, जैसे वह गहरी नींद में सो कर उठी हो। जब वह पूरी तरह से जाग गई तो देवता से उसे समझाया कि नाकताम की सेवा को कभी मत भूलना। इसके बाद वह देवता चला गया। और वे दोनों जहाज में बैठकर अपने घर की ओर चल दिए। जब वे लौट रहे थे तब एक रात को नाकताम खाने की तलाश में समुद्र के किनारे जहाज का लंगर डाल कर चला गया। तभी एक और जहाज उसके पास आकर रुका। वह उससे बड़ा था और खूब सजा-धजा था। उसमें एक व्यापारी बैठा था। उसने हानदीप को देखा तो उसकी खूबसूरती देखकर वह अवाक रह गया। उसने उसे अपने जहाज में एक कप चाय पिलाने के लिए बुलाया। कुछ देर के बाद वह जहाज चला गया। लौटने पर नाकताम ने हानदीप को वहां न पाकर पागलों की तरह खोजा। परन्तु वह फिर उसके हाथ से निकल गई थी। एक माह के बाद उसने उसे ढूंढ़ निकाला, किन्तु हानदीप शान ओ शौकत की आदी हो गई थी। अतः उसने नाकताम से स्पष्ट कह दिया, 'तुम अपने रुखे-सूखे में मस्त रहो।' यह बात उसने बड़ी मीठी आवाज में कही।

इस पर नाकताम ने भी कह दिया, 'जाओ, तुम्हें जहां जाना हो वहां जाओ। मुझसे कोई मतलब नहीं।' मगर जाने से पहले याद रखना कि मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करुंगा। मैंने ही तुम्हें दोबारा जिदा करवाया है।'हानदीप ठहाका लगा कर हंसी, 'तुम समझते हो कि तीन बूंद खून का इतना महत्व है। लो, यह ले लो।' उसने अपनी अंगुली काट कर खून निकाल लिया। पर जैसे ही उसकी अंगुली से तीन बूंद खून निकला, वह गिर पड़ी और मर गई। फिर वह एक मच्छर के रूप में वापस आ गई। और उस आदमी को जीवनभर मनाती रही। कान में भनभनाती रही, क्षमा मांगती रही और तीन बूंद खून की भीख मांगती रही।

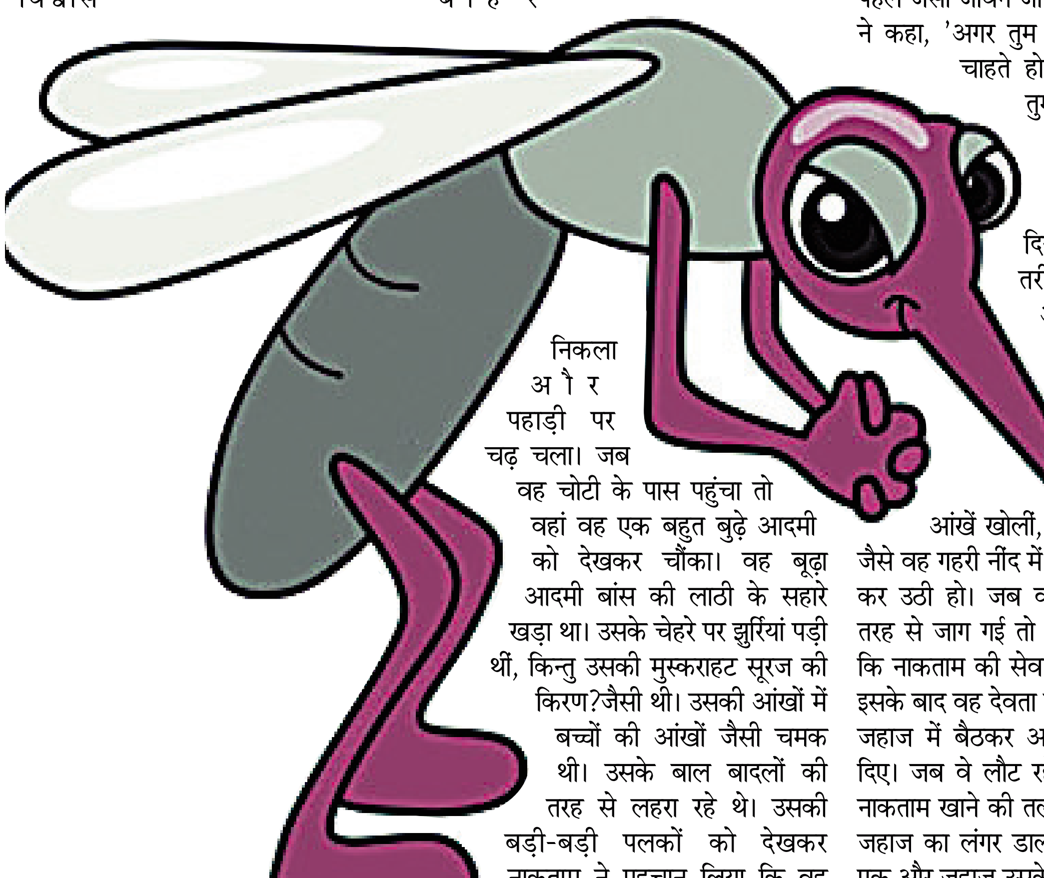

पेड़ पौधे भी जानते हैं गणित

अक्सर तुमने अपने गणित के सवाल में कई बार माथ-पच्ची की होगी। ये गणित होता ही कुछ ऐसा है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि एक ऐसा पेड़ है जो गणित अच्छी से आती है। अचरज हो रहा है ना मजे की बात यह है कि गणित को पेड़-पौधे जानते हैं और वे गणितीय गणना बैठाकर ही अपनी कुछ जटिल समस्याओं को नियंत्रित कर पाते हैं। पेड़ पौधों में गणितीय क्षमता के ज्ञान का पता लगाने वाले वैज्ञानिकों का कहना है कि पेड़-पौधों का गणितीय ज्ञान उनके अंदर ही निहित होता है, उन्हें इसे किसी से सीखने की जरूरत नहीं होती... यही वजह है कि वे रात में भोजन न मिल पाने की स्थिति में भी संभले रह पाते हैं।

वैज्ञानिकों ने अपने इस शोध के परिणाम को जांचने के लिए एराबिडोप्सिस नाम के पौधे को माडल के लिए प्रयुक्त किया। शोध से जुड़े वैज्ञानिकों ने ई-लाइफ जर्नल के द्वारा यह जानकारी दी कि रात में उपभोग किए जाने वाले स्टार्च की मात्रा की गणना पेड़-पौधों द्वारा गुणा-भाग बैठाकर ही की जाती है... इस प्रक्रिया में पत्तियों के रसायन शामिल होते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार पेड़-पौधों को रात में अपने स्टार्च की मात्रा की पूर्ति के लिए एक तरह का गणित लगाना पड़ता है। रात में सूर्य की रोशनी की अनुपस्थिति में पेड़-पौधे कार्बन डाइ-ऑक्साइड को शर्करा और स्टार्च में न बदल पाने के स्थिति से निपटने के लिए कुछ गणितीय गणनाओं के आधार पर अपने स्टार्च के भंडार को नियंत्रित करते हैं। यह प्रक्रिया दो तरह के अणुओं.. स्टार्च के लिए एस अणु और समय के लिए टी अणु की सघनता द्वारा नियंत्रित होती है। रात को जब सूर्य की रोशनी नहीं होती तो पत्तियों में उपस्थित प्रणाली स्टार्च के भंडार का पता लगाती है। वैज्ञानिकों ने अपने इस शोध की परिकल्पना के आधार पर ही यह भी संभवना व्यक्त की है कि इसी विधि के द्वारा ही संभवतया पक्षी भी प्रवास के दौरान वसा के स्तर को संरक्षित रख पाने में सक्षम होते हैं।

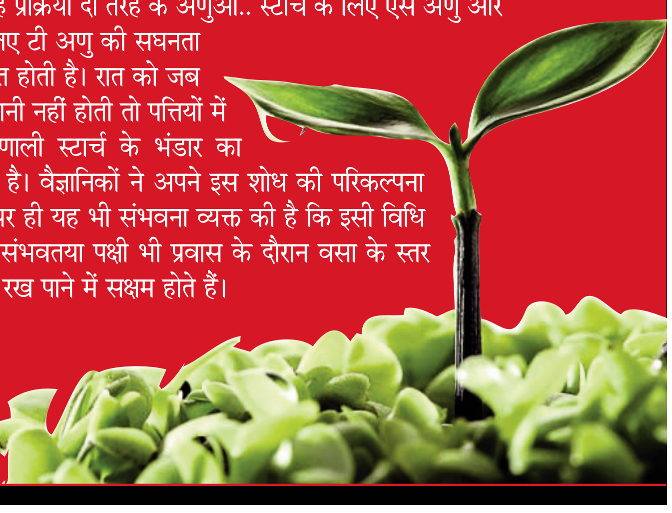

सान्या मल्होत्रा ने अपने सिग्नेचर माचा ब्लेंड के साथ एंटरप्रेन्योरशिप में कदम रखा

ऐसी इंडस्ट्री में जहाँ रफ्तार अक्सर ठहराव पर हावी हो जाती है, सान्या मल्होत्रा ने एक अलग राह चुनने का फैसला किया है। अपनी दमदार अभिनय क्षमता और ज़मीन से जुड़ी सादगी के लिए मशहूर, इस प्रशंसित अभिनेत्री ने अब अपने नाम के आगे एंटरप्रेन्योर का टैग भी जोड़ लिया है। अपना खुद का माचा वेंचर शुरू किया है, जो उनके व्यक्तिगत जीवन दर्शन- संतुलन, शांति और सजग जीवनशैली- को दर्शाता है। सान्या मल्होत्रा ने डॉ. कुणाल शाह और सिद्धार्थ शाह, जो कि क्लीन-लेबल वेलनेस में एक विश्वसनीय नाम, एसेंज़ा न्यूट्रिशन के संस्थापक हैं, उनके साथ साझेदारी की है, इस साझेदारी के तहत उन्होंने ब्री माचा नाम की एक प्रीमियम लाइफस्टाइल ब्रांड पेश किया है, जो पारंपरिक जापानी चाय संस्कृति की शांति, स्पष्टता और अनुष्ठान से प्रेरित है। यह नई वेलनेस पेशकश सिर्फ़ एक व्यावसायिक कदम नहीं है, बल्कि यह सान्या की एक निजी आदत को सार्वजनिक रूप देने जैसा है। सान्या मल्होत्रा ने कहा, ऐसे समय में जब सब कुछ तत्कालिन लगता है, ब्री माचा मुझे धीमा होने और सोच-समझकर काम करने की व्यक्तिगत याद दिलाता है। यह एक एसा अनुष्ठान है जिस पर मैं गहराई से विश्वास करती हूं, और मुझे गर्व है कि मैं कुछ ऐसा बना रही हूं जो प्राकृतिक ऊर्जा और शांतिपूर्ण फोकस को समर्थन देता है। वेलनेस और लाइफस्टाइल की दुनिया में उनका यह कदम एक महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है, जहाँ सेलिब्रिटी न केवल उत्पादों का प्रचार कर रहे हैं, बल्कि उन्हें नए सिरे से बना रहे हैं।
सान्या मल्होत्रा की नई पहल स्वच्छ ऊर्जा, मानसिक स्पष्टता और सोच-समझकर जीने के मूल्यों को बढ़ावा देती है। जो उनकी अपनी शांत आभा और स्टारडम के प्रति विचारशील दृष्टिकोण को दर्शाता है। और जब वह अपनी एंटरप्रेन्योरशिप की नई कहानी लिख रही हैं, सान्या का अभिनय करियर भी पूरी रफ़्तार पर है। 'मिसेज' में उनके शानदार प्रदर्शन जिसे दर्शकों और आलोचकों दोनों ने समान रूप से सराहना की है, वहीं ठग लाइफ के हाई-एनर्जी ट्रैक जिंगुचा में उनके जबरदस्त प्रदर्शन ने इंटरनेट पर धूम मचा दी है, जिसमें उनकी गहन उपस्थिति और सहज करिश्मा को सराहा जा रहा है। सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी जैसी बहुप्रतीक्षित परियोजनाओं और अनुराग कश्यप और बॉबी देओल के साथ एक रोमांचक सहयोग के साथ, सान्या ध्यानपूर्वक ब्रांडिंग और आकर्षक परफॉर्मेंस से परिवर्तन की दोनों दुनियाओं को सहजता से संतुलित कर रही हैं।

तृप्ति डिमरी की लव स्टोरी पर लगा ब्रेक

हीरोइन नंबर वन बनने को बेकरार अभिनेत्री तृप्ति डिमरी की मलयालम सिनेमा के सुपरस्टार फहाद फासिल के साथ प्रस्तावित निर्देशक इम्तियाज अली की फिल्म अनिश्चतकाल के लिए स्थगित हो गई है। ये फिल्म रिलायंस एंटरटेनमेंट के साथ बनी इम्तियाज की साझा कंपनी विंडो सीट फिल्म्स के बैनर तले बननी है, लेकिन रिलायंस के सूत्र बताते हैं कि इस फिल्म के लिए अभी तक बजट मंजूर नहीं हुआ है। जानकारी के मुताबिक फहाद फासिल ने भी फिल्म के लिए आवंटित तारीखें अब दूसरी फिल्मों को दे दी हैं। फिल्म 'एनिमल' में फिल्म में मिले उपनाम भाभी 2 को लेकर सोशल मीडिया पर खूब ट्रेंडिंग रहीं अभिनेत्री तृप्ति डिमरी का करियर इन दिनों नई उड़ान पर है। हालांकि, इस फिल्म के बाद आई उनकी दो फिल्में 'बैड न्यूज' और 'विक्की विद्या का वो वाला वीडियो' फ्लॉप रहीं लेकिन फिल्म 'भूल भुलैया 3' ने उनकी पोजीशन फिर संभाल ली है। इस फिल्म के बाद से ही तृप्ति की मांग काफी बढ़ चुकी है।
इस साल की उनकी पहली फिल्म 'धड़क 2' अब जल्द रिलीज होने वाली है। तृप्ति डिमरी की इस साल की पहली फिल्म की रिलीज जैसे जैसे करीब आती जा रही है, उनको अपनी फिल्मों में लेने वाले निर्माता-निर्देशकों की सांसें तेज होती जा रही है। 1 अगस्त को रिलीज होने जा रही तृप्ति की फिल्म 'धड़क 2' में उनके हीरो सिद्धांत चतुर्वेदी की सिनेमाघरों में सोलो लीड वाली ये दूसरी फिल्म होगी। सिद्धांत का जैसा हाल बॉक्स ऑफिस पर रहा है, उससे खुद तृप्ति की भी रातों की नींद उड़ी हुई है।
गौरतलब है कि सिद्धांत की पिछली फिल्म 'युधरा' रिलीज के पहले दिन ही फ्लॉप घोषित हो गई थी। इस बीच तृप्ति डिमरी हाल ही में दीपिका पादुकोण द्वारा छोड़ी गई फिल्म 'स्पिरिट' के लिए अभिनेता प्रभास के साथ साइन होने के बाद से सुर्खियों में हैं। दीपिका ने ये फिल्म काम के घंटे तय न होने के चलते छोड़ी है। तृप्ति के पास 'स्पिरिट' के ही निर्देशक संदीप रेड्डी वांगा की फिल्म 'एनिमल पार्क' भी है जिसमें वह फिल्म 'एनिमल' का अपना किरदार आगे बढ़ाती नजर आएंगी।
इतनी उथल पुथल के बीच हालांकि इम्तियाज अली वाली फिल्म की शूटिंग शुरू न हो पाने का सीधा असर तृप्ति की दूसरी फिल्मों पर भी जरूर पड़ेगा। उधर, विंडो सीट फिल्म्स के सूत्रों के मुताबिक अभी निर्देशक इम्तियाज अपनी जिस फिल्म में व्यस्त हैं, उसकी रिलीज अगले साल बैसाखी पर प्रस्तावित है। फहाद और तृप्ति की फिल्म की शूटिंग अगर शुरू हुई तो उसके बाद ही हो सकेगी।

'डॉन 3' में कियारा को रिप्लेस करेंगी कृति सेनन!

कृति सेनन इन दिनों अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट्स को लेकर सुर्खियों में हैं। इसी बीच अब खबरें आ रही हैं कि एक्ट्रेस फिल्म डॉन 3 में नजर आ सकती हैं। हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो सामने आया है, जिसमें जब पैपराजी ने कृति को लेडी डॉन कहकर बुलाया, तो वह मुस्कुरा दीं। इसके बाद से यह अटकलें लगाई जा रही हैं कि कियारा आडवाणी की जगह अब कृति सेनन फिल्म में नजर आ सकती हैं। कृति सेनन मुंबई में किसी इवेंट में शिरकत करने पहुंची थीं। जैसे ही वह बाहर आईं, पैपराजी ने उन्हें पोज देने के लिए कहा। इसी दौरान पहले उन्हें परम सुंदरी कहकर पुकारा गया और फिर डॉन-डॉन की आवाजें आने लगीं। इतना ही नहीं, एक फोटोग्राफर ने उन्हें लेडी डॉन भी कह दिया। यह सुनते ही कृति ने कोई जवाब तो नहीं दिया, लेकिन वह मुस्कुराती हुई नजर आईं।
रिपोर्ट के मुताबिक, कृति सेनन ने फिल्म डॉन 3 में रणवीर सिंह के साथ काम करने के लिए हामी भर दी है। अभी उन्होंने फिल्म साइन नहीं की है, लेकिन जल्दी ही कर सकती हैं। रिपोर्ट में आगे कहा गया है कि डायरेक्टर फरहान अख्तर और

उनकी टीम को ऐसी एक्ट्रेस चाहिए थी जो अच्छी एक्टिंग करे और जिसका स्क्रीन पर दमदार असर हो और कृति इस रोल के लिए एकदम सही लगीं। हालांकि, इसको लेकर अब तक कोई भी आधिकारिक घोषणा नहीं की गई है।
2026 में रिलीज होगी फिल्म डॉन 3
बता दें, डॉन 3 फिल्म में रणवीर सिंह नजर आएंगे। इस फिल्म में पहले उनके अपोजिट कियारा आडवाणी नजर आने वाली थीं। लेकिन प्रेग्नेंसी की वजह से उन्होंने यह मूवी छोड़ दी है। यह फिल्म साल 2026 में रिलीज हो सकती है।

रानी चटर्जी ने शुरू की फिल्म परिणय सूत्र की शूटिंग

भोजपुरी अदाकारा रानी चटर्जी के लिए यह साल काफी धमाकेदार है। एक के बाद एक फिल्में उनके हाथ लग रही हैं। हाल ही में उनकी फिल्म प्रिया ब्यूटी पार्लर यूट्यूब पर रिलीज हुई। इसके बाद उन्होंने घमंडी बहू की शूटिंग पूरी की। अब रानी के हाथ एक और फिल्म लगी है, जिस पर उन्होंने काम शुरू कर दिया है।

राकेश बाबू के साथ जमेगी जोड़ी

रानी चटर्जी की अगली फिल्म का नाम है परिणय सूत्र। हाल ही में पूजा सेरेमनी के साथ इस पर काम शुरू हुआ है। आज मंगलवार को अभिनेत्री ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट से मुहूर्त पूजा की कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। इस फिल्म में रानी के साथ राकेश बाबू लीड रोल में हैं। कहा जा रहा है कि फिल्म में रानी और राकेश पति-पत्नी की भूमिका अदा करेंगे।

क्या पापा आमिर की कोई भूमिका परदे पर करना चाहेंगे जुनैद

जुनैद खान ने फिल्म महाराज से एक्टिंग डेब्यू किया, जो ओटीटी पर रिलीज हुई थी। फिर 'लवयापा' से बड़े परदे पर डेब्यू किया। इससे पहले जुनैद खान थिएटर भी कर चुके हैं। हाल ही में जुनैद खान ने पिता आमिर खान से तुलना होने पर प्रतिक्रिया दी। साथ ही यह भी बताया कि क्या वे अपने पिता का कोई किरदार परदे पर निभाना चाहेंगे? अभिनेता जुनैद खान यह मानते हैं कि फिल्मी परिवार से होने का उन्हें फायदा मिला है। साथ ही यह भी कहा कि वे चाहते हैं कि उनकी पहचान अपनी प्रतिभा के बूते हो। हाल ही में एक इंटरव्यू में जुनैद ने कहा कि आमिर खान का बेटा होने के कारण उनके लिए चीजें आसान हो जाती हैं। साथ ही उन्होंने कहा, मैं एक बहुत अमीर परिवार से आता हूं। पापा का सम्मान किया जाता है, उन्हें प्यार किया जाता है और वे पावरफुल हैं। कुछ प्रिविलेज भी हैं, जिनका मुझे फायदा मिलता है। जुनैद से जब पूछा गया कि अपने पिता के प्रभाव के बिना क्या उनका करियर अलग होता? इस पर जुनैद ने कहा, हां, आदि चोपड़ा जानते हैं कि मैं कौन हूं, क्योंकि मैं आमिर खान का बेटा हूं। वे पृथ्वी थिएटर में नाटक देखने नहीं आते। ज्यादातर लोग मुझे इसलिए जानते हैं, क्योंकि मैं आमिर खान का बेटा हूं। लेकिन मैं भाग्यशाली हूं कि मेरी तुलना उनसे करने वाले बहुत कम लोग हैं। मूल रूप से लोग मुझे मेरे अब तक के करियर में मेरी प्रतिभा की वजह से आंकते हैं, जो एक तरह से अच्छी बात है। अगर मेरी तुलना मेरे पिता से की जाएगी तो यह मुश्किल होगा।
जुनैद खान के मुताबिक आमिर खान ने महाराज के निर्माण के दौरान उन्हें गाइड किया, लेकिन उनके एक्टिंग चॉइस को आकार देने से दूर रहे। जुनैद ने कहा कि पापा का महाराज से ज्यादा लेना-देना नहीं था। उन्होंने कहानी सुनी और उसे पसंद किया, लेकिन मुझसे पूछा कि क्या मैं श्योर हूं कि अपने करियर की शुरुआत में ही इतनी बड़ी फिल्म करना चाहता हूं। उन्होंने फिल्म का फाइनल कट देखा और उन्हें वह पसंद आया। जुनैद ने कहा कि अगर आपको किसी सलाह की जरूरत है तो पापा हमेशा एक प्रैक्टिकल सलाह देंगे। जैसे कि वे उन लोगों में से नहीं हैं, जो सिर्फ अभिनय के टिप्स देंगे।

'हेरा फेरी 3' और परेश रावल की वापसी पर अक्षय कुमार ने तोड़ी चुप्पी

पिछले दिनों 'हेरा फेरी 3' का हिस्सा बनने के बाद परेश रावल ने इस फिल्म से किनारा कर लिया। परेश रावल इस फ्रैंचाइज से अलग हुए तो फैंस को बुरा लगा। साथ ही मामले ने कानूनी रूप भी ले लिया। अक्षय कुमार ने बतौर प्रोड्यूसर परेश रावल को नोटिस भेजा है। फिल्म के नुकसान के बदले 25 करोड़ की डिमांड की थी। इसका जवाब भी परेश रावल ने कोर्ट में देने की बात कही।

हाल ही में अक्षय कुमार के सुर कुछ बदले से नजर आए। फिल्म 'हेरा फेरी 3' को लेकर अक्षय कुमार ने बड़ी बात कह दी है। अक्षय ने जो कहा है, उससे यह उम्मीद जागती है कि परेश रावल दोबारा इस फिल्म का हिस्सा बन सकते हैं?

अक्षय कुमार की बातों से मिला बड़ा इशारा

हाल ही में पिंकविला से की गई बातचीत में अक्षय कुमार कहते हैं, 'जो कुछ भी हो रहा है, वह आपके सामने हो रहा है। मैं अपनी फिंगर क्रॉस करके रख रहा हूं। मुझे उम्मीद है कि सब कुछ ठीक रहेगा।' वह फैंस को दोबारा भरोसा दिलाते हुए कहते हैं, 'सब कुछ ठीक ही होगा। मुझे पक्का पता है।' यह जवाब अक्षय कुमार फिल्म 'हेरा फेरी 3' को लेकर देते हैं।

परेश रावल ने भी हिंट दिया

कुछ दिन पहले ही परेश रावल का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, जिसमें वह गीता बसरा से मिल रहे है। इस वीडियो में परेश रावल ने जो टी- शर्ट पहनी है, उस पर यूजर्स का ध्यान गया। दरअसल, परेश की टी- शर्ट पर लिखा था, डोंट क्विट।' इस शब्द को पढ़कर फैंस को लगा कि परेश रावल 'हेरा फेरी 3' को लेकर कोई हिंट दे रहे हैं।

फैंस को 'हेरा फेरी 3' से गहरा लगाव क्यों?

जब से फिल्म 'हेरा फेरी 3' से परेश रावल अलग हुए, फैंस काफी दुखी है। इस फिल्म में वह बाबू भैया का रोल निभाते थे, अक्षय कुमार राजू और सुनील शेट्टी श्याम के रोल में दिखते हैं। इन तीनों की जोड़ी को फिल्म में दर्शक काफी पसंद करते हैं। फैंस का मानना है कि बाबू भैया के बिना तो फिल्म बन ही नहीं सकती है।

कॉमेडी में हाथ आजमाना चाहते हैं मोहित रैना

अभिनेता मोहित रैना को टीवी शो देवों के देव महादेव में भगवान शिव की भूमिका के लिए जाना जाता है। इसके अलावा वे शिद्दत और उरी जैसी फिल्मों में भी अहम रोल अदा कर चुके हैं। बीते दिनों रिलीज हुई सीरीज कनखजूरा में मोहित रैना नेगेटिव रोल में नजर आए। उन्होंने अपने इस किरदार को लेकर हाल ही में बात की। मोहित रैना का कहना है कि वे परदे पर अच्छे इंसान की भूमिकाओं से बाहर निकलना चाहते थे। तभी कनखजूरा उनके पास आई। बातचीत में मोहित रैना ने कहा, मैं जानबूझकर कुछ और नहीं कर रहा था, क्योंकि मैं एक्सपेरिमेंट करना चाहता था। और यही वह समय था, जब यह मौका मेरे पास आया और मैंने इसे लपक लिया।

कॉमेडी में भी दिखाई दिलचस्पी

उन्होंने कॉमेडी जेनर में भी काम करने के लिए उत्सुकता जाहिर की। एक्टर ने कहा, कॉमेडी ऐसी चीज है, जिसे मैं करना चाहता हूं। बता दें कि कनखजूरा इजरायली सीरीज 'मैगपाई' का एडेप्टेशन है। इसमें मोहित रैना और रोशन मैथ्यू मुख्य किरदारों में है। यह सीरीज सोनी लिव पर मौजूद है।

शुभमन की कप्तानी में बेहतर शुरुआत के इरादे से उतरेगी भारतीय टीम

लीड्स (एजेंसी)। शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय टीम शुक्रवार से यहां मेजबान इंग्लैंड के खिलाफ पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में उतरेगी। इस मुकाबले से विश्व टेस्ट चैंपियनशिप (डब्लयूटीस) 2025-27 के चक्र की भी शुरुआत होगी। ऐसे में भारतीय टीम का लक्ष्य इसमें बेहतर प्रदर्शन कर जीत दर्ज करना रहेगा। इस सीरीज में भारतीय टीम विराट कोहली, रोहित शर्मा और आर अश्विन जैसे अनुभवी खिलाड़ियों के बिना उतरेगी ऐसे में टीम में शामिल युवाओं के पास अपने को साबित करने का अच्छा अवसर रहेगा। ऐसे में ये सीरीज भारतीय क्रिकेट के लिए भी एक नए युग की तरह होगी। इस मैच में शुभमन के अलावा शस्वी जायसवाल, साई सुदर्शन जैसे खिलाड़ियों पर सबकी नजरें रहेंगी। सात साल बाद वापसी कर रहे करुण नायर के अभ्यास सत्र में चोटिल होने से भी टीम को झटका लगा है। गेंदबाजी की कमान जसप्रीत बुमराह के बास रहेगी। मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा जैसे गेंदबाज उनका साथ देंगे। स्पिन की कमान कुलदीप यादव के पास रहेगी।

वहीं पिच की बात करें तो हेडिंग्ले की पिच अपने उछाल और तेजी के लिए जानी जाती है। वहीं पिच क्यूरेटर रॉबिन्सन का कहना है कि वह चाहते हैं मैच पूरे पांच दिन तक चले। उनका उद्देश्य यह है कि पिछली बार की तरह तीन दिन में खेल खत्म न हो इसलिए ऐसे पिच बनायी गयी है जिसपर शॉट खेले जा सकें। उन्होंने उम्मीद जताई है कि जो भी टीम पहले बल्लेबाजी करेगी वह करीब 300 रन बना सकेगी। मौसम विभाग ने भी गर्मी की संभावना जताई है, जिससे बल्लेबाजों को सहायता मिल सकती है। हालांकि पिच फिलहाल हरी-भरी दिख रही है, जिससे शुरुआती ओवरों में तेज गेंदबाजों को सहायता मिल सकती है।

आंकडों पर नजर डालें तो यहां अब तक 81 टेस्ट मैच खेले जा चुके हैं, जिसमें से 37 मैच मेजबान टीम ने जीते हैं। विदेशी टीमों को यहां 25 बार जीत मिली है जबकि 18 मुकाबले ड्रॉ रहे हैं। यहां दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने वाली टीम को ज़्यादा सफलता मिली है। वहीं पहले बल्लेबाजी करने वाली टीम ने जहां 29 बार जीत हासिल की, वहीं दूसरी पारी में खेलने वाली टीम ने 34 बार जीत दर्ज की है। इस मैदान पर अब तक का सबसे अधिम स्कोर 653/4 और सबसे कम स्कोर 61 रन रहा है। भारत और इंग्लैंड के बीच यहां अब तक कुल 136 टेस्ट मुकाबले हुए हैं। इसमें भारतीय टीम को केवल 35 मैचों में जीत मिली है, जबकि इंग्लैंड ने 51 मुकाबले जीते हैं व 50 टेस्ट ड्रॉ रहे हैं। यहां पर भारतीय टीम का रिकॉर्ड काफी खराब रहा है और उसे 67 मैचों में से केवल 9 टेस्ट में ही जीत मिली है।

इस बार भारतीय टीम टीम युवा निडर होकर उतरेगी पर इंग्लैंड के हालातों में खेलना आसान नहीं होता है। अब देखना है कि टीम किस प्रकार से खेलती है।

वहीं दूसरी ओर बेन स्टोक्स की कप्तानी वाली मेजबन टीम को हालातों का लाभ मिलेगा उसके पास जो रुट हैरी ब्रुक और बने डकेट जैसे बल्लेबाज हैं हालांकि टीम के अनुभवी गेंदबाज चोटिल हैं जिससे उसकी गेंदबाजी कमजोर हुई है। जिसका लाभ भारतीय टीम को मिलेगा। उसकी क्रिस वोक्स, ब्रायडन कार्स, जोश टंग और शोएब बशीर पर टिकी रहेगी

इंग्लैंड ने जहां अपनी अंतिम ग्यारह टीम घोषित कर दी है। वहीं भारतीय टीम मैच से पहले ही अंतिम ग्यारह की घोषिता करेगी।

इंग्लैंड की एकादश : जैक क्रॉउली, बेन डकेट, ओली पोप, जो रूट, हैरी ब्रुक, बेन स्टोक्स (कप्तान), जेमी स्मिथ (विकेटकीपर), क्रिस वोक्स, ब्रायडन कार्स, जोश टंग और शोएब बशीर।

भारतीय : शुभमन गिल (कप्तान), ऋषभ पंत (उपकप्तान और विकेटकीपर), यशस्वी जयसवाल, केएल राहुल, साई सुदर्शन, अभिमन्यु ईश्वरन, करुण नायर, नितीश रेड्डी, रवींद्र जड़ेजा, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), वाशिंगटन सुंदर, शार्दुल ठाकुर, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, आकाश दीप, अर्शदीप सिंह, कुलदीप यादव, हर्षित राणा।

हरभजन, रैना सहित चार पूर्व भारतीय क्रिकेटर सुपर60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट में भाग लेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिग्गज स्पिनर हरभजन सिंह और सुरेश रैना सहित चार पूर्व भारतीय क्रिकेटर 5 से 16 अगस्त तक होने वाले सुपर60 यूएसए लीजेंड्स क्रिकेट टूर्नामेंट में खेलते नजर आयेंगे। इस टूर्नोमेंट में हरभजन और रैना के अलावा शिखर धवन व रॉबिन उथप्पा भी खेलेंगे। इन सभी पूर्व क्रिकेटरों ने कहा कि इस टूर्नामेंट में खेलने का अवसर मिलने से वह उत्साहित हैं। हरभजन ने कहा, मैं सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट का हिस्सा बनकर बेहद खुश हूं। यह एक अनूठा और विशिष्ट प्रारूप है जो खेल में नयापन लाने का वादा करता है। अंतरराष्ट्रीय दिग्गजों की भागीदारी के साथ, यह टूर्नामेंट अमेरिका में क्रिकेट की लोकप्रियता बढ़ाएगा। लोकप्रिय बनाने की दिशा में एक बड़ा कदम है।

वहीं रैना ने कहा, मैं सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट का हिस्सा बनकर उत्साहित हूं, जो विश्व स्तरीय प्रतिभाओं को एक साथ लाता है। इस तरह का टूर्नामेंट अमेरिका में क्रिकेट के विकास में अहम भूमिका निभाएगा और मुझे इसका हिस्सा होने पर गर्व है।

धवन ने कहा, सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट में शामिल होना बढ़ते क्रिकेट समुदाय में प्रशंसकों से जुड़ने का एक अच्छा अवसर है। अंतरराष्ट्रीय सितारों और एक नए आकर्षक प्रारूप के साथ इस आयोजन से अमेरिका में क्रिकेट को मुख्यधारा में लाने की राह बनेगी।

उथप्पा ने कहा, सुपर 60 यूएसए लीजेंड्स टूर्नामेंट प्रतिस्पर्धा और नवाचार दोनों के मामले में एक बेहतरीन मंच है। इसका अनूठा प्रारूप खेल में एक नया आकर्षण लाता है और नए प्रशंसकों को आकर्षित करने की बहुत संभावना है।

इंग्लैंड बनाम भारत : लीड्स में पहले टेस्ट से पूर्व करुण नायर चोटिल, 8 वर्षों बाद टेस्ट में कर रहे वापसी

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज की शुरूआत से एक दिन पहले भारतीय टीम को झटका लगा है। लगभग 8 वर्षों के बाद टेस्ट क्रिकेट में अपनी बहुप्रतीक्षित वापसी को तैयार करुण नायर अभ्यास के दौरान चोटिल हो गए। भारत और इंग्लैंड के बीच 5 मैचों की श्रृंखला 20 जून से शुरू होगी और यह सीरीज आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (ड्ब्ल्यूटीसी) 2025-27 चक्र की शुरुआत भी की है।

नायर 2017 के बाद से अपना पहला टेस्ट खेलने की उम्मीद में थे, लेकिन नेट सत्र के दौरान तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा की तेज गेंद से पसलियों पर चोट लग गई। इस चोट के कारण 33 वर्षीय खिलाड़ी असहज महसूस कर रहे थे, हालांकि, उन्होंने जल्द ही बल्लेबाजी फिर से शुरू कर दी। अपने बल्लेबाजी सत्र के बाद उन्होंने सहयोगी स्टाफ और टीम के सदस्यों को चोट दिखाई थी।

दाएं हाथ के बल्लेबाज को एक समय भविष्य का सितारा माना जा रहा था क्योंकि वह टेस्ट में तिहरा शतक लगाने वाले दूसरे भारतीय खिलाड़ी बन गए थे, लेकिन शानदार प्रदर्शन के बावजूद उन्हें टीम से बाहर कर दिया गया। 2024-25 के सत्र में एक ठोस घरेलू सत्र, जिसमें भारत ए बनाम इंग्लैंड लायंस श्रृंखला में हाल ही में दोहरा शतक और विदर्भ की रणजी ट्रॉफी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका शामिल है, ने उन्हें राष्ट्रीय टीम में वापस बुला लिया।

वेस्टइंडीज दौरा लाबुशेन के लिए 'आखिरी मौका' है : पूर्व ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज

मेलबर्न (एजेंसी)। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज जेसन गिलेस्पी को लगता है कि वेस्टइंडीज दौरा संघर्षरत और आलोचनाओं से घिरे बल्लेबाज मार्नस लाबुशेन के लिए आखिरी मौका है तथा एक और खराब प्रदर्शन से एशेज में खेलने की उनकी संभावनाएं खतरे में पड़ जाएंगी।

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ लॉर्ड्स में आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में सलामी बल्लेबाज के रूप में विफल रहे मार्नस ने अपनी जगह पर सवालिया निशान लगा दिए हैं क्योंकि उन्होंने 2023-25 ??के अपने चक्र को 20 पारियों में 974 रन के साथ समाप्त किया जिसमें 38 पारियों में एक शतक और आठ अर्द्धशतक के साथ 27.82 का खराब औसत रहा।

लाबुशेन का आखिरी टेस्ट शतक जुलाई 2023 में एशेज के दौरान मैनचेस्टर में इंग्लैंड के खिलाफ आया था और तब से, उन्होंने 16 टेस्ट में बल्ले से 24.74 की औसत से रन बनाए हैं, जिसमें 30 पारियों में 668 रन और 7 अर्द्धशतक शामिल हैं। पूर्व ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज ने कहा, %यह एक मुश्किल सवाल है। लेकिन पिछले दो वर्षों में उनका औसत 20 के मध्य में रहा है, और उन्होंने केवल एक शतक बनाया है। अगर वह कैरिबियन में खेलते हैं, तो मुझे लगता है कि यह निश्चित रूप से आखिरी मौका है, इसमें कोई संदेह नहीं है। मुझे लगता है कि अगर वह मजबूत प्रदर्शन नहीं करते हैं, तो मुझे लगता है कि उन्हें एशेज में नहीं खेलने का असली खतरा है।%

गिलेस्पी ने कहा कि उन्हें लगता है कि लाबुशेन या 38 वर्षीय उस्मान ख्वाजा में से कोई एक, जो ड्ब्ल्यूटीसी फाइनल की दोनों पारियों में दोहरे अंक को छूने में विफल रहे। स्टीव स्मिथ और ट्रैविस हेड के चौथे और पांचवें नंबर पर रहने के कारण, तीसरा नंबर खाली रह गया है। कैमरून ग्रीन वापसी उम्मीद कर रहे हैं, गिलेस्पी ने सोचा कि क्या श्रीलंका के खिलाफ डेब्यू पर शतक बनाने वाले विकेटकीपर-बल्लेबाज जोश इंगलिस वह स्थान लेंगे, भले ही उन्होंने मध्य-क्रम के लिए वरीयता दिखाई हो।

गिलेस्पी ने कहा, 'मुझे पता है कि स्टीव स्मिथ की सर्वश्रेष्ठ स्थिति चौथे नंबर पर है और मुझे लगता है कि ट्रैविस हेड की सर्वश्रेष्ठ स्थिति पांचवें नंबर पर है। मुझे लगता है कि वे लोग काफी हद तक तैयार हैं। इसलिए चयनकर्ताओं को यह तय करना होगा क्या इंग्लिस तीसरे नंबर पर काम करने के लिए सबसे अच्छे व्यक्ति हैं, या मार्नस तीसरे नंबर पर काम करने के लिए सबसे अच्छे व्यक्ति हैं? अगर वे हैं, तो उनमें से किसी एक को खिलाएं।' उन्होंने कहा, 'अगर नहीं, तो घरेलू क्रिकेट में कुछ प्रदर्शन करने वालों को या तो ओपनर या नंबर तीन पर पुरस्कृत करें, जिन्होंने शेफील्ड शील्ड क्रिकेट में शानदार प्रदर्शन किया है, ताकि उनमें से किसी एक खिलाड़ी को तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करने के लिए बढ़ावा दिया जा सके।'

अब तक चार भारतीय कप्तानों ने ही इंग्लैंड में लगाये हैं शतक , शुभमन के पास पांचवां खिलाड़ी बनने का अवसर

लीड्स । शुभमन गिल की कप्तानी में भारतीय टीम शुक्रवार से यहां मेजबान इंग्लैंड के खिलाफ पहला क्रिकेट टेस्ट मैच खेलने उतरेगी । शुभमन इससे पहले के इंग्लैंड दौरे में रन नहीं बना पाये थे । ऐसे में उनका लक्ष्य इस बार बेहतर प्रदर्शन करना होगा । भारतीय टीम को इस सीरीज में पांच मैच खेलने हैं जिसमें शुभमन का लक्ष्य शतक लगाकर एक अहम उपलब्धि अपने नाम करना भी रहेगा । इंग्लैंड में अब तक चार भारतीय कप्तान ही शतक लगा पाये हैं और शुभमन का लक्ष्य शतक लगाने वाला पांचवां कप्तान बनना रहेगा। अब तक केवल चार भारतीय कप्तान ही इंग्लैंड में शतक जड़ने में सफल हो पाये हैं । भारतीय टीम की ओर से इंग्लैंड में शतक लगाने वाले पहले कप्तान मंसूर अली खान पटौदी हैं । उन्होंने 1967 में लीड्स टेस्ट में 148 रनों की शानदार पारी खेली थी । यह किसी भारतीय कप्तान का इंग्लैंड में पहला शतक था । इसके बाद लंबे समय तक कोई भी कप्तान इंग्लैंड में शतक नहीं लगा पाया । इसके बाद मोम्मद अजहरुद्दीन ने 1990 के इंग्लैंड दौरे पर दो शतक लगाये । अजहर ने लॉर्ड्स में 121 और मैनचेस्टर में 179 रनों की पारी खेली । इसके बाद 2002 में सौरव गांगुली ने लीड्स में 128 रन बनाये । वहीं इंग्लैंड में शतक लगाने वाले चौथ भारतीय कप्तान विराट कोहली रहे। उन्होंने साल 2018 के इंग्लैंड दौरे पर दो शतक लगाये । कोहली ने बर्मिंघम में 149 और नॉटिंघम में 103 रनों की पारी खेली थी । ऐसे में अब शुभमन के पास भी कप्तान के तौर पर शतक लगाने वाला पांचवां कप्तान बनने का अवसर है ।

शुभमन की टीम प्रतिभाशाली, विशेष सफलता हासिल करेगी : कपिल

नई दिल्ली । भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव ने कहा है कि शुभनन गिल के नेतृत्व में इंग्लैंड गयी टीम को अुनभवहीन कहना गलत है । कपिल ने कहा कि शुभमन और उनकी टीम काफी प्रतिभाशाली है और वे इस दौरे में कुछ विशेष जरुर करेंगे । कपिल ने शुभमन को कप्तान बनाये जाने के फैसले को सही बताया है । उन्होंने माना कि शुभमन ने इससे पहले इंग्लैंड में केवल 3 टेस्ट मैच खेले हैं जिनमें उनका प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा और उन्होंन 14.66 की औसत से केवल 88 रन बनाए हैं । कपिल ने शुभमन को अच्छा और प्रतिभाशाली खिलाड़ी बताया और कहा कि अब वह भारतीय टीम का कप्तान है । साथ ही भरोसा जताया है कि वह ट्रॉफी लेकर लौटेगा । उन्होंने कहा कि सभी को शुभकामनाएं । मुझे उम्मीद है कि वे विजेता बनकर घर लौटेंगे और अपनी पूरी क्षमता के साथ खेलेंगे ।' 1983 की विश्व कप विजेता टीम के कप्तान कपिल देव मौजूदा भारतीय टीम को अनुभवहीन कहे जाने के खिलाफ हैं । उन्होंने कहा, आज वे हो सकता है कि अनुभवहीन हों, लेकिन कल वे अनुभवी हो जाएंगे हमें अपनी टीम पर गर्व होना चाहिये । मुझे इन खिलाड़ियों में भरोसा है कि वे कुछ विशेष करेंगे । मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूं कि जाओ और खेलो । केवल इतनी बात है । आनंद उठाओ, मैं भारतीय टीम से सिर्फ इतना कहना चाहता हूं । कपिल ने टीम के तेज जसप्रीत बुमराह की भी प्रशंस करते हुए उन्हें विश्व के सर्वश्रेष्ठ गेंदबाजों में से एक करार दिया ।

बांगर की बेटी अनाया बोली, ट्रांसजेंडर क्रिकेटरों को महिला क्रिकेट में भाग लेने की अनुमति दे आईसीसी और बीसीसीआई

लंदन (एजेंसी)। भारतीय टीम के पूर्व भारतीय क्रिकेटर संजय बांगर की बेटी अनाया बांगर ने आईसीसी और बीसीसीआई से ट्रांसजेंडर क्रिकेटरों का समर्थन करने की अपील की है। अनाया ने कहा है कि ट्रांसजेंडर क्रिकेटरों को भी महिला क्रिकेट में भाग लेने की अनुमति दी जाये। अभी ट्रांसजेंडर क्रिकेटरों के महिला क्रिकेट भाग लेने पर प्रतिबंध है।

लड़के से लड़की बनी अनाया ने अपनी बात को तर्कसंगत बनाने एक वैज्ञानिक रिपोर्ट भी साझा की है जिसमें एक ट्रांसजेंडर एथलीट के रूप में उनकी परिवर्तन यात्रा को बताया गया है। अनाया इन निष्कर्षों को आईसीसी और बीसीसीआई को सौंपने की योजना बना रही हैं। उनका मानना है कि विज्ञान के अनुसार वह महिला क्रिकेट के लिए योग्य हैं और अब यह देखना है कि दुनिया इस सच्चाई को मानने के लिए तैयार है या नहीं।

अनाया ने इस रिपोर्ट का एक वीडियो भी जारी किया है। अनाया ने बताया कि उन्होंने एक साल तक हार्मोन रिप्लेसमेंट थेरेपी (एवआरटी) लेने के बाद मैनचेस्टर मेट्रोपॉलिटन यूनिवर्सिटी के साथ मिलकर काम किया। इन टेस्टों में उनकी मांसपेशियों की ताकत, सहनशक्ति, ग्लूकोज और ऑक्सीजन के स्तर का डेटा इकट्ठा किया गया। फिर इस डेटा की तुलना सामान्य महिला एथलीटों से की गई। परिणामों से पता चला कि अनाया के ये सभी पैरामीटर सामान्य महिला एथलीटों के स्तर के भीतर थे। अनाया ने अपनी बात रखते हुए कहा, पहली बार, मैं उस वैज्ञानिक रिपोर्ट को साझा कर रही हूं जो एक ट्रांस महिला एथलीट के रूप में मेरी यात्रा को दिखाती है। पिछले एक साल में, मैंने हार्मोन थेरेपी शुरू करने के बाद संरचित शारीरिक आकलन किया है। यह रिपोर्ट मेरे परिवर्तन के वास्तविक, मापने योग्य प्रभाव को दर्शाती है, न कि राय, न धारणाएं, बल्कि डेटा।

अनाया ने आगे कहा, मैं इसे पूरी पारदर्शिता और उम्मीद के साथ बीसीसीआई और आईसीसी को सौंप रही हूं। मेरा एकमात्र इरादा डर पर नहीं, बल्कि तथ्यों पर आधारित है। जगह बनाना है, विभाजित करना नहीं। आप सहमत हों या न हों, देखने के लिए धन्यवाद।

भारतीय बल्लेबाजों को मिलेगा इंग्लैंड के अनुभवहीन गेंदबाजी आक्रमण का लाभ

लीड्स । यहां शुक्रवार से इंग्लैंड के खिलाफ शुरु हो रहे पहले क्रिकेट टेस्ट मैच में भारतीय टीम के बल्लेबाजों के लिए बड़ा स्कोर बनाने का अवसर है । इसका कारण ये है कि मेजबान टीम के अनुभवी गेंदबाज चोटिल होने के कारण बाहर है । ऐसे में भारतीय टीम टीम को कम अनुभवी गेंदबाजों का सामना करना है । तीन गेंदबाज ऐसे हैं, जिनका टेस्ट मैच खेलने का कुल अनुभव केवल 24 टेस्ट है । इसका लाभ अगर भारतीय बल्लेबाज उठाते हैं तो वह मैच में बढ़त हासिल कर सकती है । इंग्लैंड के गेंदबाजी क्रम में क्रिस वोक्स, ब्रायडन कार्स, जोश टंग और शोएब बशीर हैं जैसे गेंदबाज हैं । वहीं पांचवें गेंदबाज कप्तान बेन स्टोक्स हैं । अगर वोक्स और स्टोक्स को हटा दिया जाये तो कार्स, टंग और बशीर के टेस्ट खेलने का कुल अनुभव 24 टेस्ट है । कार्स ने 5, टंग ने 3 और बशीर ने 16 मुकाबले ही खेले हैं । वहीं भारतीय बल्लेबाजी में भी अधिकतर युवा बल्लेबाज हैं केवल शीर्ष चार बल्लेबाजों को ही टेस्ट मैच खेलने का अनुभव है । सबसे अनुभवी केएल राहुल 34 टेस्ट हैं वहीं यशस्वी जायसवाल ने भी अब तक 19 टेस्ट खेल लिया है ।

श्रेयस होते तो भारतीय टीम के लिए बदलाव का सामना करना आसान होता : नाइट

लंदन । इंग्लैंड के पूर्व सलामी बल्लेबाज निक नाइट ने भारतीय बल्लेबाज श्रेयस अय्यर की सराहना करते हुए कहा है कि उन्हें टीम में रखा जाना चाहिये था । नाइट के अनुसार रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे खिलाड़ियों के नहीं होने से बदलाव के दौर से गुजर रही भारतीय टीम को श्रेयस के रहने से लाभ होता । नाइट के अनुसार श्रेयस एक अच्छे बल्लेबाज जो जो मध्यक्रम को संभाल सकते हैं । उन्होंने कहा कि इस दौरे में भारतीय टीम ने चाइनामैन गेंदबाज कुलदीप यादव को शामिल कर टीम किया है । वह टीम के लिए एक्स फैक्टर साबित होंगे । अय्यर के टीम का हिस्सा नहीं होने के कारण नाइट को कुलदीप और युवा बल्लेबाज साई सुदर्शन से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीदें हैं । सुदर्शन के लीड्स में पहले टेस्ट में डेब्यू करने की उम्मीद है । उन्होंने कहा कि अनुभवी बल्लेबाज लोकेश राहुल को इस दौरे में अहम जिम्मेदारी संभानली होगी । उनके ऊपर एक प्रकार से बल्लेबाजी टिकी होगी । उनके अलावा एक दो खिलाड़ियों को छोड़ दें तो अन्य सभी बल्लेबाज नये हैं और उनके पास अनुभव नहीं है । ऐसे में शीर्ष क्रम को बेहतर बल्लेबाजी करनी होगी जिससे कि मध्यक्रम पर दबाव न आये । साथ ही कहा कि अगर भारतीय टीम को ये सीरीज जीतनी है तो उसके गेंदबाजों को 20 विकेट लेने होंगे । भारतीय टीम साल 2007 के बाद यहां एक भी सीरीज नहीं जीती है । ऐसे में उसके लिए ये सीरीज बेहद अहम मानी जा रही है । नाइट ने इस बात पर भी जोर दिया कि अगर भारत को 2007 के बाद इंग्लैंड में अपनी पहली सीरीज जीतने है तो 20 विकेट लेना अहम होगा । इंग्लैंड के लिए 17 टेस्ट और 100 एकदिवसीय मैच खेलने वाले 55 साल के नाइट नहीं चाहते कि भारत अपनी बल्लेबाजी को मजबूत के लिए गेदंबाजी से समझौता करे ।

अपने फैसलों पर फोकस रखें शुभमन, बाहरी आवाजों पर ध्यान नहीं दे : तेंदुलकर

नई दिल्ली (एजेंसी)। महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर का मानना है कि भारतीय क्रिकेट में बदलाव के कठिन दौर में टीम की कमान संभालने जा रहे शुभमन गिल को उचित समय और सहयोग दिया जाना चाहिये और नए कप्तान को सलाह दी कि ड्रेसिंग रूम से बाहर की टिप्पणियों पर सोचे बिना वह अपनी रणनीति पर फोकस रखें। 25 वर्ष के गिल इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैचों की श्रृंखला में भारत के कप्तान होंगे। इस श्रृंखला के साथ ही विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप के नये चक्र की शुरूआत होगी।

भारतीय टीम अपने तीन सबसे अनुभवी खिलाड़ियों विराट कोहली, रोहित शर्मा और रविचंद्रन अश्विन के बिना उतरेगी जो टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं। हेडिंग्ले में पहले टेस्ट से पूर्व पीटीआई को दिये इंटरव्यू में तेंदुलकर ने कहा, 'मुझे लगता है कि उसे (गिल को) समय देना होगा। उसे सहयोग देने की भी जरूरत है।' भारत का कप्तान होना काफी दबाव वाला काम है और तेंदुलकर को पता है कि अलग अलग तरह के सुझाव सामने आयेंगे लेकिन उनका मानना है कि गिल इससे बखूबी निबट लेंगे।

उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि कई तरह के सुझाव सामने आयेंगे कि उसे ऐसा करना चाहिये या वैसा करना चाहिये । इस तरह की बातें होंगी लेकिन उसे टीम की रणनीति पर फोकस करना चाहिए। ड्रेसिंग रूम में क्या बात हो रही है और क्या रणनीति उसके अनुरूप है।' तेंदुलकर ने कहा, 'और जो भी फैसले हो रहे हैं, वे टीम के हित में हैं या नहीं और उसे किस पर ध्यान देना चाहिए। उसे बाहरी आवाजों पर ध्यान नहीं देना चाहिए जिसमें लोग कहेंगे कि वह अधिक आक्रामक है या अधिक रक्षात्मक या इसी तरह की बातें। लोग राय देते रहेंगे। आखिर में मायने यही रखता है कि ड्रेसिंग रूम में क्या हो रहा है और टीम के हित में वह क्या कर रहा है। यही अहम है, बाकी कुछ नहीं।'

इंग्लैंड में 1990 से 2011 के बीच में पांच टेस्ट श्रृंखलायें खेल चुके तेंदुलकर का मानना है कि बल्लेबाजों को हालात के अनुरूप खुद को ढालना होगा। उन्होंने कहा, 'आपको हालात को भांपकर उसके अनुरूप बल्लेबाजी करनी होगी। जब आप हालात को समझते हैं तो मानसिक तौर पर उस तरह से अपनी रणनीति बना सकते हैं। एकतरफा ट्रैफिक नहीं हो सकता कि मेरा खेल ऐसा है और मैं तो ऐसे ही खेलूंगा।'

तेंदुलकर ने कहा, 'बल्लेबाजों को लचीला रवैया रखना होगा। ऐसा नहीं करने पर भारी खामियाजा उठाना पड़ सकता है। आपको पता होना चाहिए कि कब आक्रामक खेलना है और कब रक्षात्मक।' चुनौतियों के बावजूद भारत के पास काफी सकारात्मक पहलु हैं मसलन करूण नायर और बी साइ सुदर्शन जैसे बल्लेबाज भले ही इंग्लैंड में टेस्ट क्रिकेट नहीं खेले हों लेकिन नॉर्थम्पटनशर और सर्रे के लिए काउंटी क्रिकेट खेल चुके हैं।

तेंदुलकर ने कहा, 'ये सभी इंग्लैंड में खेल चुके हैं। भले ही अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेला हो लेकिन इंग्लैंड में क्रिकेट खेला है। वे यहां की परिस्थितियों से अनभिज्ञ नहीं हैं। वे दक्षिण अफ्रीका में, न्यूजीलैंड में, आस्ट्रेलिया में खेल चुके हैं। इन सभी अनुभवों से काफी कुछ सीखने को मिलता है। इन सभी अनुभवों को मिलाकर अभ्यास करेंगे तो परिणाम अच्छा ही होगा।' यह पूछने पर कि क्या दो स्पिनरों को उतारने की रणनीति सही होगी, तेंदुलकर ने कहा, 'यह पिच पर निर्भर करेगा। पिच पर घास है या नहीं। अगर घास नहीं है तो दो स्पिनरों को उतारा जा सकता है।'

विराट कोहली और रोहित के बिना भी भारतीय टीम में काफी गहरायी : कार्स

लंदन । इंग्लैंड के तेज गेंदबाज ब्राइडन कार्स ने कहा है कि विराट कोहली और रोहित शर्मा जैसे अनुभवी खिलाड़ियों के बिना भी भारतीय टीम काफी अच्छी है और उसे कमजोर समझने की भूल नहीं की जा सकती है । कार्स के अनुसार भारतीय टीम को विराट और रोहित जैसे अनुभवी खिलाड़ियों की कमी से झटका जरुर लगा है पर इसके बाद भी उसकी बल्लेबाजी में काफी गहरायी है । इसलिए इन दोनो के नहीं होने के बाद भी पांच मैच की टेस्ट सीरीज में भारतीय टीम कड़ी चुनौती पेश करेगी कोहली और रोहित ने पिछले महीने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिय था जिसके बाद युवा शुभमन गिल को भारतीय टीम का कप्तान बनाया गया था । कार्स ने कहा, '' ये सही है कि कोहली और रोहित की अनुपस्थिति उनके बल्लेबाजी क्रम के लिए बहुत बड़ी क्षति है । वे एक दशक से अधिक समय से बल्लेबाजी संभालते रहे हैं और बेहद अनुभवी विश्व स्तरीय बल्लेबाज हैं ।'' उन्होंने कहा, '' पर इसके बाद भी भारतीय क्रिकेट में जो गहराई है और जिस तरह के खिलाड़ी आ रहे हैं, उससे उनकी टीम काफी अच्छे अंतिम ग्यारह खिलाड़ियों के साथ उतरेगी और वे हमें कड़ी चुनौती देंगे ।'' ये सीरीज लीड्स टेस्ट के साथ शुक्रवार से शुरू होगी । तेज गेंदबाज कार्स ने कहा कि उनका गेंदबाजी आक्रमण पिचों की के अनुनसार युवा भारतीय बल्लेबाजी क्रम के कम अनुभवों का लाभ उठाने का प्रयास करेगा । कार्स ने कहा, ''उनके पास स्तरीय खिलाड़ी हैं । यह इस बात पर निर्भर करता है कि पिच कैसी रहती है । मुझे लगता है कि कोई भी बल्लेबाज जिसे आप गेंदबाजी कर रहे हैं, आप जानते हैं कि नई गेंद से या शुरुआती 20 गेंद पर आउट होने की संभावना अधिक है ।''